38

6, III

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः । ❀ श्रीः ❀ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम् ।

श्रीस्वाध्याय

[वसन्ताङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ।। [राष्ट्रालोक]

वर्ष ६ | सोलन, चैत्र शु० १० सोमवार सं० २००४ वि० | संख्या ३

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ।।

— अ० वा० आचार्य

अथर्ववेदमें वीरपुरुषके उद्गार

उत्तिष्ठत संनह्यध्वमुदाराः केतुभिः सह ।
सर्पा इतरजना रक्षांस्यमित्राननु धावत ।।
[अथर्व० ११–१०–१]

यदि नो गां हसि, यद्यश्वं यदि पूरुषम् ।
तं त्वा सीसेन विध्यामो, यथानोऽसौ अवीरहा ।।
[अथर्व० १–१६–४]

उठो वीरों ! तैयार हो जाओ, राष्ट्रध्वज (झण्डे) हाथोंमें पकड़ लो । जो भुजङ्ग (आततायी) हैं, लम्पट हैं, अराष्ट्रिय हैं, राक्षस हैं, शत्रु हैं उन पर धावा बोल दो ।। [अथर्व० ११–१०–१]

ओ आततायी ! तू मुझे निस्तेज, बुझा हुआ मत समझना, मत समझना कि तू आकर मुझे सता लेगा और मैं चुपचाप सह लूंगा । देख तू यदि मेरी गाय, घोड़े या मेरे किसी सम्बन्धी पुरुषको मारेगा तो याद रख मैं तुझे सीसेकी गोलीसे उड़ा दूंगा ।। [अथर्व० १–१६–४]

सम्पादकीय विचार

भारतीय जनतासे निवेदन—

युग पर युग बीते, हमारी पराधीनताकी शृंखला सुदृढ होती गई, राष्ट्रिय आत्मा कुचल दी गई। यह विशाल देश अचेतन हो घोर निद्रामें पड़ा रहा। हमारा आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शोषण एवं दोहन चलता रहा। हम अपना मुख बन्द कर चुपचाप देखते रहे। पर यह स्थिति बहुत दिनों तक न रह सकी। दासत्व शृंखलाका लोह-भार असह्य हो उठा। देशने अँगड़ाइयां लीं। भारत वसुन्धराकी कुक्षिसे वे पुत्ररत्न पैदा हुए जिन्होंने शताब्दियोंसे लदे इस ब्रिटिश सत्ताके जुए को कन्धेसे उठा फेंकनेका दृढ़ संकल्प किया। उन्होंने अपनी इस पराधीनताके मौलिक तत्वोंका अनुसन्धान किया। रहस्योद्घाटन हुआ और शताब्दियोंकी परस्पर बिछुड़ी भारत सन्तानने भाई भाईको निकटसे देखा तथा अपने को पहचाना। फिर क्या था, आत्मबल बढ़ा और हमारी राष्ट्रिय जर्जर-कायामें अभिनव-शक्तिका संचार हुआ। हमने स्पष्ट कह दिया कि 'आपने हमारी जिस निर्बलतासे अब तक अनुचित लाभ उठाया है वह अब नहीं रही, अतः आपकी यह वर्तमान नीति बहुत दिनों तक नहीं चल सकती।' देशमें राष्ट्रिय क्रान्तिके स्फुल्लिग चमक उठे, जिनसे आशा ही नहीं, विश्वास हुआ कि इनकी समवेत शक्ति संसारकी किसी भी अपनी विरोधिनी शक्ति को भस्मसात् कर सकती है। अतः इस अदम्य उत्साह और विश्वासको लेकर आजसे बहुत पहले ही हमने ब्रिटिश सरकारको चुनौती दी और 'भारत छोड़ो'की ध्वनिको दृढ़तासे ऊँचा किया।

कालचक्र तीव्र गतिसे घूमा और गत महायुद्धमें विश्वके मानचित्रमें अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। ब्रिटिश साम्राज्यवादकी नींव हिल उठी। जिसकी अजेय शक्तिका सारा संसार लोहा मानता था वह अब तीसरी श्रेणीका राष्ट्र हो गया। वहां अन्तर्राष्ट्रिय परिस्थितिमें भी सहसा परिवर्तन हुआ। मजदूर सरकारके हाथमें शासनसूत्र आया। उसने अपनी शक्ति, वैदेशिक नीति और विश्वकी अन्तर्राष्ट्रिय परिस्थितिके साथ भारतके अतीत वर्तमान तथा भविष्यका गहरा अध्ययन किया और प्रसन्नता की बात है कि अब उसने यह अनुभव कर लिया है कि जिस नीतिके आधार पर अब तक विश्वकी आंखोंमें धूल झोंक कर भारतमें ब्रिटिश-शासन पनपा और बढ़ा, उसका मूल अब खोखला हो गया है। भारत अब ऐसी क्रान्तिके निकट है जिसकी जाज्वल्यमान लपटोंमें हमारी सत्ता भस्मसात् हुए बिना न रहेगी। इस अनुभवके पश्चात् उसने निश्चय पूर्वक घोषित किया है कि 'हम जून १६४८ में भारत खाली कर देंगे।'

ब्रिटिश सरकारकी इस घोषणाको सारे भारत क्या विश्वने सुना है और विश्वास तथा हर्ष प्रकट किया है। देशकी राष्ट्रिय महासभाकी कार्यसमिति ने भी इस घोषणाका स्वागत किया है। राष्ट्रिय महासभाकी चोटीके नेता एवं अन्तःकालीन-सरकारके उपाध्यक्ष श्री पं० जवाहरलाल नेहरूने भी इस घोषणामें विश्वास प्रकट किया और भारत के लिए अंग्रेजोंकी अन्तिम चुनौती स्वीकार की है। ऐसे शुभ अवसर पर जब कि ब्रिटिश सरकार स्वयं अपनी शासन-सत्ता भारतीयोंको हस्तान्तरित करनेको प्रस्तुत है, ऐसा कौन भारतीय होगा जो आज तकके त्याग, तप, बलिदान, रक्तपात तथा घोर कष्ट सहनको फलीभूत होते देख कर हर्षसे पुलकित न हुआ होगा। ऐसे समय यदि हमने अपने पारस्परिक मतभेदोंको भुला कर उनकी

चुनौतीको स्वीकार न कर लिया तो इससे बढ़कर हमारे पतनकी पराकाष्ठा क्या होगी ! सारा विश्व-उद्ग्रीव होकर यह देख रहा है कि भारतीय किस प्रकार अपने देशका शासन-सूत्र अपने हाथों में ले उसे सम्हाल लेनेकी योग्यताका प्रमाण देते हैं। इस समय देशकी समस्त विभिन्न शक्तियों को समवेत तथा संगठित हो, एक होनेके लिए जो पण्डित जवाहरलालजीने अपील की है वह बहुत ही मार्मिक तथा उनकी अन्तरात्माकी पुकार है। अतः आज आवश्यकता इस बातकी है कि हम अपने साम्प्रदायिक पारस्परिक उन सभी मतभेदों को दूर भगाकर संगठित और एक होकर संसार को यह दिखा दें कि भारत पर ब्रिटिश सत्ता ही उसमें साम्प्रदायिक मतभेदका कारण रही है। क्या विश्व आज भी हमसे आशा कर सकता है कि हम देशकी दीनता और दरिद्रता, आर्थिक दोहन एवं शोषण, घोर अनैतिकता और पिशाचिनी अविद्या के नाम तथा उन कोटि कोटि भारतीय नर कङ्कालों के नाम पर जो आज अपनी उदर ज्वालाकी शान्ति के लिए तथा लाजकी रक्षाके हेतु वस्त्रके चिथड़े तकके लिए लालायित हैं, हम सभी मतभेदोंको भुला कर एक हैं। फिर कोई कारण नहीं है कि ब्रिटिश सत्ता हमें हस्तान्तरित न की जाय।

यह सब ठीक है; परन्तु आज देशकी जैसी स्थिति है उसका प्रत्यक्ष दर्शी कोई भी व्यक्ति आशङ्कित हो सकता है कि कहीं इस गोल-मोल घोषणा द्वारा "किसको सत्ता सौंपी जाय ?" इस प्रश्नको खड़ा कर हमें गृह-युद्धकी अग्निमें झोंक हमारी राष्ट्रियताको भस्मसात् न कर दिया जाय। इस समय लीगने जो नीति अपनायी है उसको देखते हुए नहीं कहा जा सकता कि कांग्रेस और उसके बीच समझौतेका कोई मार्ग निकल आवेगा। कांग्रेस कार्यसमितिने लीगके साथ समझौता करनेको पुनः निमंत्रण दिया है। यदि समझौता हो गया तो इससे अधिक प्रसन्नताकी बात ही क्या हो सकती है, पर यदि न हो सका तो उक्त आशंकाका होना स्वाभाविक हो जाता है। हां, समझौतेकी आशा इस अंशमें की जा सकती है कि यदि सचमुच ब्रिटिश सरकारकी नीयत साफ है और वह इस पारस्परिक विवादमें तटस्थ रही, तो सम्भव है अन्ततोगत्वा कोई आधार समझौते का मिल जाय। अतः अब देखना यही है कि साम्राज्य वादिनी ब्रिटिश सरकारकी नीयत कैसी है। यह घोषणा उसके हृदयका सच्चा उद्गार है अथवा इसके पीछे कोई चाल है। अन्तमें हमें फिर निवेदन करना है कि देशकी विभिन्न शक्तियोंको इस अवसर पर अपने सभी मत भेदोंको भुलाकर अंग्रेजोंकी चुनौतीको स्वीकार कर निश्चित समय पर सत्ता हस्तान्तरित करा लेनेके लिए कटिबद्ध रहना चाहिए।

वर्तमान स्थितिमें हमारा कर्तव्य—

हमारे जिस पञ्चनद देशमें ऋग्वेदके ऋषि किसी समयमें रहा करते थे और जहांकी नदियों के स्तोत्र ऋग्वेदके सूक्तोंमें गाये गये हैं, वहीं आज उन्हीं ऋषियोंकी सन्तानोंके रक्तकी नदियां बह रही हैं। कितनी भयावह परिस्थिति है। जिस 'सिन्धु' नदीके संसर्गसे हमारा नाम 'हिन्दु' है और हमारे देशका नाम 'हिन्दुस्थान' है,उसी सिन्धु नदीके प्रदेशों को 'हिन्दुस्थान' से पृथक् करनेके प्रयत्न अनार्यों द्वारा किये जा रहे हैं, अस्तु। स्वार्थान्ध अनार्य आततायियोंके विषाक्त प्रचारके परिणामस्वरूप एक बार पञ्चनद देशमें भी हिन्दुओं और मुसलमानोंमें अवश्य गृहयुद्ध होना ही था। लड़नेकी लालसाको तृप्त करके उसके भयंकर परिणामोंका अनुभव कर अन्तमें फिर पूर्ववत् मिलकर ही काम करना होगा। यदि इतने रक्तपातसे आततायियों की युद्धलालसा तृप्त हो गई होगी तो वे शीघ्र ही सन्धि चर्चा करेंगे, अन्यथा उन अनार्य षड्यंत्रकारियों द्वारा यत्र तत्र यह गृहयुद्ध न्यूनाधिक रूपमें चलकर आर्य जनताको संत्रस्त करता रहेगा। अतः ऐसे आततायियों (आग लगाने वालों, स्त्रियों व

बालकों एवं निरपराधों पर आक्रमण करने वाले गुण्डों) से हमें सर्वदा सावधान रहना होगा। और भगवान् मनुकी आज्ञानुसार आत्मरक्षा और आततायीके कल्याणके लिए उसे उचित दण्ड भी देना होगा। फिर वह चाहे हमारा कोई आत्मीय जन ही क्यों न हो।

गुरुं वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम्।
आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन्॥
नाततायि वधे दोषो हन्तुर्भवति कश्चन।
[मनु० अ० ८ श्लो० ३५०-५१)

हमारा आदर्श है विश्वका उद्धार। हमने आदिकालसे विश्वका उद्धार किया है और आगे भी करते ही रहेंगे। संकुचित स्वार्थकी भावनाको कभी हमने मनमें स्थान नहीं दिया। इस समयकी पदाक्रान्त पीड़ित दशामें भी हमारा हृदय घायल सिंहका ही हृदय है, शृगालका नहीं। एशियाई राष्ट्रोंका सम्मेलन इस बातका साक्षी है। भगवती श्रुतिकी "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" आज्ञानुसार हमें समस्त विश्वको आर्यत्वकी ओर अग्रसर करना है। और इसके लिए पहले हमें अपनेमें आर्यगुणोंको पूर्णरूपेण विकसित करके फिर अपने पड़ोसियों और साथियोंमें भी उन गुणोंका सञ्चार करना है। यह कार्य प्रेम और दृढ़ताके बिना नहीं हो सकता। किन्तु, प्रेमका यह तात्पर्य नहीं कि यदि कोई हमें मारने आये तो हम चुपचाप बैठे रहें, इसे तो कायरता कहते हैं। प्रेम करते हुए ही हमें उसी प्रकारसे दुष्ट शत्रुका निग्रह करना होगा जिस प्रकार भगवान् श्रीपरशुराम, राम और श्रीकृष्णने मदोन्मत्त अनार्य शासकों और अर्जुनने अपने बन्धुओंका किया था। हम निग्रह किसीको नष्ट करनेकी भावनासे कभी नहीं करेंगे। हमारा निग्रह [दण्ड] भी अनुग्रह [कृपा] का साधन होगा। निग्रह [दण्ड] द्वारा आततायीकी पाप बुद्धिको दूर करके अनुग्रह द्वारा उसमें आर्य बुद्धिकी स्थापना करनी होगी।

हमारा संघर्ष—

हमारा प्रत्यक्ष संघर्ष इस समय हमारे राष्ट्रके आभ्यन्तर शत्रुओंसे है। इस संघर्षके सम्बन्धमें कुछ शान्तिप्रिय महानुभाव स्यात् हमें यह भी उपदेश करें कि 'चुपचाप सब कुछ सहन करते जाओ और मरो।' किन्तु यह हमें स्मरण रखना चाहिए कि ऐसे समयमें यह शान्तिका कृत्रिम रूप होगा। आचार्यचरण श्री १०८ अमृतवाग्भवजी महाराजने श्रीराष्ट्रालोकमें लिखा है—

यया शान्त्या पराधीनं राष्ट्रं भवति सा नहि।
शान्तिः,किन्तु नितान्तं सा केवलं क्लीवता मता॥

दूसरा दल हमें यह उपदेश भी दे सकता है कि 'जहां कहीं जो कोई भी शत्रु दलका मिले उसे उसी समय नष्ट करो, आर्यपन छोड़कर पूरे अनार्य बनो।' आधुनिक संसारके अन्य राष्ट्रोंकी दृष्टिसे देखें तो यह उपदेश सर्वथा उचित प्रतीत होगा। परन्तु हमें तो विवेक बुद्धिसे विचारना है कि जिस आर्यत्व की रक्षाके लिए हम संघर्ष कर रहे हैं यदि उसी आर्यत्वको हमने सर्वथा खो डाला तो हमारे संघर्ष से लाभ ही क्या ? इस लिए हमें दोनों पक्षोंके गुण-दोषोंका विमर्श करना चाहिए, ठण्डे मस्तिष्कसे विचार करना चाहिए और ऊष्मासे परिपूर्ण शरीर द्वारा तदनुसार कार्य करना चाहिए।

पंजाबके वर्तमान कलहका ही दूसरा नाम है पाकिस्तानका कलह। हिन्दुओं और मुसलमानोंका यह भयङ्कर संघर्ष है। दोनों वस्तुतः भारतवर्षके पुत्र हैं। क्योंकि भारतके यावन्मात्र मुसलमान अरब या किसी दूसरे देशके पैदा हुए तो हैं ही नहीं, अतः दोनों भाई भाई हैं। हिन्दु ज्येष्ठ भाई है। उस पर घरकी रक्षाका अधिक उत्तरदायित्व है। मुसलमान छोटा भाई है। यह स्वभावसे अदूरदर्शी उच्छृंखल है। यहां तक धूर्त है कहता है कि "मैं हिन्दुका भाई नहीं।" बड़े भाईको मारनेके लिए भी उठ खड़ा होता है। घरको भी आग लगानेके

लिए प्रस्तुत हो जाता है। बार बार पृथक् होनेकी धमकी देता है। दुष्टोंके कहने पर चलकर बहुत ही अन्यायके कार्य करता है। बड़ा भाई अब क्या करे? घरकी परवाह न कर इससे लड़ता रहे तो घर नष्ट हो जाता है। इसको मारदे तो सोचता है कि संसार क्या कहेगा। उसे अपना भाग देकर पृथक् करदे तो यह भय प्रतीत होता है कि यह अपने भागको कहीं शीघ्र ही खो न बैठे। इसकी ओर ध्यान ही न देवे तो अपने प्राण संशयमें पड़ जाते हैं। ऐसी विकट स्थितिमें करे तो क्या करे। बड़े सङ्कटका सामना उसे करना होगा। छोटे भाईको दण्ड भी देना होगा, पर इतना नहीं कि वह नष्ट ही हो जाए। उसपर अनुग्रह भी करना होगा, पर इतना नहीं कि वह शिर पर ही चढ जाए। उसे कुछ स्वातन्त्र्य भी देना होगा, पर उतना नहीं कि वह उस स्वतन्त्रताका दुरुपयोग करके अपने भागको खोदे या उससे कोई दूसरा ही हड़प ले। छोटे भाई से प्रेम भी करना होगा पर साथ ही दुराचरण छुड़ानेके लिए उसे भयभीत भी करना होगा। इस प्रकारसे अनेक ठोकरें खाता हुआ छोटा भाई कुछ समयके अनन्तर समझ जायेगा कि मुझे बड़े भाईसे मिलकर ही रहना चाहिए और जितने भागका मैं वास्तविक अधिकारी हूँ उसीमें सन्तोष करना चाहिए। जो अनार्य इसे बहका रहे थे उनके स्वार्थ को भी समझकर उनसे नाता तोड़ अपने भाईकी ही शरणमें आजायेगा, तब कहीं घरका कल्याण होगा।

इंगलैंडका चर्चिलीदल मि० जिन्नाह द्वारा भारतीय मुसलमानोंको भड़का रहा है। साधारण मुसलमान उनकी चालाकीको समझते नहीं, वे तो अन्ध विश्वासका आश्रय लेकर इस्लामके नामपर घोर अत्याचार करते जाते हैं। उनको यह भी तो विदित नहीं कि वे चाहते क्या हैं और क्या कर रहे हैं। पाकिस्तान उनके लिए अभी तक एक नाम-मात्र है। इसके तात्पर्यको वे कभी समझे नहीं। तोतेकी भांति 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' और 'लड़के लेंगे पाकिस्तान' की रट लगाना सीख लिया है, पर इसके परिणामको कभी समझा नहीं। और नाहीं आज तक पाकिस्तानकी रूपरेखा स्पष्ट करके मि० जिन्नाह् ने कभी जनताके सामने रक्खी। जिन्नाह् साहबके साथ लीगके अन्य नेता सभी बड़े बड़े जागीरदार जमीनदार पूंजीपति लोग हैं। वे भली-भांति समझते हैं कि जब तक अंग्रेज भारतका रक्त शोषण करते हैं (खून चूसते हैं) तब तक उन्हें भी जूठनका कुछ भाग मिलता ही रहता है। यह प्रसिद्ध ही है कि "खून मुंह लगा छूटना कठिन है" इस लिए वे अंगरेजोंके ही राज्यको दृढ़ करनेके लिए अनभिज्ञ भोली मुस्लिम जनताको दूषितमार्ग पर चला रहे हैं। सज्जन और सात्विक उदार बुद्धि के मुसलमान नेता बहुत कम हैं। श्री खान अब्दुल-गफ्फारखां, मौलाना आजाद जैसे कुछ हैं भी तो स्वार्थान्ध आततायी दल उनका अनुकरण करने के लिए प्रस्तुत नहीं। ऐसी स्थितिमें हमें चाहिए कि साम दान भेद और दण्ड चारों नीतियोंका यथा-वसर प्रयोग करके कार्य सिद्ध करें। शत्रु पर कभी विश्वास न करें, पर उसे यह न बताएं कि हमें उस पर विश्वास नहीं। निग्रह और अनुग्रह दोनों दृष्टिकोणको सामने रक्खें। ऐसी स्थितिमें मायावी शत्रुके सामने एक ही प्रकारकी नीति कभी सफल नहीं होती। अतः विशुद्ध भावना रखते हुए आव-श्यकता पड़ने पर अपनी नीतिको बदलनेमें शास्त्रों के निम्न आदर्श उपदेशको सदा स्मरण रक्खें—

यस्मिन् यथा वर्तते मनुष्यः—
स्तस्मिंस्तथा वर्तितव्यं स धर्मः।
मायाचारो मायया वर्तितव्यः
साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेयः॥
व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं
भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधा—
नसंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः॥

[जिसके साथ जो मनुष्य जैसा बरताव करता हो उसको उस-मनुष्यके साथ वैसा ही बर्ताव करना—यह धर्म है। अतः कपटीके साथ कपटका और सत्पुरुषके साथ सरलताका बर्ताव करना चाहिए। जो कपटीके साथ कपटी नहीं बनते वे मूढ बुद्धि मनुष्य पराजित होते हैं; क्योंकि बिना कवचके खुले अङ्ग वालेको तीक्ष्ण बाणकी भांति कपटी दुष्ट लोग निष्कपटके हृदयमें प्रवेश करके उसे मार देते हैं।]

पंजाबका विभाजन—

वर्तमान विषम परिस्थितिको सामने रखकर ही कांग्रेसके उच्च अधिकारी वर्गने यह निर्णय किया है कि पंचनद देशके दो खण्ड बनाए जाएँ। पाकिस्तान और अखण्ड-हिन्दुस्थानका वास्तविक संघर्ष पंजाबमें ही होगा। यदि उस पंजाबका आधा हमें बिना संघर्षके मिल जाए तो केवल आधे ही के लिए संघर्ष करना होगा। इसमें एक भय यह है कि पश्चिमी पंजाब सिन्ध और सीमाप्रान्त मिलकर कहीं पाकिस्तान न बन जाए। परन्तु सीमाप्रान्तकी समस्या और पठानोंका पंजाबियोंसे मतभेद इसके बनने में बाधक होगा। केन्द्रीय सरकारसे जितनी सहायता पठानोंको मिल रही है उतनी पाकिस्तानसे कभी नहीं। इतने पर भी यदि ये प्रदेश एक पृथक् संघ कदाचित् बना लें फिर भी इनको शेष भारत के साथ मिलकर ही रहना हितकर होगा। अभी तक तो लीग केवल बातें ही बनाती है। जब काम का समय आएगा तो लीगकी आंखें खुल जाएंगी।

पंजाबके विभागका दूसरा प्रभाव यह होगा कि पूर्वी प्रान्तमें भी एक शक्ति-शाली शासन स्थापित होगा और पश्चिमी प्रान्तमें भी। धारा सभाओंमें शासक दल विशेष प्रबल रहेगा। ५१ और ४६ प्रतिशतकी स्थिति नहीं रहेगी। शेष रह जाती है पश्चिमी प्रान्तके अल्पसंख्यक हिन्दुओंकी रक्षा। उसका समुचित प्रबन्ध तो संयुक्त-पंजाब हो या विभक्त पंजाब दोनों दशाओंमें करना ही होगा। इस समय पूर्वी पंजाबने पश्चिमी पंजाबके हिन्दुओं की रक्षामें क्या किया ? यदि कुछ किया भी तो वह विभक्त पंजाबमें भी हो सकता है। यही दशा बंगालकी भी है। इन प्रान्तोंमें चाहे लींगका राज्य हो चाहे कांग्रेस-कोलीशन हो, दोनों अवस्थाओंमें अल्पमतोंकी रक्षाका कोई विशेष प्रबन्ध करना ही होगा। विभागसे केवल इतना हो सकता है कि विषसे दूषित भागका संसर्ग अन्य अङ्गोंके साथ न रहे और विषका संचार समस्त शरीरमें न हो। इस प्रकारसे विषैले अङ्गकी ही विशेष चिकित्सा की जा सकती है। हम अपने ध्येय पर स्थिर रहें, अपनेमें शक्तिका संचय करें, आपसमें एकता और संघ शक्तिको दृढ बनाएँ और अर्थ शास्त्रके नियमोंके अनुसार काम करते जाएं तो हम शीघ्र ही सभी कठिनाइयोंको पार कर सकेंगे। हमारी स्वतन्त्रताको अ न चर्चिल और नाही जिन्नाह रोक सकते हैं। अधिकसे अधिक यह हो सकता है कि पश्चिमोत्तरीय भारतमें अंग्रेजोंकी सेना कुछ वर्ष और रहे। यह समय परिवर्तन शील है। परिवर्तनकी गति बहुत ही तीव्र है। देखिए एक वर्ष के भीतर ही क्या होता है। यही क्रान्तिका समय है। इस समय हमें पूर्णतया सावधान रहना होगा और अर्थशास्त्रका भलीभांति अनुसरण करना होगा। तभी यह हमारी क्रान्ति श्रीराष्ट्रालोकके निम्न शब्दों में शान्तिदायिनी श्रेष्ठ क्रान्ति हो सकेगी —

या क्रान्तिः क्रियते लोके दण्डनायाततायिनाम्।
सा शान्तिदायिनी श्रेष्ठा लोकद्वय शुभावहा॥

स्वर्गीया श्री १०५ मती राजमाता सिरमौरी जी सोलन

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

—o—

पावनचरित्रा स्नेहमयी राजमाता जीके शुभ नामके साथ आज हमें 'स्वर्गीया' शब्द जोड़ते हुए असीम वेदनाका अनुभव हो रहा है, परन्तु यह कोई आवश्यक नहीं कि मनुष्य जो न चाहे वह न हो। इस संसारकी तो यही विशेषता है कि प्रायः अनिच्छित वस्तु उसे अनायास ही मिल जाया करती है और इच्छित या तो उसे मिलती ही नहीं, अथवा मिलकर भी छिन जाती है। कभी कभी क्या बहुधा हम ऐसा भी देखते हैं कि जिसे हम अपने लिए आवश्यक समझते हैं, सर्वस्व होम कर भी अपने पास रखना चाहते हैं, उसे वहाँ भी आवश्यक समझा जाता है और हठात् हमसे ले लिया जाता है; कदाचित् इसके लिए हमारी अनुमति भी आवश्यक नहीं समझी जाती। अनुमति ली भी तो कैसे जाय ? इस बहुमतके युगमें अपनी पराजयसे शङ्कित विधि की विधान-परिषद् जो युग युगसे इस मर्त्यभूमि पर किये गये रात दिनके अपने काले कारनामोंसे बद-नाम है वह विवेकको ताकपर रख कर यदि अपनी हठधर्मितासे काम न ले तो कदाचित् इस परिषद् को उलटनेमें यह सर्वथा पदाक्रान्त परन्तु अब क्रांतिका अग्रदूत मर्त्यसमाज क्षणमात्रका भी विलम्ब न करे।

हेमन्त ऋतुकी माघ कृष्ण २ तिथि थी। असह्य शीतमें भी उदरके अनन्य भक्त हम पर्वतीय मानव अपने कार्योंमें व्यस्त थे कि, सहसा यह विद्युत-तन्त्रीका शोक सम्वाद अपनी विद्युद्गतिसे सारे नगरमें फैल गया "सोलनकी राजमाता श्री १०५ मती सिरमौरी जीने माघ कृष्ण २ बुधवारको प्रातः ४ बजे हरिद्वार के पावन गङ्गातट पर अपने पाञ्चभौतिक स्थूल शरीरको त्यागकर स्वर्गका प्रयाण किया है' क्षणमात्रमें ही यह शोक-समाचार नगरके कोने २ में छा गया। ऐसा कौन नागरिक था जिसके हृदयसे शोकाश्रुका स्रोत न उमड़ पड़ा हो; नेत्रोंने पावस का अनुभव न किया हो, तथा मन मार्मिक वेदनासे व्यथित न हुआ हो। सारी बघाट प्रजा रो पड़ी। उसके करुणक्रन्दनसे आकाश गूंज गया। सारे नगर का कारोबार बन्द हो गया। नगरका प्रत्येक कोना निःशब्द तथा निस्तब्ध था।

चेतन तो अपनी प्राणप्रिय राजमाताके बिछोह से अचेतन हो ही रहा था। हमारे दुख सुखका साथी वह अचेतन वर्ग भी जो कदाचित् चेतनके चिर-सहवाससे कभी-कभी प्रायः चेतनताका अनुभव किया करता है, इस शोक समाचारसे समाकुल हो उठा। वाचाल पर हमारे निकट मूक पशु पक्षियोंकी करुणध्वनिसे सारा नगर निनादित हो गया। प्रजा ने आहार छोड़कर अपनी वेदना प्रकट की तो हमारे पड़ोसी इन पशु पक्षियोंने भी हमारा साथ दिया।

आज भी वही पहाड़ी है और वही राजप्रासाद है, परन्तु सब सुनसान-सा दीखता है। कर्मचारी परिचारिकाएँ तथा पशुपक्षियोंसे मुखरित मातृमन्दिर की न वह आभा है न दीप्ति। उदासीनसा खड़ा है, मानों वह भी मातृ-वियोगमें निष्क्रिय तथा मौन हो शोकमग्न है। पुष्पोद्यानके पादप तथा लताएँ पीली पड़ गई हैं। वायुका एक मन्द झोंका भी असह्य हो कर उनके नीचे पत्तियोंका ढेर-सा लगा देता है। ओह ! शोक भी क्या है ? इसने तो अपनेसे प्रभा-वित कर सृष्टिमें भी उलट फेर कर चरको अचर और अचरको चर बना दिया है।

हमारी पुण्यश्लोका राजमाताका स्वास्थ्य इधर कुछ दिनोंसे खराब हो चला था। यों तो उनकी अवस्था ७३ वर्षकी थी, अतः शरीर भी शिथिल हो गया था, फिर भी अपना सारा आह्निककृत्य बिना किसीकी सहायताके ही वे स्वयं कर लेती थीं। अस्वस्थताकी दशामें सोलनमें ही स्थानीय वैद्यों का उपचार प्रारम्भ किया गया; परन्तु कोई लाभ न देखकर दिल्लीमें और वहाँ भी कोई सुधारके लक्षण न दीखनेपर उनकी इच्छानुसार तीर्थवास की दृष्टिसे पुण्यक्षेत्र हरिद्वार लाया गया। हरिद्वारमें पचासों स्त्री पुरुष उनकी सेवाके लिए साथ थे। हमारे परम मातृभक्त महाराजासाहब एवं अ० सौ० महाराणीसाहबाने उनकी सेवा, चिकित्सा और अधि-कसे अधिक दानपुण्यमें कोई कसर न रक्खी, उनके कुछ और जीवनके लिए सभी सम्भव प्रयत्न किये गये; परन्तु दैवी विधानमें वशही किसका था! उन्होंने अपना पाञ्चभौतिक शरीर पवित्र गङ्गातटपर पावन हरिनाम संकीर्तनके बीच छोड़ा और हमें सर्वदाके लिए मातृ सुखसे वञ्चित एवं अनाथ बना दिया।

आज हमारा पराधीन भारत विद्याकी दृष्टिसे अन्यराष्ट्रोंके सम्मुख कितना पिछड़ा हुआ देश समझा जाता है यह किसीसे अविदित नहीं है। उसमें भी स्त्री शिक्षा तो शताब्दियोंसे हेय दृष्टिसे देखी जाती है। आजसे पचास वर्ष पहले भारतीय राष्ट्रीय जागरणके पूर्वका हमारा इतिहास साक्षी है कि यहां घोर अशिक्षाका साम्राज्य था ऐसे समयमें भी अपनी जन्मभूमि सिरमौरमें राजमाता जी के लालन पालन एवं शिक्षा दीक्षाकी बाल्यकाल में समुचित व्यवस्था होनेके कारण वे परम विदुषी थीं; कर्मकाण्डकी विधियाँ पूजनपद्धति और सङ्क-ल्पादि सब उनको कण्ठस्थ थे। उनके मुखसे संस्कृत श्लोकोंमें प्रार्थनाका उच्चारण बहुत ही स्पष्ट, मधुर एवं श्रुति सुखद होता था। कोई भी साधारण पण्डित उनके समक्ष कर्मकाण्ड करानेमें भयभीत होता तथा अपनेको असमर्थ पाता था। स्त्रीशिक्षासे उनका विशेष प्रेम था, जिसके फल स्वरूप उनकी प्रेरणासे राज्यकी ओरसे नगर में कन्या शिक्षाकी समुचित व्यवस्था की गई है। इस जन्ममें तो वे परम-सौभाग्य शालिनी थीं ही, पूर्वजन्मकी भी कोई योगभ्रष्ट महान् आत्मा थीं। यही कारण था कि पूर्व जन्मके जागरूक संस्कारों से ही उन्होंने नाड़ीशोधनादि योगकी क्रियाएँ भी स्वयं की थीं।

राजमाता माँजीमहाराणी साहिबा राष्ट्रियताकी जीती जागती प्रतिमूर्ती थीं। भारतभूमि पर अंग्रेजों के पदार्पणको वे आर्यों पर अनार्योंका आसुरी आक्रमण समझतीं थीं। स्वदेशी वस्तु तथा खद्दर से उन्हें विशेष स्नेह था। हम भारतीयोंके सुदर्शन चक्र (चर्खा) का चालनकर सूत ऊन पसमीना वे स्वयं भी कातती थीं। उनकी यह लालसा थी कि अपने जीवन काल में ही मैंभारतभूमिपर स्वतन्त्र आर्यराष्ट्रकी पुनः स्थापना देखूं। अपने जीवनके अन्तिम क्षणोंमें राष्ट्रिय महासभाकी वर्त्तमान प्रगति और भारतीय जन-जागरणके समाचार सुन कर वे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट थीं।

ऐहलौकिक दृष्टिसे भारतीय नारीका विधवा जीवन यद्यपि हेय और दुःखद समझा जाता है; परन्तु आध्यात्मिक दृष्टिसे यह वह जीवन है जिसमें त्याग, संयम तथा तपके साथ जीव अपना आत्मकल्याण कर सकता है। दूसरे शब्दोंमें इसे जीवके ऊपर प्रभुकी असीम कृपा ही समझना चाहिये कि वह उसके लिए इस कर्मभूमिमें सभी सुखों तथा वासनाओंका त्याग कर अनेकों सत्कर्मोंका बीज बोनेका ऐसा सुअवसर प्रदान करता है; जिसके लिए देवता भी लालायित रहते हैं। परन्तु युग-युगसे सुख का लोभी जीव काल्पनिक सुखोंमें ही वास्तविक सुख

समझकर इस पवित्र एवं बहुमूल्य जीवनको एक दूसरी ही दृष्टिसे देखता है। राजमाताजी का विधवा जीवन बहुत संयम, त्याग और तपका था। राज भोगका सुख पाकर भी अपने विधवा जीवनमें आजीवन उन्होंने अपने हाथका बना सात्विक भोजन दिन रातमें केवल एक बार ही किया है। श्री रघुनाथजीकी वे अनन्य भक्त थीं। उनके राजप्रासादके निजी मन्दिरमें श्रावणका झूला, जन्माष्टमी तथा रामनौमीका उत्सव देखते ही बनता था। अनेक सेवक सेविकाओंके होते हुए भ भगवदर्पण बुद्धिसे वाटिकामें फूल, फल, सब्जी भाजी तथा भगवान्‌के लिए फस्ली अन्नोंका बीज वे स्वयं बोतीं थीं, इसके लिए सेवक सेविकाओंकी प्रतीक्षा तथा भरोसा नहीं करतीं थीं। एक परम सौभाग्यवती महारानी होते हुए भी उन्हें अपने भगवान्‌की प्रसन्नताके लिए इस वृद्ध वस्थामें बैठे २ क्षेत्र निराते एवं वाटिकाके तृषित फूलके पौदों तथा सुकुमार लताओंको सींचकर तृप्त करते हुए इनपंक्तियों के लेखकने कई बार स्वयं देखा था।

गोसेवासे भी उनका कुछ कम अनुराग न था वे कहतीं थीं कि महाराजा दिलीप तथा भगवान् कृष्णने भी भारतमें भारतीयोंके आदर्श गोसेवा ब्रतका पालन किया था। अतः हमें गोसेवा निःस्वार्थ भावसे स्वयं करनी चाहिए। यह उन्हींकी कृपा है कि शिमलाके निकट और अङ्गरेजोंकी छावनीके रहते हुए भी बघाट राज्यमें गोवधका बिल्कुल ही निषेध है।

प्राचीन कालमें ध्रुव और रामसे लेकर अब तकके विमाता तथा सौतेले पुत्रके इतिहाससे अनभिज्ञ भला कौन व्यक्ति होगा, जो विश्वास करेगा कि सभी विमाताएँ एक सी नहीं होती। कोई ऐसी भी अपवाद होती हैं जो अपने पुत्रसे भी अधिक सौतेले पुत्रके लिए प्राण दे देती हैं। हमारी आदर्श माता राजमाताजी हमारे वर्त्तमान महाराजा साहब की विमाता थीं, परन्तु महाराजा साहबको वे अपने प्राणोंसे भी प्रिय समझतीं थीं। वे यद्यपि निस्सन्तान थीं, फिर भी उनका हृदय मातृस्नेहसे ओत-प्रोत था। हम अपने महाराजा साहबको राजमाताजीके मूर्तिमान् वात्सल्य प्रेमके ही रूपमें पाते हैं। महाराजा साहबको पूज्य पितृदेवका सुख बाल्यकालमें ही छिन गया था, अतः आपके लालन-पालन एवं शिक्षा दीक्षाका भार आपके एकमात्र उदार चरित पितृव्य एवं इन्हीं राजमाताजीके ऊपर आ पड़ा। ऐसी विकट अवस्थामें तत्कालीन राजकुमार वर्त्तमान महाराजा साहबकी शिक्षा दीक्षाका उत्तरदायित्व अधिकतर राजमाताजीने ही सम्हाला। हमारी राजमाताजी परम विदुषी होनेके साथ ही दूर दर्शिनी तो थीं ही। उन्होंने अनुभव किया कि यदि राजकुमारको अन्य राजकुमारोंके साथ स्कूल तथा कालेजका स्वच्छन्द जीवन बितानेका अवसर दिया गया तो निश्चय ही यह बहुत बड़ी भूल होगी और कुसङ्गत वश राजकुमारमें अनेकों अवगुणों के अंकुर जम सकते हैं। अतः उन्होंने लाहौरमें स्वयं एक स्वतन्त्र कोठी लेकर राजकुमारको छात्रावासमें न रख कालेजके अतिरिक्त समयमें अपने पास ही रहने और पढ़नेका प्रबन्ध किया। प्रायः माताएँ अनावश्यक लाड़ प्यारमें पुत्रको कुमार्गकी ओर जानेसे न रोककर स्वेच्छाचार का अवसर दे दिया करती हैं, परन्तु राजमाताजी साधारण माता न थीं, वह दूरदर्शिनी थीं। जानती थीं कि राजकुमारकी वर्त्तमान मानसिक स्वच्छन्दता भावी जीवनके लिए घातक सिद्ध हुए बिना न रहेगी, अतः उन्होंने अपनी देख रेखमें महाराजासाहब के लिए स्कूली शिक्षाके साथ सदाचार तथा सांस्कृतिक शिक्षाका प्रबन्ध स्वयं किया। और महाराजा साहबमें नित्यके आह्निक कृत्यों सन्ध्या वन्दनादि तथा

पूजा पाठादिका संस्कार डाला। वास्तवमें माताकी गोद एक ऐसी आदर्श पाठशाला है जिसकी तुलना में कोई विश्व-विद्यालय भी नहीं टिक सकता। उस समय सुकुमार बुद्धि बालकोंमें जो भी संस्कार पड़ जाते हैं आजीवन उनकी अमिटछाप बनी रहती है। कहा नहीं जा सकता कि यदि विमाता होते हुए भी राजमाताजीने किशोरावस्थामें महाराजा साहब पर इस प्रकारका नियन्त्रण न रखा होता तो इस समय हम उन्हें परम भागवत, सदाचारी, आदर्श-नृपति की अमूल्य निधिके रूपमें पाते या नहीं।

राजमाता साहिबा जहाँ वात्सल्य प्रेमकी मूर्ति थीं, वहाँ हमारे महाराजा साहब भी आदर्श मातृभक्त पुत्र हैं। महाराजा साहबने राजमाताजीके जीवन कालमें उनका जितना सम्मान किया है, जितनी सेवा सुश्रूषा की है, उन सबको इस छोटेसे निबन्धमें दिखलाना असम्भव है। सायं प्रातः कचहरी आते जाते समय माताजीके पदारविन्दोंकी वन्दना करना और पूजा पाठके अतिरिक्त समयमें उनसे राजकीय कार्योंमें भी सत्परामर्श लेना, भक्ति तथा सदाचारका उपदेश सुनना, उनकी सेवाका सदैव स्वयं ध्यान रखना आदि दैनिक कार्य महाराजासाहबकी मातृभक्तिके परिचायक रहे हैं। दशाह एवं एकादशाह श्राद्धके दिनोंमें मातृवियोगसे शरीर कृश हो चला है, पौषका महीना है, अत्यधिक शीतके कारण हम सभी ऊनी कपड़ोंमें ठिठुरे जा रहे हैं, परन्तु हमारे महाराजा साहब शास्त्रीय विधिके अनुसार एक ही धौत वस्त्रमें सारी श्राद्ध क्रिया अटूट भक्ति एवं विश्वाससे कर रहे हैं। बदनमें न तो गंजी है न ऊपरसे कोई ऊनी वस्त्र। श्राद्ध क्रियाके अन्तिम दिन तो उसी शीतमें आप ने अनेकों बार विधिवत् स्नान भी किये। राजभवनके द्वार पर हजारों ब्राह्मण और भिक्षुकोंकी भीड़ लगी है, दिन भर निराहार रहे हैं, फिर भी अपने ही हाथों ब्राह्मणोंका पादप्रक्षालन कर आसनपर बिठा रहे हैं और घण्टों खड़े रहकर भोजन करा रहे हैं। यह सब क्या था, हमारी स्वर्गीया राजमाताजीके प्रति महाराजा साहबकी अटूट श्रद्धा एवं आदर्श मातृभक्ति का ही द्योतक था।

प्रायः सभी देशी रियासतोंमें और यहां भी क्रियाकर्मके पश्चात् भेंट (नजराना) विधि मनायी जाती है। राजकर्मचारी तथा प्रजाकी ओर से रुपये तथा पगड़ी, दुशाले आदि भेंट किये जाते हैं। परन्तु अबकी महाराजा साहबने यह प्रथा बन्द कर दी है। प्रतिष्ठित नागरिकों ने बहुत आग्रह भी किया, परन्तु महाराजा साहबने बिल्कुल अस्वीकार करते हुए जो कुछ कहा वह वास्तवमें उनके हृदयका सच्चा उद्गार था, तथा प्राचीन कालीन रूढ़ियोंके प्रति-क्रान्तिकारी आदर्श वक्तृत्व था। महाराजा साहबने कहा कि—"यह कोई शास्त्रीय विधान नहीं है और न इससे मृतप्राणीकी आत्माको ही किसी प्रकारका सन्तोष होता है, अतः आजसे मैं इस प्रथाको सर्वदाके लिए बन्द कर रहा हूँ। मेरे साथ आपकी सहानुभूति तथा समवेदना हैं, अतः मैं आपके इस स्नेहका आभारी हूँ। केवल नजराने की लौकिक विधि पूरी करनेसे ही आपका प्रेम प्रकट न होगा। वास्तविक प्रेम तो कुछ और ही वस्तु है, उससे उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। मनुष्यमात्रमें वही विशुद्ध वास्तविक प्रेम होना चाहिये जो प्रदर्शनकी अपेक्षा नहीं रखता"।

आज पराधीन भारतकी वसुन्धरामें हमारी पुण्यात्मा स्व० आदर्श राजमाताजी जैसी माताओंकी ही आवश्यकता है, जो अपनी कुक्षिसे ऐसे पुत्ररत्न पैदा करें कि वे अपने चरित्र, सदाचार, गुरुजनश्रद्धा,

(शेष पृष्ठ १६ पर)

एक पौराणिक कहानी—

सतीका संकल्प

[लेखक— श्री पं० रामबहादुर जी त्रिपाठी शास्त्री]

[यह कहानी मार्कण्डेयपुराणसे ली गयी है। इससे भारतीय आर्यमहिलाके त्याग, तप, सेवाभाव तथा अनन्य पतिनिष्ठापर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। आशा है पाठक इससे भारतीय नारीके वास्तविक स्वरूपका दर्शन कर उसके प्रति सम्मानकी भावना रक्खेंगे एवं पाठिकाएँ अपने आदर्श चरित्रकी शिक्षा लेंगी। —सम्पादक]

नित्यकी भाँति पण्डितजी आज भी प्रातःकाल उठे और अपना दैनिक कृत्य कर भगवान्का नाम लेने लगे। परन्तु आज उनका मन लगता नहीं है। शरीर तो बहुत दिनोंसे ही रुग्ण है, परन्तु नाम जपमें आज जैसी बेचैनी पहले कभी नहीं देखी गयी थी। रह-रह कर कलकी शाम याद आ रही थी। उधरसे बारबार चित्त खींचलेनेकी चेष्टाएँ चलती रहीं, पर सब असफल रहीं। नेत्रोंके सामने वही समय और छटा छा जाती थी।

पण्डित कौशिकजी अपने गाँव क्या आसपास के गाँवोंमें भी अच्छे पण्डित समझे जाते थे। अपनी परिस्थिति-वश उन्हें अधिक विद्या प्राप्त करनेका अवसर तो नहीं मिला था, परन्तु अपनी पण्डिताईके कार्योंमें निपुण थे। उनकी इतनी प्रतिष्ठा कदाचित् इसलिए नहीं थी कि वे विद्वान् थे, अपितु सदाचार तथा धर्मनिष्ठाके कारण थी। कोई भी व्यक्ति पढ़-लिखकर विद्वान् तो हो सकता है परन्तु यदि वह अपनेमें संयम नहीं रख सकता तो उसे मानवताके अधिकारसे सर्वथा वञ्चित ही समझना चाहिए। मानवकी मानवता कुछ और है और विद्वत्ता कुछ और। बाहरसे पण्डितजीको अच्छी आय हो जाती थी सौभाग्यसे घरमें पत्नी भी शील, धैर्य, क्षमा तथा करुणाकी प्रतिमूर्ति थी, अतः गृहस्थी आनन्दके साथ चल रही थी। मानवजीवन में गार्हस्थ्य-जीवन एक आदर्श जीवन होता है, जब दम्पती मन, कर्म और वचनसे सर्वथा एक हों। अन्यथा वही नरककी प्रज्वलित कुण्डाग्निका भी काम करता है। पण्डितजीका जीवन इस दृष्टिसे सुखी था।

कई वर्ष आये और सर्वदा की भाँति चले गए। परन्तु सदा मनुष्यका समय एकसा नहीं जाता। पण्डितजीके शरीरमें पहले कुछ जलनके साथ कण्डू (खाज) प्रतीत हुई, औषधि चलती रही परन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ। शरीरका सारा रक्त ही दूषित हो गया और धीरे धीरे यह रोग गलित कुष्ठके रूपमें परिणत हो गया। जो ही देखता पण्डितजीकी इस अवस्थासे सहानुभूति प्रकट करता। कोई भी व्यक्ति जो कुछ भी बतलाता किया जाता पर अवस्था में कोई परिवर्तन नहीं दीखता। पण्डित जी अपनी इस अवस्थासे दुखी होकर लज्जा और संकोचसे घर बाहर निकलने तथा किसी आत्मीयसे मिलनेमें भी झिझकने लगे। परन्तु मन ही तो ठहरा; दिन भर घरमें रहते रहते जब जी ऊब जाता तो घरसे बाहर निकल आते। और समय तो कट जाता था, परन्तु जब सायंकालके भ्रमणका समय आता तो उनका मन बेकाबू होजाता था। सोचते कभी

समय था, जब घरसे बाहर राजमार्गके किनारे अपनी बैठकमें मित्रोंके साथ बैठता, इधर उधर की बातें होतीं और भङ्गबूटी छनती थी। ओह! कितना आनन्दका वह जीवन था। आज वही बैठक और मैं हूं पर कोई बात भी पूछने वाला नहीं है। यदि अनजाने किसीकी दृष्टि पड़ जाती तो वह नाक पर रुमाल रख मुँह फेर लेता है। पर सबका हृदय एकसा नहीं होता, जहाँ अनेकों अपने पूर्व परिचित ही आँखे छिपा निकल जाते थे वहाँ कई ऐसे भी व्यक्ति मिल जाते थे जो पण्डितजीकी पूर्वावस्थाको स्मरण कर दो सहानुभूतिके शब्द कहते और विधिके विधानकी आलोचना करते थे- कि 'ओह! दैव? तूने यह क्या कर दिया। देखो न विचारा कितना धर्म कर्मसे रहता था और आज भी पूर्वजन्मोंके चाहे जैसे भी कर्म हों, कितनी श्रद्धा तथा विश्वाससे भगवान् का नाम लिया करता है।'

ब्राह्मणी प्रातः काल ही उठ जाती; पण्डितजीके उठनेके पहले ही घरके प्रातः कृत्योंसे निवृत्त हो जातीथी। तत्पश्चात् पतिदेवको जगाती तथा सेवामें लग जाती थी। मल मूत्र तथा शरीर और वस्त्र की सफाई तो नित्यकी साधारण बात थी। इसके अतिरिक्त औषधि लाना लगाना तथा पिलाने का कार्य भी प्रमुख कर्तव्य था। साथ ही समय पर भोजन तथा जल-पानकी चिन्ता भी रखनी पड़ती थी। बिचारी प्रातःसे रात तक अपने इस देवता की सेवा तथा आराधनामें व्यस्त रहती थी। वह कोई भी ऐसा कार्य नहीं करती जो पतिको अच्छा न लगे; फिर भी बीच बीचमें उनकी जली-कटी सुननेको मिल ही जाया करती थी। कभी आर्त्त हो रोती, पर फिर सम्हल जाती। सोचती मेरा इस संसारमें पतिदेवको छोड़कर दूसरा है ही कौन? ईश्वरने एक बार जिससे सम्बन्ध जोड़ दिया हम स्त्रियोंका वही सर्वस्व है। चाहे वह जैसा भी हो, एक आर्यमहिला उसे मनमें कभी छोड़नेका विचार तक नहीं कर सकती। वह अपने धन, तन, तथा मनको पतिदेवके चरणोंमें ही होम देती है हमारे तो यही एकमात्र देवता हैं। इनके सुखमें ही मेरा सुख तथा दुखमें ही दुःख है"। फिर पूर्ववत् कार्यमें लग जाती।

दिनके नौ बज गये थे। ब्राह्मणी नित्यकी भांति पतिदेवकी सेवामें लगी रही। परन्तु आज उन्हें विशेष उदास देखकर उसका मन उदास हो गया। पूछा "आज आप कुछ अशान्तसे जान पड़ते हैं, क्या बात है?" पण्डितजीने कहा तुम सुन कर क्या करोगी? तुम्हारे सुनने योग्य नहीं हैं। ऐसे ही आज मन विशेष व्यग्र हो रहा है। पर स्त्रियोंको तो कुछ जाननेकी देर होती है फिर उसका पता लगानेमें सर्वदा सफल होती हैं। ब्राह्मणीने कहा-"जबतक आप न कहेंगे, मैं यहाँसे नहीं जा सकती। ऐसी कौन बातहै? जो मुझसे नहीं कही जा सकती हो।" पण्डितजीने कहा—"तुम्हें जानकर व्यर्थका दुःख होगा और मेरी इच्छा भी पूरी नहीं होगी" ब्राह्मणीने अधीर होकर कहा "शपथपूर्वक कहती हूँ कि मैं सर्वस्व दाव पर लगाकर भी आपको सुखी देखना चाहती हूँ"।

पण्डितजीने कहा—"मैं कल शामको बैठकमें बैठा था कि मेरे निकटसे एक परम सुन्दरी राजवेश्या होकर गई। उसकी रूपमाधुरीको देखकर मैं अधीर हो गया, तभीसे मेरी बार-बार इच्छा होती है कि मैं उसका सहवास प्राप्त करूँ। क्या मेरे इस शरीरसे यह कदापि सम्भव हो सकता है! ब्राह्मणीने सब सुना, लज्जासे शिर झुक गया; परन्तु पतिदेवकी इच्छा तो पूरी करनी ही है।

भारतीय नारी सर्वदासे ही अपनेको अपने पतिके लिए समझती आई है, पति भले ही उसके लिए हो या न हो। पता नहीं वह मानव है कि देवता

क्या उसकी कोई अपनी इच्छा नहीं होती! अथवा उसकी आत्मा पुरुष की क्रीत दास बनकर इतनी दब गई है कि बिल्कुल ही निष्क्रिय हो चली है। अब न तो उसमें गति है, न कोई स्वत्वकी भावना। आप भले ही चाहे जो कुछ भी तर्क कर लें परन्तु मैं तो यही कहूँगा कि भारतीय नर-नारीका दाम्पत्य जीवन प्रकृति-पुरुषका मिलन है। ये दोनों पार्थिव शरीरसे यद्यपि दो हैं परन्तु वस्तुतः एक ही हैं। ब्राह्मणीने अंशुमालीके ओझल होते ही तैयारी करना प्रारम्भ कर दिया। अपनी धोतीके अञ्चलमें कुछ रक्खा और बाँधा। कदाचित् यही घरकी पूँजी थी जिसके बल पर गृहस्थी चल रही थी। और रात्रिके दश बजे सन्नाटा होते ही पतिदेवको कन्धे पर बिठाकर वेश्याके घर चल पड़ी।

पण्डितजी प्रसन्न थे कि अब मन चाही पूरी होगी। अँधेरी रात थी, मार्ग में चोरोंका भी भय था, अतः अपनी बर्छी हाथमें ले ली। आधामार्ग पार हुआ था कि किसीके पद चाप की ध्वनि प्रतीत हुई। ब्राह्मणने देखा, पाससे ही कोई नंगे बदन तेजीसे निकला चला आ रहा है, बस चोर समझ कर पेट में बर्छी भोंक दी। शूलसे आहत हो महर्षि माण्डव्य कराह उठे। ऐसी मार्मिक वेदना हुई कि अपनेको सम्हाल न सके। शाप दिया "जाओ, जिसने मुझ निरपराध पर हाथ छोड़ा है सूर्योदय होते ही मर जायगा।" पतिके इस कृत्यसे क्षुब्ध नारी हृदय कांप उठा। शापके शब्दोंने कानोंमें विष घोल दिया। आँखोंके सामने अँधेरा छा गया। मुख पीला पड़ गया। सोचा, क्या आज सूर्योदय होते ही सचमुच ही हमारे प्राणधन न रहेंगे। नहीं ऐसा न होगा। वक्ष पर हाथ रखा, धैर्य बांधा और सङ्कल्प किया "सूर्योदय न होगा"।

रात लम्बी हो चली, मानो उसका कहीं अन्त ही न था, संसार घोर तिमिरसे आच्छन्न था। जगत्का सारा व्यापार ठप हो गया, जब कालका कोई नियामक ही न रहा कर्तव्याकर्तव्यकी चर्चा ही क्या हो सकती थी? लोक तो आकुल था ही, देव लोकमें भी हलचल थी। यज्ञहोमादि वैदिक कृत्य बन्द था, देव-समाजके धैर्यने साथ छोड़ा। अपने में वयोवृद्ध ब्रह्माजीसे देवसमाजने परामर्श लिया। जन श्रुति है कि हिन्दुओंके बड़े बूढ़े जीवनके अन्तिम कालमें पागल होजाते हैं, पर प्रतीत होता है कि देवलोकमें यह रोग नहीं है। बूढ़ेने दाढ़ी पर हाथ फेरा, नीचे ऊपर देखा। बड़ी विकट समस्या है क्या किया जाय! इतने में कोई युक्ति सूझ गई और आखें तेजसे चमक उठीं। बोले- लोहा लोहेसे, तेज तेजसे और तप तपसे ही शमन होता है। यह सती का सङ्कल्प ह इसे अन्यथा कौन कर सकता है। आप लोग महर्षि अत्रिके आश्रममें सती शिरोमणि अनसूयासे मिलें, वही कुछ कर सकती हैं। अनसूयाने देवताओंसे सब सुना और इस देवकार्यके लिए प्रस्थान किया।

ब्राह्मणी पति सेवामें लगी थी। इधरसे अवकाश मिलते ही कुटियाके द्वार पर किसीको खड़ा देखा। आगन्तुक व्यक्तिके देदीप्यमान मुखमण्डलने उसपर जादू-सा डाल दिया। निर्निमेष होकर देखने लगी। श्रद्धासे मस्तक झुक गया, प्राथमिक शिष्टाचारके साथ अनसूया पास ही आसन पर बैठ गयी। ब्राह्मणी के शिर पर हाथ फेरा, एकने दूसरेसे परिचय पाया, अनसूयाने कहा—"पुत्रि! मैं तुम्हें देखकर बहुत ही प्रसन्न हूं। स्त्रीके लिए पतिसेवासे बढ़कर कोई दूसरा धर्म नहीं है, उसे पृथक् यज्ञ, व्रत तथा तीर्थकी कोई आवश्यकता नहीं है। केवल पतिसेवाके ही बलपर वह पतिके अर्जित पुण्योंके आधेकी अधिकारिणी होत है। उसे पतिसेवासे ही अभीष्ट लोकों तक की प्राप्ति हो सकती है, अतः तुम्हें सदा श्रद्धा एवं भक्ति से पतिकी सेवा करनी चाहिए।"

ब्राह्मणीने विनीत शब्दोंमें कहा—"देवि! मैं जानती हूँ कि स्त्रीकी एक मात्र गति पति ही है। वही उसका देवता है। उसकी सेवा इस लोक तथा परलोकमें उपकारके लिए ही होती है। पतिकी कृपा से स्त्री यहाँ तो सुख पाती ही है मरने बाद परलोकमें भी सुख तथा यश प्राप्त करती है। अच्छा आप यह तो बतावें कि मैं आपकी क्या सेवा करूँ।"

अनसूयाने कहा—"तुम्हारे कारण सूर्योदय रुक गया है अतः वैदिक यागादि कर्म भी बन्द हो गये हैं, यज्ञके रुक जानेसे देवता दुखी हैं, संसार भी प्रलय के निकट है, दिनके अभावमें समयाज्ञानसे सभी सांसारिक तथा वैदिककृत्योंकी गति रुक जानेसे वृष्टि तक रुक गई है। अतः अन्नके अभावमें इस समय संसार विनाशके मुखमें है। यदि तुम चाहो तो ये सारी आपदाएँ टल सकती हैं।

ब्राह्मणीने कहा—"महाभागे! महर्षि माण्डव्यने अत्यन्त क्रुद्ध होकर मेरे प्राणधनको शाप दिया है कि 'सूर्योदय होते ही मर जाओगे'। अब आप ही कहें ऐसी स्थितिमें मेरा क्या कर्तव्य हो सकता था।"

अनसूयाने कहा "भद्रे! यदि तुम सहमत हो तो मैं तुम्हारे पतिको दीर्घजीवी ही नहीं, पुनः स्वस्थ शरीर कर सकती हूँ।" ब्राह्मणी बहुत ही प्रसन्न हुई। स्वीकृति मिलते ही अर्धरात्रिमें ही अनसूयाने सूर्यको अर्घ्य दिया। भुवनभास्करने उदय लिया। उसके साथ ही ब्राह्मण (पण्डितजी) पृथ्वीपर गिर पड़ा और प्राण पखेरू उड़ गए। ब्राह्मणीके करुण क्रन्दनसे आकाश गूंज उठा। अनसूया ने कहा—"साध्वि! तुम विषाद न करो। मेरी पतिसेवाका बल देखो"

अनसूयाने आकाशकी ओर देखा और कहा—"यदि मैंने रूप, शील, बुद्धि, मधुर भाषण तथा आभूषण किसी भी दृष्टिसे अपने पतिदेवके समान किसी दूसरे पुरुषको नहीं देखा है। यदि मैंने अपने पतिके अतिरिक्त किसी देवताको भी पति बुद्धिसे नहीं देखा है और मन, वचन तथा कर्मसे अपने पतिदेवकी ही आराधना की है तो उस सत्यसे यह ब्राह्मण पुनः युवा तथा नीरोग होकर जी उठे और १०० वर्ष तक अपनी प्रियतमाके साथ सर्वथा सुखी जीवन व्यतीत करे।"

ब्राह्मण अलौकिक आभासे घरको आलोकित करता हुआ देवताओंकी भांति अजर होकर उठ बैठा और देवताओंने आकाशसे समोद वाद्यध्वनिके साथ फूलोंकी वर्षा की।

(१२वें पृष्ठका शेष)

जाति, समाज, तथा देशसेवा आदि सद्गुणों द्वारा भारत ही नहीं विश्वमें सुख तथा शान्तिका साम्राज्य स्थापित करें।

मेरे परिवारके प्रत्येक व्यक्तिके साथ प्रातः स्मरणीया स्व० राजमाताजीका अगाध प्रेम था। और मुझपर तो उनका इतना वात्सल्य स्नेह था कि उसे मैं शब्दोंमें नहीं व्यक्त कर सकता। आज मुझ अभागेने राजमाताजीको खो कर अपनी माता से भी अत्यधिक किसी आत्मीयको खो दिया है। 'श्रीस्वाध्याय' पर उनकी अकथनीय कृपा थी, अतः 'श्रीस्वाध्याय' भी अपने बाल्यकालमें ही इस मातृ-वियोगसे अनाथ-सा हो गया है। सारा स्वाध्याय-परिवार ही अपनेको मातृविहीन पाकर शोक सन्तप्त हो रहा है। मैं श्रीस्वाध्याय-परिवारकी ओरसे उस जगन्नियन्ता प्रभुके चरणोंमें प्रार्थना करता हूँ कि आदरणीया स्व० राजमाताजीकी आत्माको शाश्वत शांति प्रदान करे। अन्तमें मैं माननीया श्रीराजमाताजीके चरणोंमें इन शब्दोंके साथ अपने भाव सुमनोंकी श्रद्धांजलि सादर समर्पित कर श्रद्धासे मस्तक झुकाता हुआ उनसे आशीर्वादकी कामना करता हूँ कि राजपरिवारके साथ हम सब प्रजावर्गका भी सर्वदा मङ्गल होता रहे।

ईश्वर

[ले०—श्री पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री *M. A. M. O. L.*]

बाबू विज्ञानराय—क्यों पण्डितजी ! क्या ईश्वर है ?

पं० दर्शनानन्द—मुझे तो आपका प्रश्न ही समझमें नहीं आता।

विज्ञानराय—मेरा प्रश्न यह है कि ईश्वर है कि नहीं ? यदि है तो कहां है ? और किसने उसे देखा है ? यदि नहीं है तो क्यों ईश्वर के नाम पर आप लोग संसार को लूटते हैं ?

दर्शनानन्द—भाई, जरा सोचकर बोला करो। मुझे तो आपका पहला प्रश्न ही अभी तक समझ नहीं आया कि आपका आशय क्या है ? उसपर आप प्रश्नोंपर प्रश्नोंकी वर्षा करते जा रहे हैं। 'ईश्वर' से आपका अभिप्राय क्या है ? एक तो 'ईश्वर' शब्द हो सकता है और दूसरा ईश्वर शब्द का कुछ अर्थ हो सकता है। वह अर्थ भी भिन्न २ देशों और सम्प्रदायों में भिन्न भिन्न हो सकता है। हमारी संस्कृत भाषा में ईश्वर शब्द एक पारिभाषिक शब्द भी है और यौगिक भी। यौगिक अर्थ इस का एक ही है, परन्तु न्याय, योग, वेदान्त आदि शास्त्रों की परिभाषाओं के अनुसार इसके कई अर्थ हो सकते हैं। अतः मैं आप से कहता हूँ कि आप अपने प्रश्नको स्पष्ट कीजिये, तब मैं आपको उत्तर दे सकता हूँ।

वि० रा०—पंडित जी, मुझे क्षमा कीजिये। सच मुच मैंने बिना सोचे ही प्रश्न किया। अब मैं अपने प्रश्न का स्पष्टीकरण करूंगा—मेरा आशय यह है कि जो कुछ भौतिक संसार हमें इन्द्रियों द्वारा दिखाई पड़ता है और जो कुछ सुख दुःख आदि मानसिक भाव हमें मन द्वारा प्रतीत होते हैं, क्या उन से अतिरिक्त उनका नियामक तत्व कोई और है कि नहीं ? उसी काल्पनिक तत्व को हम ईश्वर कहते हैं और उसी के विषय में मेरा प्रश्न है।

द० आ०—प्रश्न तो आपका ठीक है। परन्तु, इसका उत्तर दो चार शब्दोंमें दिया नहीं जा सकता। इसलिए अच्छा है कि इस प्रश्नका निर्णय करने के लिए हम एक भूमिका बनाएं। वह भूमिका आपके और मेरे विचारों पर प्रकाश डालनेसे बनेगी। तो इस विषयमें मैं आपसे पहले यह पूछना चाहता हूं कि आप यह बताइये कि आपके मतानुसार क्या है, अर्थात् किस तत्वकी सत्ता है ?

वि० रा०—मेरे विचारमें तो वस्तुतः वही तत्व है, जो हमें प्रत्यक्ष प्रमाणसे ज्ञात होता है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु ये चार तत्व प्रत्यक्षसिद्ध हैं। इन चारोंके संघाती विशेष शरीर भुवन आदि भी प्रत्यक्षसिद्ध हैं। मन द्वारा ज्ञात होने वाले सुख दुःख आदि भी हैं। इनके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। चैतन्य इन ही भूतसंघातोंका धर्म है, जैसे दहनक्रिया अग्निका धर्म है।

द० आ०—ठीक है। आपने यह मान लिया कि भौतिक जगत् वास्तविक है और आपने इसे प्रत्यक्ष प्रमाणसे जान लिया है। मैं आपसे पूछता हूँ कि इस जगत्को प्रत्यक्ष प्रमाण से किसने जान लिया ? आप कहेंगे कि 'मैंने'। मैं आप से पूछता हूं कि आप 'मैं' किसको कहते हैं, जो 'मैं' जानने की शक्ति रखता है, वह कौन है ?

वि० रा०—'मैं' तो यह प्रत्यक्ष दृश्यमान शरीर है। इसीने इस जगत्को जान लिया। जानना अर्थात् ज्ञान इसी का धर्म है। यही जानता है, यही स्मरण करता है, यही बोलता सुनता है। यही सुख दुःख भोग करता है। जब तक यह स्वस्थ और अक्षत

रहता है, तब तक सभी व्यवहारों को कर सकता है। जब इसका कोई अंग टूट जाता है, तब टूटी हुई घड़ी की भांति यह ज्ञान, स्मृति, सुख, दुख आदि कार्योंको कर नहीं सकता। इस शरीरसे अतिरिक्त इन कार्यों का कर्ता कोई और नहीं।

द० आ०—यह आपकी युक्ति सर्वथा निर्मूल है। आप यह सोचिये कि आप शरीर कहते किसे हैं। शरीर तो एक प्रवाह जैसा है। क्षण क्षण बदलता रहता है। प्राचीन अवयव नष्ट होते जाते हैं। नवीन अवयव बनते रहते हैं। इस शरीरमें ज्ञान, स्मृति आदि धर्म आप प्रायः मस्तिष्कमें मानते हैं। वह मस्तिष्क कोई स्थिर वस्तु नहीं। मस्तिष्क एक मज्जाका पिण्ड है। इस पिण्डमें अवयवों का उपचय और अपचय होता रहता है। कोई अवयव इसका स्थिर नहीं। जो बाल्य अवस्थाका मस्तिष्क और सारा शरीर है, उसका एक भी अंश युवा-अवस्था तक स्थिर नहीं रहता। वह शरीर और था, यह शरीर और है। जैसे पिछले वर्षका गङ्गाप्रवाह और ही था, वह तो कब का समुद्र में पहुँच गया है और बडवानल की आहुति बन चुका है। इस समय का प्रवाह तो नवीन जलमय है। जो अभी अभी पर्वतों से पिघलती हुई बर्फमें से आता रहता है। बाल्य अवस्थाके शरीरने जिस वस्तुको जाना, उस का स्मरण युवा अवस्थाका शरीर कैसे कर सकता है। जो जिस वस्तुको जानता है, वही उस वस्तुका स्मरण भी कर सकता है, क्योंकि ज्ञान स्मरणका कारण हैं। कारण और कार्य एक ही अधिकरणमें रहकर काम कर सकते हैं। चैत्र रोटी खाए तो मैत्र का पेट कभी नहीं भरता। जिसने जाना, वही स्मरण कर सकता है।

दूसरी बात यह है कि सुषुप्तिके समय शरीर तो मृतप्राय होता है। शरीरका अहंभाव तो उस समय लीन हुआ होता है। उस समय सुखनिद्रा का ज्ञान किसे होता है। वह शरीरसे अतिरिक्त कोई और ही तत्त्व है। शरीरकी शक्ति तो स्वप्नमें भी काम नहीं कर सकती तो सुषुप्तिका क्या कहना? यदि सुषुप्तिमें कोई भी जागता नहीं तो जगाने पर यह स्मरण किसको होता है कि 'मैं सुखसे सोया, कोई स्वप्न नहीं देखा। मेरा मस्तिष्क भी सोया हुआ था। मन भी सोया हुआ था।' इस कारण सोये हुए शरीर और मनका साखी कोई अतिरिक्त तत्त्व होना चाहिये।

वि० रा०—पं० जी, स्मृति आदिका कारण संस्कार (instinct) है। वह संस्कार शरीरका धर्म है। क्या आवश्यकता पड़ी है कि एक असत् वस्तुकी कल्पना करें।

द० आ०—वाह जी! स्मृतिका कारण संस्कार है और वह संस्कार शरीरमें रहता है, जो शरीर स्वयं नश्वर है और स्थिर नहीं। अग्नि नष्ट हो जाए तो उसके दाह-प्रकाश आदि धर्म भी उसीके साथ नष्ट हो जाते हैं। इसी प्रकार बाल्य शरीर क्रमशः नष्ट हो गया तो उसके संस्कार भी उसीके साथ नष्ट हो गए। अब भला स्मृति किसको होगी। यह आपका संस्कार तो एक शब्दमात्र ही, नाममात्र है, काम कोई कर नहीं सकता, क्योंकि संस्कार तभी स्मृति का कारण बन सकता है, जब वह किसी स्थिर वस्तु में रहे जो वस्तु युवावस्था और बाल्य अवस्था दोनों की साक्षिरूप है, वही एक अतिरिक्त तत्त्व है।

एक और विचारणीय बात मैं आपसे पूछता हूँ—आप कहते हैं कि अमुक वस्तु को मैंने जान लिया। आप बताइए कि 'जानना' किसे कहते हैं।

वि० रा०—जानना समझने को कहते हैं। वस्तु का प्रतिबिम्ब इन्द्रियों पर पड़ता है। इन्द्रियों द्वारा मस्तिष्क (Brain) पर यह प्रतिबिम्ब पड़ता है। मस्तिष्क में वस्तु के प्रतिबिम्बित होने ही को हम जानना कहते हैं। यह प्रतिबिम्ब (Impression) ही ज्ञान है।

द० आ०—इन्द्रिय और मस्तिष्क पर प्रतिबिम्ब पड़ता है, यह बात तो ठीक है। परन्तु जल, दर्पण,

स्फटिक आदि द्रव्यों पर भी तो प्रतिबिम्ब पड़ता है। उस प्रतिबिम्ब को भी फिर ज्ञान कहना चाहिये। प्रतिबिम्ब तो वह भी है। इस प्रकारसे स्फटिक आदि भी चेतन बन जाएंगे और जड़ चेतन विवेक कोई रहेगा नहीं।

वि० रा०—नहीं जी, चैतन्य तो एक शक्ति है। वह शक्ति शरीर ही में रहती है, स्फटिक आदिमें नहीं। क्योंकि शरीर सोचता है स्फटिक सोचता नहीं। शरीरमें अर्थात् मस्तिष्क में पड़ा हुआ प्रतिबिम्ब तो प्रकाशित जैसा होता है, स्फटिक में ऐसा नहीं होता। यह इन दोनोंमें भेद है।

द० आ०—अब आपको जरा होश आ गई। आप अब यह मान गये कि प्रकाशित होता हुआ प्रतिबिम्ब ज्ञान है। तो वह प्रकाशमत्ता वस्तु का क्या अपना धर्म है? यदि वह उसका अपना धर्म हो तो वस्तु या तो सभी के प्रति प्रकाशित होगा या किसीके भी प्रति नहीं। तब तो लोग सभी या तो सर्वज्ञ बन जाएंगे या अज्ञ। अतः प्रकाशमत्ता वस्तुका अपना धर्म नहीं। वह तो किसी अन्यका धर्म है। वह अन्य कौन है? वह तो शरीर नहीं हो सकता है क्यों कि जैसे अन्य भौतिक पदार्थ स्वयं प्रकाशमान नहीं, वैसे शरीर भी प्रकाशमान नहीं। मूल सूक्ष्म अर्थात् परमाणु ही जब प्रकाशमान नहीं, तो उन के संघातों में प्रकाश कहां से आ सकता है? विशेष संघातों में शक्तिविशेष मानने से भी प्रकाश की कोई उपपत्ति नहीं बन पड़ेगी, क्योंकि प्रकाश के बल से हमें संघात और संघातों की शक्ति सिद्ध हुई। तो संघातों की शक्तिमत्ता से हम प्रकाश की सिद्धि करें तो अन्योन्याश्रय दोष आ पड़ेगा। जिस प्रकाश से भौतिक संघात सिद्ध हो गए, उसी प्रकाश को वे ही भौतिक संघात सिद्ध कैसे कर सकेंगे। यही बात महामुनि याज्ञवल्क्य ने कही है:-

विज्ञातारमरे, केन विजानीयात्। श्वेताश्वतरश्रुति भी कहती है—

न तत्र सूर्यो भाति न तारकं,
नेमा विद्युतो, भान्ति कुतोऽयमग्निः॥
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

यह प्रकाश तत्त्व ही है जो कि भौतिक शरीर मन आदि का साक्षी है जो इन सभी को प्रकाशमान बनाता है। इसी की स्वयं प्रकाशमानता को ही ज्ञान कहते हैं। प्रकाश और प्रकाश की प्रकाशमानता, यह शब्द प्रयोग लाक्षणिक है। वस्तुतः ये दोनों एक ही वस्तु हैं। भेद काल्पनिक है। जैसे राहु का सिर, इस प्रकार के लाक्षणिक प्रयोग हम करते हैं। अब आप समझ गये होंगे कि भौतिक शरीर से अतिरिक्त कोई और तत्त्व है

वि० रा०—जी हां: आपकी दयासे कुछ कुछ तो समझने लगा।

द० आ०—आपको अब प्रकाशका स्वरूप समझाते हैं। प्रकाशसे यहां सूर्य का जैसा प्रकाश नहीं समझना चाहिए, क्योंकि प्रकाशमान सूर्य भी तो इस अलौकिक प्रकाशसे ही प्रकाशित होता है। जब हमने जान लिया कि सूर्य है, तब सूर्य प्रकाशित हुआ इस प्रकार से हमारे प्रकाशने सूर्यका प्रकाश किया, इसी कारण कहा है कि "तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।" वह कोई अलौकिक प्रकाश तत्त्व है।

वि० रा०—भगवन्—हमारी बातचीत पहले भी कई ब्रह्मवादियों से हुई है। उन की युक्तियां सर्वथा हमारी बुद्धि में बैठी नहीं, क्योंकि उन्होंने मुझे आरम्भ में ही आभासवाद का उपदेश किया। द्वैत को उन्होंने असत्य ठहराया। मैंने प्रश्न किया कि यदि द्वैत है ही नहीं, तो क्यों प्रतीत होता है और इस द्वैतपन का निवारण करने की ही क्या आवश्यकता है जो वस्तुतः है ही नहीं? दूसरी बात उन्होंने यह बताई थी कि, शान्त, निष्क्रिय, निरंजन प्रकाश तत्त्व ही ब्रह्म है, वही सत्य है। क्या आप का भी अभिप्राय यही है। क्या इसी प्रकाश तत्त्व का उपदेश आप भी कर रहे हैं?

द० आ०—नहीं, हमारा अभिप्राय कुछ और है। प्रशान्त प्रकाश तत्त्व की आप परीक्षा करें। प्रकाश यहां सूर्य आदि का जैसा प्रकाश तो नहीं कहा गया है, यह तो आप समझ गये। अब प्रकाश फिर किसे कहना चाहिए। विचार करने से फिर वही आप का प्रतिबिम्बवाद सामने आ जाता है। प्रकाश हम उसे कह सकते हैं जिस में वस्तु प्रतिबिम्बित हो जाए। ऐसी वस्तु तो स्फटिक भी है। जैसे प्रशान्त प्रकाश तत्त्व में जगत् प्रतिबिम्बित हो जाता है, वैसे ही स्वच्छ जलाशय और स्फटिक में भी वस्तुएं प्रतिबिम्बित हो सकती हैं। जैसे जल और स्फटिक जड़ ही हैं, वैसे ही प्रकाश तत्त्व भी फिर जड़ ही रहेगा। इसी अभिप्राय को परममाहेश्वर आचार्य उत्पलदेव प्रत्यभिज्ञ सूत्रों में कहते हैं—"प्रकाशोऽर्थोपरक्तोऽपि स्फाटिकादिजडोपमः॥ स्फटिक बेचारा अपनी भी सिद्धि क्या करेगा। इसी प्रकार से शान्त ब्रह्म भी जड़ ब्रह्म ही सिद्ध होता है। अतः इस प्रकाश तत्त्वमें कोई ऐसी विभूति माननी पड़ेगी, जिसे हम चैतन्य कह सकें। वह विभूति है विमर्श। विमर्शको ही चैतन्य कहते हैं। इसी को (conscience) कहते हैं। प्रकाश तत्त्व विमर्श स्वरूप है। अतः सब से प्रथम उसमें "अहम्" ऐसा विमर्श होता है। हम चेतन हैं, क्यों कि हम अपना विमर्श कर सकते हैं कि "मैं हूँ" स्फटिक या प्रकाशान्त प्रकाश "मैं हूँ" ऐसा विमर्श नहीं कर सकता। अतः वह जड़ है। चेतन प्रकाश विमर्शमय होने ही के कारण अपनी तथा भूतभौतिक आदि जगत्का भी प्रकाश तथा विमर्श करता है। ये दोनों प्रकाश और विमर्श वस्तुतः एक ही वस्तु हैं। प्रकाशरहित विमर्श होता नहीं, क्यों कि ऐसा विमर्श अप्रकाश होने के कारण प्रकाशित ही नहीं होगा। अतः उसकी सिद्धि ही नहीं हो सकती। विमर्शरहित प्रकाश तो बताया है कि वह जड़तुल्य है। अतः प्रकाश विमर्शरूप साक्षीको ही हम आत्मा कहते हैं। वही आत्मतत्त्व इस भौतिक शरीरसे अतिरिक्त तत्त्व है, जिसके विषयमें आपने प्रश्न किया था।

वि० रा०—भगवन, आपकी दया से यह तो मैं समझ गया कि शरीर से अतिरिक्त भी कोई इन्द्रिय-गोचर तत्त्व आत्मनामक है। परन्तु यह आपने नहीं बताया कि ईश्वर किसे कहते हैं? अतः ईश्वर तत्त्व का भी अब उपदेश कीजिए।

द० आ०—आयुष्मन्. इस आत्म तत्त्व ही को ईश्वर कहते हैं, ईश्वर वस्तुतः उसे कह सकते हैं कि जिसमें ऐश्वर्य हो। ऐश्वर्य होता है ज्ञान और क्रिया। जिसको जितने क्षेत्र में ज्ञान और क्रिया का ऐश्वर्य है, वह उतने क्षेत्र का ईश्वर है। राजा अपने मण्डल में ज्ञान और क्रिया में स्वतन्त्र है, अतः राजा अपने मण्डल का ईश्वर कहलाता है। प्रकाश ही इस आत्म तत्त्व का ज्ञान है और विमर्श ही इसकी क्रिया है। प्रकाशविमर्श ही को को 'ज्ञान-क्रिया-ऐश्वर्य' कहा जाता है। यह आत्म तत्त्व एक है। भिन्न भिन्न तो उपाधिभेदसे प्रतीत होता है; जैसे एक ही आकाश घट आदि भिन्न भिन्न उपधियोंके भेदसे घटका आकाश, मन्दिर का आकाश, गुफा का आकाश, लुटिया का आकाश, इस प्रकारसे पशु पक्षी, मनुष्य, देवता आदि सभी में एक ही आत्म तत्त्व विद्यमान है। यही आत्म तत्त्व समस्त ज्ञान और समस्त क्रियाओंमें स्वतन्त्र है। इस लिए यह ही सर्वत्र ज्ञाता और कर्ता है। इस कारण इसीको ईश्वर कहते हैं। ईश्वर कोई भिन्न वस्तु नहीं। प्रकाशविमर्शमय आत्म तत्व ही ईश्वर है।

प्रकाशविमर्श शक्ति जिस प्रकारसे साधारण व्यक्तिमें भी स्वप्न, संकल्प और मनोराज्य की अवस्थाओंमें विचित्र सृष्टि को उत्पन्न करता है उसी प्रकार से ईश्वर भी इस समस्त जगत् की रचना करता है। जिस रूपमें यह समस्त जगत् का नियामक है उसी रूपमें व्यवहार दशामें हम उसे ईश्वर या परमेश्वर कहते हैं। परमार्थतया समस्त रूपोंमें वह, या हम ही परमेश्वर हैं। यहां इस कल्पित सृष्टि को असत्य नहीं मान सकते हैं, क्योंकि सृष्टि उसकी

हो सकती है जिस का विमर्श हो। कर्ता पहले विमर्श करता है फिर उत्पन्न करता है! अतः यह जगत् इस समय इस ईश्वर हीके भीतर ज्ञातृज्ञेय भेदसे ठहरा है। उत्पत्तिसे पहले इसी ईश्वरमें सूक्ष्मरूपसे अर्थात् विमृश्यमान रूपसे अवस्थित रहता है। विमृश्यमान और विमर्शमें अभेद होता है, क्योंकि विमृश्यमान वस्तु जब तक विमर्श रूप ही न हो तब तक उस का विमर्श ही कैसे हो सकता है। अतः समस्त जगत् ईश्वर वस्तुतः प्रकाशविमर्श रूप ईश्वर ही है। ईश्वर ही इस अपने आत्मभूत जगत् को अपने आत्ममें ही, आत्मसे भिन्न अर्थात् अविमर्श और अप्रकाश रूपमें (जड़रूपमें) प्रकट करता है और पुनः इस भिन्न रूपमें अनुग्रह द्वारा भिन्नताके भ्रम को दूर करता हुआ अभिन्नताको प्रकट करता है। अतः समस्त ब्रह्माण्ड का ज्ञाता कर्ता यह प्रकाश विमर्श रूप आत्मतत्व ही है। इसी कारण इसीको ईश्वर कहते हैं। हम स्वप्न संकल्प आदिमें इस अपने ज्ञातृत्व कर्तृत्व रूप ऐश्वर्यका अनुभव करते हुए वस्तुतः अपने ईश्वर स्वरूपको नित्य देखते हुए भी भूले हुये हैं और यह समझते हैं कि ईश्वर कहीं हिमालय की चोटी पर रहता है।

ईश्वर सिद्धि नामक पुस्तक में भगवान उत्पलदेव आचार्य ने क्या ही सुन्दर कहा है कि—

समुज्ज्वलन्न्यायसहस्रसाधितो—
ऽप्युपैति सिद्धिं न बिमूढ़चेतसाम्।
महेश्वरः पाणितलस्थितोऽपि सन्—
पलायते दैवहतस्य सन्मणिः ॥

वि० रा०—भगवन्, मैं आपको बड़ा धन्यवाद देता हूँ। आपने मेरी आंखें खोलीं। मैं अभिमानके अन्धेरे में भटक रहा था। आशा है कि आप द्वैत-अद्वैत आदि विषयों पर भी कुछ व्याख्यान करेंगे और इस ऐश्वर्य पर विस्तार रूपसे प्रकाश डालेंगे।

द० आ०—आज आप इन बातोंको मनमें रखिये। इनपर विचार कीजिये। दूसरी बार अन्य समस्याओं पर विचार करेंगे।

———

रामचरित-मानस का महत्व

[लेखक—श्री डा० वासुदेवशरणजी अग्रवाल, M. A. P. H. D.]

गोस्वामी तुलसीदासजी का रामचरित-मानस जनताके हृदयकी वस्तु है। एक रामचरित-मानस को पाकर ऐसा प्रतीत होता है, मानो जनता ने अपने साहित्य दर्शन, पुराण, धर्म और भाषा की प्राचीन परम्पराओं में से सब कुछ प्राप्त कर लिया हो। जिस प्रकार मध्यदेश में बहने वाली महानदी गंगा में अनेक छोटी और बड़ी नदियां, दुरूह पर्वत और गहन वनों के सरस वरदानों को लेकर मिलती हैं उसी प्रकार भारतीय प्रजाओं के विशाल वाङ्मय और बहुमुखी जीवन की अनेक धाराएं रामचरित मानस में मिली हैं। अकेले रामचरित मानस को पाकर हमें ऐसा जान पड़ता है कि हमने अपने मानस जगतके रस ग्रहण करने वाले तन्तुओं में से कुछ भी नहीं खोया।

एक समय था, जब वेद और ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद्के ज्ञानकी पवित्र जान्हवी अनेकों के लिए सुलभ थी। किसी समय सूत्रकारोंके सूक्ष्म तत्त्वज्ञान और महान् आचार्यों के दार्शनिक चिंतन की मंदाकिनी में बहुसंख्यक जनता अभिषेक करके तृप्त होती थी। विशाल बदरी के तपोवनमें तीन वर्ष तक निरन्तर परिश्रम करके सदोत्थायी भगवान् व्यासने भारत और पुराणोंकी जिस भागीरथीकी लोक अवतरण कराया था, उसके सान्निध्यसे अपने आपको पवित्र करनेके साधन भारतीय जनताके लिए विक्रमकी प्रथम सहस्राब्दि तक सुलभ थे। प्राचीन कालमें जनतामें प्रचलित-धर्म की अखण्ड पद्धति अलकनन्दा की गम्भीर धाराके समान जनता को सींच रही थी। परन्तु मध्यकालीन भारतीय इतिहास के युगमें ये प्रवाह उसी प्रकार सुलभ न रह गये थे। अतएव जिस प्रकार गिरिराज हिमालयमें जान्हवी, मन्दाकिनी, भगीरथी और अलकनन्दाकी धाराएं क्रमशः मिल कर मंगलकारिणी गंगाको जन्म देती हैं, जिससे चराचर कृतकृत्य होता है, उसी प्रकार कवि के मानस से वेद, दर्शन, पुराण एवं धर्म की चार बड़ी धाराओं के एकत्र समन्वय से रामचरित मानस रूपी साहित्यिक गंगा जनता के कल्याणके लिए उत्पन्न हुई :—

"सुरसरि सम सब कर हित होई"

रामचरित मानस विक्रमकी दूसरी सहस्राब्दी का सबसे अधिक प्रभावशाली ग्रन्थ है। भारतीय वाङ्मयके समुद्रके अनेक विचारमेघ उठे और बरसे। उनके अमृततुल्य जलकी जिस मात्रा में जनताको आवश्यकता थी, उसे समेट कर मानो गोसाईंजीने रामचरित मानसमें भर दिया है। इसमें न कुछ अधिक है, न कुछ कम। जो अन्यत्र था, वह साररूप से यहां आ गया है और जो साररूपसे यहां है, वही विस्तारसे अन्यत्र था!

विक्रमकी प्रथम सहस्राब्दी में संस्कृत वाङ्मयके क्षेत्र में नया प्राण आया। वह अनेक प्रकारसे नया हो उठा। जब महाकवि कालीदासने आजन्म शुद्ध रघुवंश राजाओं का चरित और यश जनता के सम्मुख रक्खा उस समय कवि की सरस्वती का प्रसाद पाकर लोग प्रसन्न हुए। ऐसा अनुभव हुआ कि श्रुति और स्मृति, पुराण और दर्शन, धर्म और जीवन कला और साहित्यके क्षेत्रोंमें जो कुछ भी उपादेय और रमणीय है, उस सबको महाकवि कालिदास ने अभूतपूर्व कौशल से अक्षय रस के साथ लोकके सन्मुख प्रस्तुत कर दिया है। विक्रमकी प्रथम सहस्राब्दीके सबसे समृद्ध प्रतिनिधि कालिदास है। विक्रमकी दूसरी सहस्राब्दीमें वही पद तुलसीदासको प्राप्त है।

अनेक प्रकारके लोक मङ्गलोंसे 'भरपूर होकर संस्कृत साहित्य ने विक्रमके एक सहस्र वर्षों तक चरम सीमा की उन्नति प्राप्तकी, उस कालके अन्तिम भाग में अपभ्रंश भाषाओं का उदय हुआ और साहित्य की प्राचीन परम्परा और जनता के जीवन के बीच व्यवधान होने लगा। यह दूरी क्रमशः बढ़ती गई। अपने वाङ्मय से रस प्राप्त करनेके जो अनेक स्रोत थे वे जनताके लिऐ रुद्ध होने लगे। अपभ्रंश भाषाका कड़खा कुछ समय तक तो अच्छा लगा पर उसमें न तो पुराने साहित्यकी धाराएं उन्मुक्त रूपसे आ पाई और न रसकी पूरी मात्रा ही उस साहित्यमें आसकी। भारतीय जीवनमें रसके लिए जो गाढ़ा प्रेम है, धर्म और दर्शनको साथ मिला कर जीवनकी व्याख्या करनेकी जो प्रवृत्ति है और प्राचीन राजर्षियों और ऋषियोंके उदात्त चरित्रोंके प्रति जो पूजाका भाव है, इन तीनोंको एक साथ एक जगह पानेके लिए जिस ग्रन्थकी आवश्यकता थी, अपभ्रंश-कालके समाप्त होने पर लोकभाषाओंके नवीन अभ्युदयके युग में वह ग्रन्थ रामचरित-मानसके रूप में प्रकट हुआ।

चतुर्मुख ब्रह्माकी ज्ञानवेदीमें जिस प्रकार वेदचतुष्टयका सगम होता है, उसी प्रकार धर्म, दर्शन, साहित्य और पुराण रामचरित-मानसमें एक साथ मिले हैं। गोस्वामी तुलसीदासजीने जिस ज्ञान यज्ञका विधान किया, उसके मण्डपमें भारतीय वाङ्मयकी समस्त परम्पराएं अपने विशुद्ध और लोक हितकारी रूपमें मिली हैं। इस मण्डपके तोरण पर संगति और समन्वयका सन्देश अंकित है। गोस्वामीजीने रामचरित-मानसको इस विशेषताका आरम्भमें ही पाठकोंको बता दिया है:—

> नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्-
> रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
> स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा-
> भाषा निबन्धमति मन्जुलमातनोति॥

इस श्लोकमें गोस्वामी जीकी यह सत्य प्रतिज्ञा है कि अनेक पुराण, वेदशास्त्र तथा संतमत आदिक अन्य स्रोतोंसे जनताकी कल्याणकारिणी वाणीको साररूपमें उन्होंने अपनी अनुभूतिके साथ रामायणमें भर दिया है। इसलिये यह ग्रन्थ सर्वसम्मत हुआ। इस श्लोक में तुलसीदासजीकी दूसरी बड़ी प्रतिज्ञा यह है कि 'नानापुराणनिगमागमसम्मत' विशाल ज्ञान-भांडार को तत्कालीन लोक 'भाषा' में बद्ध करके एक अति-सुन्दर निबन्ध के रूपमें उसे जनता तक पहुंचाना है। कविके शब्दोंमें यह रामायण 'अति मजुल भाषा निबन्ध, है। उसका यह कथन माननीय है। मंगलाचरण की इस बात को महाकविने मानस के अन्तिम श्लोकमें फिर दोहराया है:—

> ....स्वान्तस्तमः शान्तये
> भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसं॥

कवि की प्रतिज्ञा बड़ी सार्थक थी। 'भाषाबद्ध करब मैं सोई—इस बातके भीतर गहरा संकेत भरा हुआ है। तुलसीके लिए संस्कृत का पांडित्य नितांत सुलभ था। संस्कृत साहित्य पर उनका विलक्षण अधिकार ज्ञात होता है। रामचरित-मानस में यत्र तत्र जो संस्कृत के नमूने हैं, वे एकदम टकसाली हैं, संस्कृतके जितने शब्दों का प्रयोग किया गया है, उतने शायद ही किसी अन्य मध्यकालीन भाषा कवि की कवितामें प्राप्त हों। उनकी शब्दावलीके विस्तार का पूरा अध्ययन करने योग्य है। महाकवि की यही विशेषता होती है। शब्दों का जो धन गोस्वामीजीकी कवितामें है वह अन्यत्र सुलभ न होगा। भाषा, छन्द, रस और अर्थ पर अपने असाधारण अधिकार का उपयोग यदि वे संस्कृत काव्यके लिए करते तो सम्भव यही है कि गोस्वामीजी उसमें भी सफल होते। किन्तु उनकी उस सफलता से भी भारतीय साहित्यमें एक बड़ा अभाव बना रह जाता। जिस भाषाको 'भदेस भनिति' कह कर विद्वान् उस युगमें हंसते रहे होंगे, उसमें यदि तुलसीने अपने 'अति मंजुल भाषा निबन्ध' की रचना न की होती तो जनता और देश की प्राचीन संस्कृति के बीच में

जो गहरी खाई बन गई थी, वह पड़ी रह जाती। तुलसीदासका रामचरित मानस वह सेतुबन्ध है, जो जनताको और नानापुराणनिगमागम वाले साहित्यको आपसमें मिलाता है।

अब गांवोंकी कोटि-कोटि जनताके हृदय तक स्वधर्म, संस्कृति और साहित्य का रस कौन पहुँचाता है? इस प्रश्नके उत्तरमें कहा जा सकता है कि रामचरित-मानसकी सुन्दर सुलभ और सरस धारा के द्वारा ही वह रस जनता को मिलता है। रामचरित-मानसको पाकर लोकने मानो सब कुछ पा लिया। ऐसा नहीं जान पड़ता कि जनताने अपनी प्राचीन साहित्य-निधिमेंसे कुछ भी खोया हो। लोकके मनको रससे तृप्त और तुष्ट करनेके लिए जिस सामग्रीकी आवश्यकता थी, उसको विक्रमकी दूसरी सहस्राब्दी में गोस्वामीजी ने रामचरित-मानस के द्वारा सुन्दर-से-सुन्दर काव्यमय रूप में प्रस्तुत किया।

रामचरित-मानस हमारे लिए क्या है? इसे जाननेके लिए कल्पना करनी चाहिए कि यदि यह ग्रन्थरत्न भाषामें विरचित न होता तो जनता की क्या दशा हुई होती तथा लोकमें ज्ञानकी जो धारा बिना क्रम टूटे हुए बहती आई है, उसकी क्या गति हुई होती? इस प्रकार की कल्पनासे सम्भवतः हम रामायणकी महिमाका कुछ अनुमान कर सकें—गत चार सौ वर्षों में लोकके हृदयमें जो प्रकाश रहा है और जनता को प्राचीन ज्ञानके उत्तराधिकार में जो भाग मिला है, उसका बहुत कुछ श्रेय गोस्वामी जी को है।

'मैं इस भाषानिबन्ध को अपने सुख के लिए रचता हूँ।'—इस भांति कवि की प्रतिज्ञा में समस्त भारतीय प्रजा के हृदय की छाप है। गोसाईंजीने अपने मनमें जिस अन्धकारकी कल्पनाकी थी, वह गाढ़ अन्धकार लोगोंके मनमें भी था। उसे दूर करने के लिए रामचरित-मानसके द्वारा उन्हें प्रकाश मिला। मध्यकालीन इतिहासपर विचार करनेसे हमें ज्ञात होता है कि यह अन्धकार कितना गहरा था। विक्रम की सोलहवीं शतीमें वीरगाथा काव्योंकी परम्परा नीरस हो चुकी थी। उसकी धारा छोटे छोटे रासो-काव्योंमें भटक कर रह गयी थी। सिद्धों और नाथों के दोहों की गति भी दूर तक न जा सकी। कबीर के निर्गुणवादमें बुद्धिको झकझोरनेका मसाला तो था, परन्तु हृदयको स्पर्श करनेकी शक्ति न थी। जायसीके प्रेम-काव्यमें हृदयका एक छोटा सा कुतूहल अवश्य था, परन्तु व्यक्ति और समाजके जीवन का निर्माण करने वाले शक्तिशील आशावादका उसमें पता न था। अन्य कवियों के फुटकर प्रयत्न निर्बल पंख वाले पक्षियों की तरह उड़-उड़ कर रह जाते थे। ऐसे समय आशाका नया सन्देश लेकर गोस्वामीजी प्रकट हुए। गङ्गाकी धारा जिस प्रकार गङ्गाद्वारमें शैलराज हिमवन्तसे उतरती हुई अपार जलराशिको समेट लाती है, उसी प्रकार गोसाईंजीने भारतीय ज्ञान और साहित्यकी समस्त तत्त्वानुभूतिको समेट कर रामायणमें भरा और लोकके लिए उसे दिया। शब्दों और अर्थोंके सशक्त पंखों की सहायतासे गरुड़की तरह गोस्वामीजी साहित्यके आकाशमें ऊंचे उठे। जहां तक वे पहुँचे, वहां तक और कोई नहीं जा सका। जिस धीर और गम्भीर शैलीसे उनके काव्य की धारा बही है, वह शैली अन्य किसीको सुलभ नहीं हुई।

युग-युगोंसे रामचरितमें जो सहज शक्ति भरती आई थी, उससे तुलसीदासकी कविताको शक्ति मिली। जिस अर्थको वे कहना चाहते थे, वह रामचरित की स्वाभाविक व्यञ्जनाके कारण बहुत विकसित हो गया। गोसाईंजीने स्वतः प्राप्त सुन्दरता और सरसताकी इस सामग्रीसे भरपूर लाभ उठाया। चतुर चित्रकारकी भांति कम-से-कम रेखाओंके द्वारा वे अभिधेय अर्थको मूर्तिमान करनेमें सफल हुए। जिस कथानकको गोसाईंजीने कहना चाहा, वह जनताके हृदयमें पहले हीसे बसा हुआ था। लोकके आकर्षणके लिए इससे अधिक कविको और क्या

चाहिए ? जो कविको कहना इष्ट था, वह रामचरित लोगोंके हृदयमें पहलेसे ही विद्यमान था। गोसाईं जीने चतुराईके साथ उसको अपनी काव्य-सामग्रीमें सम्मिलित करके अपनी शक्तिका उपयोग अंतःकरण के उस चित्रको सुन्दरतम रूपमें सजा कर प्रकट करनेके लिए किया। तुलसीका प्रयत्न भीतरकी वस्तु को बाहर लानेके लिए जान पड़ता है। बाहरसे भीतर हठात् किसी वस्तुको ले जाकर रखनेकी प्रवृत्ति उनमें नहीं है। लोकके मस्तिष्कके साथ उनकी उलझन बहुत कम थी। हृदयकी सरस वाणीसे वे अपनी बात कहते थे।

'नानापुराणनिगमागमसम्मतम्'के सूत्रमें कहा हुआ 'सम्मत' पद तुलसीके हृदयगत समन्वय को प्रकट करता है। यह उनकी सफलताकी कुंजी थी। रामचरितमानस समन्वय प्रधान-काव्य है। शैवों और वैष्णवोंके पारस्परिक द्वन्द्व तुलसीकी कृपा से गंगा-यमुनाकी अंतर्वेदीको छोड़ कर बाहर चले गये। प्रयागके संगम की तरह रामचरितमानसमें दोनोंका मेल हो गया। द्वैत और अद्वैतके अनंत पचड़ोंको भी तुलसीने अपनी समन्वयात्मक प्रवृत्ति से सुधार कर इस प्रकार सजाया कि अविरोधी मन से उनका ग्रहण किया जा सके। लोकमें फैले हुए विशाल जानपद जीवन और नगरोंके जीवनमें जो दूरी थी, उसे हटाकर दोनोंके लिए रमणीय चित्र रामचरित-मानसमें तैयार किया गया। इसमें जायसी के ठेठपन और रीति-काव्यकी संवारी रस-निर्भरता को बड़े ही सुन्दर और संयत ढंगसे मिलाया गया। ग्रामों और नगरोंको एक ही साथ समभावसे देख सकनेकी क्षमता गोसाईंजीकी विशेषता थी। इसी लिए ग्रामवासी और पुरवासी दोनों ही तुलसी को अपना कवि समझते हैं। वस्तुतः तुलसी सच्चे अर्थों में पूरे राष्ट्रके कवि हैं।

भाषाके क्षेत्रमें भी तुलसीदासजीने बड़ा भारी समन्वय उपस्थित किया। देहातोंकी ठेठ भाषामें जो माधुर्य था और विद्वान पंडितोंकी संस्कृत वाणीमें जो रुचिरता थी, उन दोनोंका अत्यन्त विलक्षण संयोग तुलसीदासजीकी भाषामें हुआ है। सच पूछा जाय तो भाषाकी शक्ति तुलसीदासजीकी सबसे बड़ी विशेषता है। उनसे पहले और बादके किसी कविको भाषाके ऊपर ऐसा अधिकार प्राप्त नहीं हुआ। जायसी की भाषा किसी समय लोक-सुलभ होते हुए भी साहित्यिकोंके लिए आज दुरूह हो गई है। किंतु तुलसीकी भाषा आज भी सुबोध है। कोष और व्याकरणके प्रति तुलसीदासके मनमें जो श्रद्धा का भाव था, उससे उनको कविताका बहुत उपकार हुआ।

प्राचीन साहित्य और ज्ञानके भण्डारमेंसे जो कुछ भी इस युगकी जनता प्राप्त कर सकती है, वह हिन्दी-माध्यमके द्वारा ही सम्भव है। इस दृष्टिसे गोस्वामी तुलसीदासजीके कार्यको देखते हुये मानना पड़ता है कि रामचरित-मानस की रचना करके उन्होंने लोक कल्याण के लिए महान् विक्रम किया। भारतीय साहित्य की उपमा यदि त्रिविक्रम विष्णुसे दी जाय तो व्यास, कालिदास और तुलसीदास उनके तीन चरण कहे जा सकते हैं। तुलसी का रामचरित-मानस विक्रमकी दूसरी सहस्राब्दीके साहित्याकाश का खुला हुआ नेत्र है। जो उसमें दिखाई देता है, उसे ही तत्कालीन लोक की दर्शन-क्षमता या आंख कह सकते हैं।

———

वराह महाप्राण शक्ति

[लेखक— श्री पं० तिलकधरजी शर्मा शास्त्र-विशारद, सम्पादक 'मानव-धर्म']

मानव की जिज्ञासा विशाल है — विराट् है। वह विश्व और विराट् दोनोंमें वहां तक पहुंचती है जहां तक वे स्वयं हैं। वह वहां भी पहुँचती है जहां विश्व न था, न है, न रहेगा। उसने विश्वके निर्माता से बातकी है, उसकी कठिनाइयोंको जाना है। विराट् ने विश्व क्यों और कैसे, बनाया ? यह ब्रह्माण्ड किस आधार पर स्थित है ? इन प्रश्नोंका उत्तर वह आजसे सहस्रों वर्षों पहिले दे चुकी है। उसके उत्तर में कल्पना नहीं सत्य है और वह सत्य है, जो तप और मनन द्वारा विराटसे ही जाना हुआ है, जो नित्य ज्ञान है — वेद है। वेदने विश्व और विराट के प्रत्येक रहस्यको खोला है।

हम उस युगकी चर्चा कर रहे हैं जिसे वेद 'विराट-विश्व-युग' कहता है। जिसमें विराट विश्व बना और फिर भी विराट विश्वसे पृथक् रहा। जो सब कुछ था और असीम था वह ब्रह्म था, निराकार था। उसने पुरका निर्माण कर उसमें शयन किया और पुरुष बना — सीमाबद्ध हुआ। सीमाबद्ध पुरुष को ही उपनिषदों ने षोडशी पुरुष या क्षर ब्रह्म नाम दिया है। वही आत्मा है। वह षोडशी इसलिये है कि उसमें षोडश कलायें हैं। (१) एक वह स्वयं हैं। पांच उसकी प्रकृति-कलायें हैं; जिनसे क्रमशः — (२) आनन्दसे ब्रह्मा, (३) विज्ञानसे विष्णु, (४) मनसे रुद्र (शङ्कर), (५) प्राणसे अग्नि और (६) वाक्से सोम उत्पन्न हुए। इन छः कलाओं वाले पुरुषको वेद 'रसब्रह्म या अक्षर पुरुष कहते हैं (रसो वै सः) अक्षर पुरुष ने अपनी पांच विभूतियोंका विस्तार किया — (७) प्राण, (८) जल, (९) वाक्, (१०) अन्नाद और (११) अन्न। अक्षर पुरुषकी इन विभूतियोंको पुराण प्रकृति कहते हैं। प्रकृति अपनी पांच विकृतियोंका विकास करती है—(१२) स्पर्श, (१३) रस, (१४) रूप, (१५) शब्द और (१६) गन्ध।

इन विकृतियोंसे इन्द्रियोंकी तथा प्राण, अपान, व्यान, समान और उदान नामक पांच वायुओंकी उत्पत्ति होती है।

इस प्रकार वह ब्रह्म प्राण तक अवतरित होता है। यही ब्रह्मकी अवतरण प्रक्रिया है। इस प्रक्रियाके अनुसार प्राण ब्रह्म है (प्राणो वै सः)। यही प्राण ब्रह्म जड़ और जङ्गम सृष्टिका संचालक है। इसी ने सृष्टिको धारण किया है। प्राण ब्रह्मका अवतार है।

वेद और पुराणोंकी भाषामें इस प्राण-ब्रह्मको प्रजापति वा वराह अथवा शूकर (सूकर) या यज्ञ पुरुष कहा जाता है।

मत्स्यपुराणमें लिखा है कि वराह स्वयं उत्पन्न हुआ, वह स्वयम्भू है। मत्स्य पुराणकी शक्तिका तात्पर्य ही है कि प्राण स्वयं ब्रह्म है उसे कोई उत्पन्न करता है। इसलिये वह स्वयम्भु है।

श्रीमद्भागवतका कहना है कि वराह ब्रह्माकी नाक से उत्पन्न हुआ। भागवतका कथन स्पष्ट है कि प्राणि मात्रकी नाकसे प्राण वायुका सञ्चार होता है, अतः ब्रह्म जब तप करने लगा अर्थात् सृष्टिका प्रारम्भ करने लगा तब उसकी नाकसे प्राण प्रवाहित हुए। नाकका अर्थ है उच्च स्थान। इसलिये प्राण सबसे उच्च है।

वेद कहते हैं —

आपो वा इदमग्रे सलिलमासीत्, तस्मिन्प्रजापतिर्वायु भूत्वाऽचरत्, स इमामपश्यत्, तंवराहो भूत्वा अहरत् ॥
(तैत्तरीय संहिता)

सर्वत्र जल ही जल था, उस जलमें प्रजापति वायु बन कर विचरण करने लगा। उसने विचरण

करते हुए पृथ्वीको देखा और उसे वराह बन कर ले आया।

वेद के कथनानुसार ज्ञात होता है वह पूर्ण ब्रह्म ही वायु है, वही महाप्राण वराह बना है और उसीने पृथिवीको धारण कर रखा है।

पुराण और वेद एक वाणीसे कह रहे हैं, कि अल्प प्राणसे प्राणी और महाप्राणसे विश्व जीवित है। बिना प्राणोंके कोई एक क्षण नहीं रह सकता। प्राण जड़में जीवनका संचार करते हैं। जिसमें प्राण है वही जीवित है। प्राण सर्वकालीन व्यापक सत्ता है, इसलिये ब्रह्म है।

प्राण विश्वको आकर्षण (Positine) और विश्व प्राणोंको विकर्षण (Negatine) प्रदान करता है। प्राण वैराग्यका संचार सूचित करने वालो और कामवश होकर पाप कर्ममें प्रवृत्त रावणका संहार सूचित करने वाली थी।

भगवान्के जन्म समयमें पुनर्वसु नक्षत्र था।

अदित्यै च पुनर्वसु ३।१।१।१॥

इस श्रुतिके अनुसार इसकी स्वामिनी अदिति है।

इयं वै पृथिव्यदितिः। तै० १।४।३।१॥

इत्यादि श्रुतियोंसे अदितिका पृथिवीसे अद्वैत ज्ञात होता है। बुध पृथिवीतत्वात्मक है।

"शिखिभूखपयोमरुद्गणानां वशिनो भूमिसुतादयः क्रमेण।"

इसलिए पुनर्वसु नक्षत्रमें (बृहज्जातक) वैष्णवी शक्तियोंका व्याप्त होना सिद्ध हुआ।

श्रवण नक्षत्र पुनर्वसु नक्षत्रसे चतुर्दश होनेसे उसके संमुखमें होता है। इसलिए पुनर्वसु नक्षत्रस्थ चन्द्रमाकी श्रवण नक्षत्रमें पूर्ण दृष्टि होती है।

विष्णोः श्रोणा (श्रवणनक्षत्रमिति सायनः)

तै० १।२।१।४॥

इत्यादि श्रुतियोंके अनुसार श्रवण नक्षत्रके स्वामी विष्णु भगवान् हैं।

चन्द्रमा मनका अधिष्ठाता ग्रह है। इसलिए भगवान्के जन्म समयमें वैष्णवी शक्तियोंसे प्राणियों के अन्तःकरणका संबन्ध ज्ञात होता है।

शुक्र बुध का मित्र है।

मित्रे सूर्य सितौ बुधस्य (बृहज्जातक)

इसलिए शुक्रवार भी वैष्णवी शक्तियों का प्राबल्य करने वाला था। भगवान्के जन्म-समयमें उच्चस्थ पांच ग्रह अत्युत्कृष्ट राजकार्यके सूचक थे। दशम में शत्रुदृष्ट सूर्य पितृ वियोगका सूचक था। चतुर्थमें शत्रुदृष्ट शनि भूमि त्याग आदि लीलाका सूचक था। सप्तममें मङ्गल सीतावियोग लीलाका सूचक था। यह दशम स्थानका स्वामी था। दशम स्थान राजका स्थान है। इसलिए राज्यके द्वारा स्त्रीवियोग सिद्ध हुआ। दशमस्थान दक्षिण दिशामें होता है। इसका स्वामी मङ्गल भी दक्षिण दिशाका स्वामी है। यह दक्षिण दिशावाली मकर राशिमें था। इसलिए दक्षिण दिशाके राजाके द्वारा स्त्रीवियोग सूचित हुआ। 'लंकादि कृष्णासरिदन्तभारः' इस जातकपारिजातोक्तिके अनुसार मङ्गल लंकासे कृष्णा नदी पर्यन्त देशका स्वामी है। इसलिए इस सीमाके अन्तर्गत देशके स्वामीके द्वारा स्त्रीवियोग सूचित हुआ। अवकहड़चक्रके अनुसार लंकाकी मेष राशि है। इसलिए स्पष्टरूपसे लंकेश्वर द्वारा स्त्री वियोग सूचित हुआ। लग्नमें लग्नेश चन्द्रमा उच्चस्थ बृहस्पतिसे सहित होनेसे अत्यन्त शान्त स्वभावता और अत्यन्त दयालुता आदिका सूचक था। जलचर लग्न था, लग्नेश भी जलचर था और जलचर राशि में था। नवमेशसे युक्त भी था। इसलिए स्पष्टरूपसे समुद्र यात्रा सूचित हुई। यही चन्द्रमा रावण विजय लीला और सीता स्वकार लीलाका भी सूचक था।

भगवान्के जन्म-समयमें मिथुन राशिका उदय हो चुका था। कर्क राशिका उदय हो रहा था। इसलिए उस समय मिथुन से नीचे कर्क राशि थी। मिथुन बुध की राशि होनेसे विशेषरूपसे विष्णु भगवानसे अधिष्ठित है। जलचर यह चन्द्रमासे सहित अत्यन्त बल वाली कर्कराशि पूर्णरूपसे समुद्रात्मकत्व धारण कर रही थी। इसलिए इस समय कर्क-मिथुन शय्यात्मक रूप जलशायी विष्णु भगवानका रूप हो रहा था।

चन्द्रमा सर्पों का अधिष्ठाता है।

'सरीसृपाकार युतः शशाङ्कः' (जातकपरिजात)

'वायव्य दिक्श्लेष्म भुजङ्ग रूप्य स्थूलो युवाक्षार शुभः सिताभः।' (संज्ञा तन्त्र)

कर्क राशिके अन्तर्गत अश्लेषा नक्षत्र भी सर्पों का अधिष्ठाता है। इसलिए कर्क राशि चन्द्रमामें विशेषरूपसे शेषनागकी शक्तियां व्याप्त थीं।

बृहस्पति ब्रह्म देवता है। यह लग्नेशके साथ लग्नमें था। इस प्रकार ब्रह्मदेव सहित समुद्रस्थ शेष-शायी रूप आकाशमें बना हुआ था।

उस पवित्र समय में जो दिव्य तेज व्याप्त होकर इस भूमण्डलमें सम्मिलित हुआ था, उसका कुछ अंश प्रति वर्ष तिथि-मासके प्रभावसे प्रकट होता है। इस लिए रामनवमीके दिन भगवान्‌की उपासनासे अपना जन्म सफल करना सबको उचित है।

इस लेखका सार रूप स्वनिर्मित श्लोकः—

चतुर्भुजाधिष्ठित विग्रह ग्रह—
प्रभाव युक्ते सति मासि भे शुभे।
दिनेऽस्य सख्युः सति सत्तिथौ शुभ—
स्थितौ ग्रहाणां जल शाय्यवातरत् ॥

अर्थ—विष्णु भगवानसे अधिष्ठित देहवाले ग्रह के (बुधके) प्रभावसे युक्त शुभ मासमें (चैत्रमासमें) इसीके प्रभावसे युक्त शुभ नक्षत्रमें (पुनर्वसु नक्षत्रमें) इसी ग्रहके मित्रके (शुक्रके) वारमें शुभ तिथिमें (नवमीमें) ग्रहोंकी शुभ स्थितिमें जलशायी भगवान् अवतीर्ण हुए।

श्रीरामनवमी

[लेखक—राजकुमार गुरु ज्यौतिषालङ्कार श्री पं० तारादत्त जी राज ज्यौतिषी]

चैत्र शुक्ल नवमीको रामनवमी कहते हैं। इस दिन विश्वके नियन्ता श्रीनारायण भगवान् रामचन्द्र जी के रूपमें त्रेतायुगमें किसी अति पवित्र समयमें प्रकट हुये थे।

"उच्चस्थे ग्रहपञ्चके सुरगुरौ सेन्दौ नवम्यां तिथौ,
लग्ने कर्कटसंज्ञके भृगुदिने मेषंगत पूषणि।
निर्दग्धुं निखिलाः पलाशसमिधोमध्यादयोध्यारणे-
राविर्भूतमभूत पूर्वविभवं यत् किञ्चिदेकं महः ॥
चैत्रेमासि नवम्यां तु शुक्लपक्षे रघूत्तमः।
प्रादुरासीत् पुरा ब्रह्मन् परब्रह्मैव केवलम् ॥
तस्मिन् दिने तु कर्तव्यमुपवास व्रतं सदा।
रात्रौ जागरणं कुर्याद् रघुनाथ परो भुवि ॥

(रामार्चन चन्द्रिका)

पांच ग्रहोंके उच्च राशिमें होने पर नवमी तिथि में पुनर्वसु नक्षत्रमें शुक्रवारमें मेषके सूर्यमें चन्द्रमासे सहित कर्क लग्नमें राक्षस रूप समिधाओंको दग्ध करनेके लिए अयोध्या रूप अरनी से अपूर्व वैभव वाला अनिर्वाच्य तेज प्रकट हुआ।

हे ब्राह्मण! चैत्र मासमें शुक्ल पक्षकी नवमी तिथिमें साक्षात् परब्रह्म ही भगवान् रामचन्द्रजी के रूपमें प्रकट हुए। उस दिन पृथिवीमें रहने वालोंको सदा रघुनाथ जी की भक्तिमें तत्पर होकर व्रत करना चाहिए और रात्रिमें जागरण भी करना चाहिये।

चैत्र शुक्ल पक्षका आरम्भ सदा मीनार्कमें होता है। मीनस्थ सूर्यकी कन्या राशिमें पूर्ण दृष्टि होती है। कन्या राशिका स्वामी बुध है। बुधके अधिष्ठाता विष्णु भगवान् हैं।

"बुधस्य च तथा हरिभू" (मत्स्यपुराण)

"सूर्यादितः शिवशिवा गुह विष्णुकेन्द्र काला क्रमेण पतयः कथिताः ग्रहाणाम्" (बृहद्दैवज्ञ रञ्जन)

विष्णु भगवान् कृष्ण वर्ण और पीताम्बर धारी हैं। पीत वर्ण और कृष्ण वर्णके योगसे हरित वर्ण होता है। बुध हरित वर्णका अधिष्ठाता है।

"वर्णास्ताम्रसितारक्त हरितापीतकुर्बराः" (जातक-पारिजात)

इस प्रकार युक्तिसे भी बुधमें वैष्णवी शक्तियोंका व्याप्त होना सिद्ध होता है।

सूर्य आत्माओंका अधिष्ठाता है। "आत्मा रविः शीत करस्तु चेतः" (लघुजातक)

इसलिए चैत्र शुक्ल पक्षके आरम्भमें प्राणियों का विष्णु भगवान् से संबन्ध कराने वाली शक्तियां व्याप्त होती हैं।

समय विभागके आरम्भमें जो शक्तियां व्याप्त होती हैं उनका प्रभाव संपूर्ण समय विभागमें होता है। इसी अभिप्रायसे वर्षारम्भ लग्न, मासारम्भ लग्न आदिसे वर्षफल, मासफल आदिका विचार किया जाता है। इसलिए चैत्र शुक्ल पक्षके आरम्भमें जो वैष्णवी शक्तियां व्याप्त होती हैं, उनका प्रभाव सामान्य रूपसे सम्पूर्ण असान्त चैत्रमें विशेष रूपसे चैत्र शुक्ल पक्षमें होता है। चैत्रके अधिष्ठाता चित्रा नक्षत्रके कन्यासे आरम्भके कारण भी चैत्र, वैष्णव मास है। 'रा' के अवकहड़ चक्रके अनुसार चित्रान्त-र्गत होनेसे रामनामका भी चैत्रसे सम्बन्ध है।

शुक्ल पक्षकी अष्टमीके अर्ध तक क्षीण चन्द्र होता है। इसलिए पूर्ण चन्द्रमा वाली शुक्ल पक्षकी तिथियोंमें प्रथम होनेसे शुक्लकी नवमी प्रशंसनीय तिथि है। रिक्ता होनेसे नवमी अशुभ मानी जाती है। तिथि सूर्य-चन्द्रमाके चारसे बनती है। भगवान् के जन्म समयमें सूर्य चन्द्रमा विशेष बली थे। बलवान् शस्त्रधारी मित्र शस्त्रके द्वारा मित्रका नाश नहीं करता किन्तु उसके द्वारा मित्रके शत्रुका नाश कर मित्रको सुख देता है। इसी प्रकार रिक्ता तिथि अधिक बल वाले सूर्य चन्द्रमाके प्रभावसे अशुभ फल देने वाली नहीं थी, किन्तु अशुभ फल रिक्त कर शुभ फल देने वाली थी।

भगवान्के जन्म समयमें शुक्रवार था। शुक्र कामका अधिष्ठाता ग्रह है। 'सितश्च मदनः।' (बृहज्जातक) इसलिए शुक्रवार सहित रिक्तातिथि अनुचित विषय वासना रिक्त कर विश्वमें मुक्ति हेतु और विश्वके इस आदान प्रदानको पुराण यज्ञ कहते हैं और वराह (प्राणों) को यज्ञमय कहते हैं (महासत्रमयो महान) वराह यज्ञ पुरुष है।

उस आकर्षण और विकर्षणके आदान-प्रदानने ही विश्वको धारण कर रखा है। अतः यह आदान-प्रदान ही धर्म है और वह धर्म यज्ञ वराह द्वारा ही सम्पादित हो रहा है—

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः,

तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्॥ यजु० ३१

उस महान् सृष्टि यज्ञका विस्तृत वर्णन यजुर्वेद अध्याय ३१में विस्तृत रूपसे किया गया है।

वह वराह हिरण्याक्ष नामक असुरसे खूब लड़ा—अन्तमें वराहकी विजय हुई। इस लड़ाईका कारण पृथ्वी थी। पृथ्वीको हिरण्याक्ष पानीमें डुबा रहा था और वराह पृथ्वीको असुरसे मुक्त करना चाहते थे। पुराणों-की इस कथाका रहस्य हम यह समझ सके हैं—

जब ब्रह्माकी त्रिगुणात्मिक मूल प्रकृति विकसित हुई तो उसमें सत्वप्रधान विज्ञानांशसे विष्णु, रजः प्रधान आनन्दांशसे ब्रह्मा और तमःप्रधान मनके अंश-से शिव उत्पन्न हुए। वैदिक भाषामें यह शिव ही इन्द्र हैं। विष्णुसे दैवी शक्तियोंने बल पाया और रजः प्रधान ब्रह्माकी प्रेरणा (वरदान) और तमः प्रधान शिवकी उपासना अर्थात् सामीप्यसे आसुरी शक्तियों ने बल पाया।

यह पृथ्वी-पिण्ड उस समय जलके मध्यमें था। इस पर आसुरी और दैवी दोनों शक्तियां अपना

अपना अधिकार जमानेमें प्रयत्नशील थी। आसुरी शक्तियां विकर्षण प्रधान होती हैं, विनाश उनका स्वभाव सिद्ध धर्म है। इसलिए आसुरी शक्तियोंने पृथ्वीको नीचे फैंकना प्रारम्भ किया—तमोगुणका कार्य है भारीपन, गुरुत्व अन्धकार, पृथिवी अन्धकारमें भारीपनके कारण नीचेकी ओर जाने लगी।

पुराणोंमें कथा है कि इन्द्र पर्वतोंके पक्ष काट कर उन्हें नीचे फैंकता है। इस कथासे भी शास्त्रकारोंका तात्पर्य पृथिवीको विकर्षण द्वारा दूर फैंकनाही है।

विष्णुका कार्य है आकर्षण, वह आकर्षण द्वारा पृथिवीको ऊपर खींचता है (ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्वस्थाः) क्योंकि वह सत्यत्र प्रधान है। विष्णुका अर्थ है व्यापक। व्यापक प्राण शक्ति अर्थात् विराट्-प्राण पृथ्वीको आकर्षण शक्ति द्वारा ऊपर ले आता है। इस आकर्षण और विकर्षण शक्तिके युद्धका ही पुराणोंने 'हिरण्याक्ष और वराह युद्ध' नाम दिया है। वेदनेभी इस युद्ध पर अपनी सम्मति इस प्रकार दी है-

मल्वं बिभ्रती गुरुभृत् भद्रयापस्य निधनं तितिक्षुः। वराहेण पृथिवी संविदाना सूकराय विजिहीते मृगाय।

भारीयपनके धारण करनेकी शक्तिको धारण करती हुई सर्वसहा पृथिवीको गतिशीलता दी।

वराह द्वारा पृथिवी उस धुरी पर टिकाई गई जहां पर वह आजभी भ्रमण कर रही है, वराह (विष्णु) पृथिवीको ही नहीं आकाश और पृथिवी दोनोंको अपनी आकर्षणात्मक किरणोंसे धारण किए हुए हैं।

व्यस्कम्नारोदसी दाधर्थ पृथिवी मभितो मयूखैः।
यजु०

इस प्रकार पुराण और वेद एक सम्मति, एक राय और एक वाणीमें वराह के पराक्रमका वर्णन करते हुए सृष्टिके प्रारम्भ पर प्रकाश डाल कर विज्ञानका पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं। भौतिक विज्ञानके और भी अनेक गहन तत्व वराहकी कथा द्वारा स्पष्ट हो सकते हैं। विज्ञान शास्त्रियोंको इस ओर ध्यान देना चाहिए।

फलित पर विचार

[लेखक—श्रीयुत पं० रघुवीरशरण जी शर्मा वैद्य]

ज्योतिषका फलित-विभाग जिस पर भारतमें बहु संख्यकोंका विश्वास है उस पर विचार करते समय कुछ ऐसी बातें हैं जिन पर ध्यान रखना आवश्यक है, प्रस्तुत लेखमें उक्त बातों पर ही प्रकाश डालनेका प्रयत्न किया जायगा।

आधार—

फलितके तीन आधार हैं; जन्मपत्र, वर्षपत्र और ग्रहगोचर, इनमें भी ग्रहगोचर ही अधिक व्यवहृत होता है। इस ग्रहगोचर पर ही जनसाधारणका शुभ अशुभ फल कहा जाता है।

ग्रहस्थितिवश फल—

ग्रहस्थिति पर लिखा है कि मनुष्यकी जन्म राशि(१) से १२वें आठवें और जन्मके यदि शनि, मङ्गल तथा बृहस्पति हों तब देश त्याग धनकी हानि, और मरणतुल्य शरीर कष्ट (मारकेशकी दशा अन्तर्दशामें मरण भी) होता है। एक आचार्य(२)

(१) द्वादशाष्टम जन्मस्थां शनिरङ्गारको गुरुः।
कुर्वन्तु प्राण सन्देहं देशत्यागं धनक्षयम्॥

(२) धनजन्मनिपञ्चमसप्तमगारचतुरष्टम द्वादशधर्मयुताः।
धनधान्यहिरण्य विनाशकरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः॥

का मत है कि सूर्य राहु (राहुसे केतुका भी ग्रहण होता है) शनि और मङ्गल यदि एक दो चार पांच, सात आठ नौ और बारहवें स्थान पर हों तब भी धन (सम्पत्ति) और धान्य (अन्न) का नाश होता है। इसके विपरीत बुध(३) यदि चतुर्थ हो तब आत्मीय-जन तथा कुटुम्बकी वृद्धि तथा धनकी प्राप्ति होती है, ऐसे ही अष्टम शुक्र(४) होने पर वस्त्र प्राप्ति भवन निर्माण (मकान बनाना) तथा स्त्रीकी प्राप्ति (विवाह) होती है। किन्तु उक्त बातों पर विचार करते समय हमें आचार्य वराहमिहर (५) के इस कथनको भी ध्यानमें रखना चाहिये — उनका कहना है कि उक्त ग्रहोंमेंसे कोई ग्रह यदि नीच राशिका हो, शत्रु क्षेत्री हो, उस ग्रह पर शत्रु ग्रहकी दृष्टि हो, अथवा अस्त हो, तो ऐसी दशामें ग्रहोंका शुभ तथा अशुभ फल कुछ नहीं होता। जैसे अन्धे पुरुषके सामने सुन्दर स्त्रीका विलासयुक्त-कटाक्ष-निरीक्षण कोई फल नहीं करता। इसके विपरीत यदि ग्रह उच्चका हो, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री हो, उदित हो मित्र ग्रहकी दृष्टि हो, तो पूर्ण फल होता है।

साथ ही यह भी स्मरण रखना चाहिए कि कोई भी ग्रह अपनी दशामें (राशिभोग कालमें) निरन्तर शुभ-अशुभ फल नहीं करता। इनमेंसे कुछ ग्रह आदिमें कुछ मध्यमें और कुछ अन्तमें फल करते हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है—

सूर्य(६) और मङ्गल आदिमें गुरु और शुक्र मध्यमें, शनि तथा चन्द्रमा दशाके अन्तमें फल करते हैं। और बुध आदि मध्य तथा अन्तमें सदैव अपना शुभाशुभ फल करता ही रहता है। जैसे शनिका राशि भोगफल २॥ ढाई वर्ष है अतः अन्तके दस मासमें, सूर्यकी दशा एक मास की है यह प्रारम्भ के दस दिनमें, बृहस्पतिका भोगकाल एक वर्ष है अतः यह मध्य ४ से ८ मास तक करेंगे।

अग्रिम राशिका फल

फल कहनेके समय वशिष्ठसंहिताकी यह बात भी याद रखनी चाहिए कि प्रत्येक ग्रह राशिके अन्तमें (२५ अंश भोगनेके बाद) अग्रिम राशिका भी फल देने लगता है और वक्री ग्रह पिछली राशिका देने लगता है। इसको मुहूर्त्त चिन्तामणिने(८) अधिक स्पष्ट लिखा है. उसका कहना है कि — सूर्य ५ दिन, भौम ८ दिन, बुध ७ दिन, शुक्र ७ दिन राहु तीन मास, शनि छः मास और बृहस्पति दो मास पूर्व अपनी राशि पर रहते हुए भी अगली राशिका फल करने लगते हैं।

अतिचारी तथा वक्री—

यदि ग्रह अतिचारी अथवा वक्री होता है तब निम्नलिखित अवधि पूर्व फल करने लगता है।

मंगल १० दिन, बुध ५ दिन, बृहस्पति १॥ मास, शुक्र ५ दिन और शनि ५ मास पूर्व अतिचारी और वक्री होने पर क्रमशः अगली तथा पिछली राशियोंका फल देने लगते हैं। सूर्य चन्द्र कभी वक्री नहीं होते,

(३) चतुर्थगे स्वजन कुटुम्ब वृद्धयो धनागमो भवति च शीतर श्मजे।

(४) मानोऽष्टमं भवन परिच्छद प्रदो लक्ष्मीवतीमुपनयति स्त्रियं च सः। ३६

(५) नीचेऽरिभेऽस्ते चारिदृष्टस्य सर्वं वृथा यत् परीकीर्तितम्। पुरतोऽन्धस्येव भामिन्याः सविलासकटाक्षनिरीक्षणम्। वाराही संहिता अ० १०४

(६) भवनादिं गतौ फलदौ रविभौमौ मध्यगौ च गुरुशुक्रौ। अन्त्य गतौ शनिशशिनौ सदैव फलदः शशांकसुतः। वाशिष्ठसंहिता अ० १८।श्लो १५

(७) भवनान्त्य गताश्च यदा धिष्ण्यान्त्यगताश्च गगन-चराः। दद्युः परभवन फलं प्राग्भवन फलं च वक्रिता ये च॥१३॥ दश दिवस पंच दिन त्रिपक्षमतिचार वक्रयोर्दद्युः। वशिष्ठसंहिता १८

(८) सूर्यारसौम्या स्फुजितोऽक्ष नाग सप्ताद्रि पक्षान् विधुरग्नि नाडीः। तमोयमेज्याख्रिरसाश्विमासान् गन्तव्य-राशेः फलदाः पुरस्तात्। (मुहूर्त्त चिन्तामणि प्र० ४)

राहु केतु सदैव वक्री रहते हैं अतः इनका उल्लेख नहीं किया गया। साथही यह भी जान लीजिये कि सौम्यग्रह ग्रहका अतिचार तथा क्रूर ग्रहका वक्री होना अशुभ फलदायक होता है।

अब हम पहिले कहे हुए उच्च नीच शत्रु-मित्र आदि ग्रहोंका वर्णन कर देना भी उचित समझते हैं।

उच्च ग्रह—

सूर्य मेषका, चन्द्रमा वृषका, मंगल मकरका, बुध कन्याका, गुरु कर्कका, शुक्र मीनका और शनि तुला राशिका उच्चका होता है (१०) यह नियम सर्वत्र (जन्म वर्ष ग्रहगोचर) पर लागू होता है।

नीच ग्रह—

इसके विपरीत प्रत्येक ग्रह अपनी उच्चराशिसे सप्तम राशि पर नीचका होता है। जैसे – सूर्य तुला, चन्द्र वृश्चिक, मंगल कर्क, बुध मीन, गुरु मकर, शुक्र कन्या और शनि मेष राशि पर नीचका कहाता है।

ग्रहोंकी शत्रुता और मित्रता

मित्र ग्रह—

सूर्यके बृहस्पति चन्द्र और मङ्गल। चन्द्रके सूर्य, बुध। मंगलके सूर्य चन्द्र और गुरु। बुधके सूर्य और शुक्र। बृहस्पतिके सूर्य चन्द्र और मंगल। शुक्रके बुध और शनि। शनिके बुध और शुक्र मित्र हैं।

शत्रु ग्रह—

सूर्यके शुक्र और शनि। मंगलका बुध। बुधका चन्द्र। बृहस्पतिके शुक्र और बुध। शुक्रके सूर्य और चन्द्र। शनिके सूर्य चन्द्र और मंगल शत्रु होते हैं। शेष ग्रह सम होते हैं।

ग्रहोंकी राशि—

सूर्य (११) सिंहका, चन्द्र कर्कका, मंगल मेष और वृश्चिकका, बुध कन्या और मिथुनका, गुरु धनु और मीनका, शुक्र वृष और तुलाका, शनि मकर और कुंभ राशिका स्वामी होता है। इसके अतिरिक्त ताजिकने (१२) कन्याका राहु और मिथुनका केतुको भी स्वामी माना है।

जैमिनीय वृद्धकारिकामें १३ वृश्चिकका मंगल और केतु, कुम्भका शनि और राहुको भी स्वामी लिखा है।

ग्रह दृष्टि—

तीसरे दसवें एक चरण, नवम और पंचम दो चरण, चौथे और आठवें तीन और सप्तम् घर पर चार चरण अर्थात् पूर्ण दृष्टि प्रत्येक ग्रहकी होती है। (मेरा नम्र किन्तु निश्चित मत है कि एक या दो चरण दृष्टियोंका कोई विशेष फल नहीं होता) ऋषि पराशर ने (१५) दृष्टि सम्बन्धमें अपना भिन्न ही मत प्रकट किया है। उनका कथन है कि सप्तम घर पर प्रत्येक ग्रहकी पूर्ण दृष्टि होती हैं, यह साधारण नियम है, किन्तु तीसरे दशवें शनिकी, पञ्चम नवम पर बृहस्पति की और चौथे आठवें घर पर मंगलकी पूर्ण दृष्टि होती है। (मैं इसी मत पर विश्वास करता हूँ) यह

---

(९) अतिचार गते सौम्ये क्रूरे वक्रत्वमागते।
हा हा भूतं जगत् सर्वं रुण्डं मुण्डं च जायते॥
(शी० बो० ४,७१)

(१०) अज वृषभ मृगाऽङ्गना कुलीरा झष वणिजौ च दिवाकरादि तुङ्गाः। (बृहज्जातक)

(११) कुजः सितबुधौ शशी रविबुधौ सितक्ष्मा सुतौ गुरुर्यम शनी गुरुर्भवनपा इमेमेषतः।
(जातकालंकार ८।१।११)

(१२) कन्या राहुगृहं प्रोक्तं केतोश्च मिथुनं स्मृतम्।
(ताजिक)

(१३) कुजशौरिकेतुराहू राजानावालेकुम्भयोः। अर्थात् वृश्चिकस्य कुज केतु स्वामिनौ कुम्भस्य शनि राहू स्वामिनौ। (टीकाकार)

(१४)तृतीय दशमे ग्रहो नवम पञ्चमेऽष्टाम्बुनी कमाच्चरण वृद्धितः स्मर गृहं ततः पश्यति। (जातकालंकार)

(१५) पश्यन्ति सप्तमं सर्वे शनि जीव कुजादयः। विशेषतश्च त्रिदश त्रिकोण चतुरष्टमान्। (लघुपाराशरी)

कहना भी प्रासङ्गिक है कि उक्त पराशर मत जन्म पत्रमें ही व्यवहृत होता है, ग्रहगोचरमें केवल सप्तम दृष्टि। वर्षफलके सम्बन्धमें ताजिकने इसके अतिरिक्त कुछ और भी लिखा है 'दृष्टिः स्यान्नवपञ्चमे बलवती प्रत्यक्षतः स्नेहदा' अर्थात् प्रत्येक ग्रहकी नवम पञ्चम दृष्टि ही बलवती होती है, आदि-आदि। इसके अतिरिक्त राहु दृष्टि (१६) भी अपना स्थान पृथक ही रखती है। राहुकी ५।७।६।१२ घर पर पूर्ण दृष्टि होती है, ४।१० पर अर्द्धदृष्टि ३।६ स्थान पर पाददृष्टि। यदि अपनी राशि पर हो तो अन्धा होता है फिर कहीं नहीं होती। ऋषि पराशर (७१) ने सहज ही इसका पातक काट दिया है, उनका कहना है कि राहु केतु जिसके भावमें हों (जिसकी राशिमें हों) और जिस भावेशके साथ हों ये उन्हीं उन्हीं का फल करते हैं इनकी स्वतन्त्र सत्ता कुछ भी नहीं। (यह जन्मपत्रके सम्बन्धमें है न कि अन्यत्र)।

फलितमें कठिनाई—

फलित कहने में कभी कभी पञ्चाङ्गों की विभिन्नताभी कठिनाई उत्पन्न कर देती हैं। ग्रहोंका उदय-अस्त ग्रहोंका वक्री मार्गी तथा ग्रहोंका राशि-संक्रमण काल पञ्चाङ्गोंमें एकसा नहीं लिखा मिलता, किसी में कुछ है तो किसी में कुछ। ऐसी दशा में फलित का कहना न केवल कठिन है बल्कि असम्भव ही है। एक बार आयुनिर्णयार्थ एक जन्मपत्र मेरे सामने आया, टेवेमें लग्न मिथुन था, शनि मकरका अष्टम भावमें रखा गया था किन्तु यह नोट भी लिखा था कि काशी विश्वपञ्चाङ्गमें शनि धनु राशि पर है। मैंने लहडू बम्बई केतकी चित्रशाला प्रेस पूना सभी देखे तथा रफल जो अंग्रेज ज्योतिषी का उसके निकाले हुए सौ वर्षके ग्रह स्पष्ट भी देखे तब मैंने भी इन सबमें शनि मकरका ही पाया तब मैंने भी बहुमतका आदर करके मकरका ही मान लिया, यद्यपि 'विश्वपञ्चाङ्ग' पर सहसा अविश्वास नहीं किया जा सकता था। अब आइये अपने विषय पर यदि शनि धनुका मानकर सप्तम भाव पर माना जाता है तब तो जैमिनीय सूत्रके (१८) अनुसार मध्यायु आती है और मकर पर माना जाता है तब अल्पायु ही रह जाती है; यह विभिन्नता फलितमें गड़बड़ करती ही रहती है, यह तो रही आयुकी बात। आयुके अतिरिक्त सप्तम भाव और अष्टमभावस्थ शनिका फल भिन्न-भिन्न है ही यह इस समय बताने की आवश्यकता नहीं, इस पर फिर कभी प्रकाश डाला जायगा।

इसके अतिरिक्त और भी षड्वर्ग दशवर्गान्तर्गत होरा, द्रेष्काण आदि हैं जिनको शास्त्रोंने अनेक प्रकारसे लिखा है—गड़बड़ उत्पन्न करते हैं, इन पर फिर कभी प्रकाश डालनेका प्रयत्न करूंगा। इस समय तो ज्योतिषियोंसे यह प्रार्थना है कि फलितके अन्तर्गत गणित विभाग जन्मपत्र, वर्षपत्र निर्माण करना तथा इनका फल बताना दो भागोंमें हो जाना चाहिये। इससे कार्यमें सुविधा होगी। और भी अच्छा हो जन्मपत्रके बारह भाव हैं जिनका फल कहा जाता है फल वक्ता इन भावोंमें से दो चार भावोंको जो उन्हें अभीष्ट हों, जैसे केन्द्र १।४।७।१० अथवा त्रिकोण ५।६। अथवा अन्य और कोई भावों

---

(१६) सुत मदन नवान्त्ये पूर्ण दृष्टिश्च राहुर्युग दशमपि गेहे वीक्षितेऽर्द्धापि चाहुः। सहज रिपुगतोऽसौ पाद दृष्ट्या भपश्ये न्निजभवन मुपेतो लोचनान्धः प्रदिष्टः।

(१७) यद्यद्भाव गतौ वापि यद्यद्भावेश संयुतौ।
तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदिशेतां तमोग्रहौ॥ (लघुपाराशरी)

(१८) प्रथम द्वितीययोरन्त्ययोर्वा पध्यम् ।३।
मध्यराद्यन्तयोर्वा हीनम् ।४। (जैमिनीय अ० २।)
प्रथम द्वितीययोश्चरस्थिरयोः स्थितयोर्लग्नेशाष्टमेश-योर्मध्यम्।
तथा अन्त्ययोस्थिरद्विस्वभावयोर्मध्ये मध्यायुः ।३।
मध्ययोः स्थिरयोर्मध्येस्थितयोर्हीनम् तथा आयन्तयोश्चर-द्विस्वभाव योर्मध्ये स्थितयोर्हीनम् हीनायुः स्यात्।
(टीकाकार)

को चुन लें और उन्हीं भावोंका फल कहें । उक्त भावोंमेंसे जिस ग्रन्थका अधिकांश फल मिलने वाला अथवा असत्य बैठने वाला उसका विवरण सहित प्रतिशत लिखकर पुस्तकाकार रखते रहना अथवा पत्रोंमें प्रकाशित करते रह । चाहिये । ताकि और भी लाभ उठा सकें। इस कार्यमें उनका सहयोग भी परमावश्यक है जो महानुभाव ज्योतिषसे धनोपार्जन नहीं करते जिनका यह शास्त्र ज्ञान व्यसन मात्र है। मैं स्वयं भी ऐसे ही लोगोंमें से हूँ, अपना जीवन निर्वाह वैद्यकसे करता हूँ। मेरा विचार है यदि इस पद्धति पर अमल किया गया तो कार्य ठोस होगा जो ज्योतिषकी उन्नतिमें सहायक होगा।

राशि-ज्ञान—

राशि या जन्म राशि जाननेके लिए राशि, नक्षत्र तथा राशि नक्षत्र मिश्रित कुछ पाठ याद करना पड़ता है—जैसे—अश्विनी भरणी कृत्तिका पाद मेष आदि आदि, किन्तु इस निम्नलिखित विधिसे पाठ याद करने की आवश्यकता न रहेगी।

विधि—जिसकी राशि जाननी हो अश्विनी नक्षत्रसे लेकर उसके नक्षत्रके अक्षरोंकी संख्या तक गिन जाइये (उसके नामका पहिला अक्षर जिस पर आवे वही उसका नक्षत्र समझना चाहिये) उन अक्षरों की जितनी संख्या हो उसमें ६ का भाग दे दो जितनी बार भाग जाय वही राशि समझनी चाहिये। उदाहरण—नाम रामप्रसाद है पे पोरारी चित्रा नक्षत्र है 'रा' अक्षर संख्या ५५ है ६ का भाग देने पर ५४ तक ६ राशि कन्या गत होकर सातवीं तुला राशि हुई।

स्पष्टीकरण—

२७ नक्षत्र हैं। प्रत्येक नक्षत्रमें ४ अक्षर हैं, यही अक्षर चरण पाद कहलाते हैं। इस प्रकार ६ चरण की या सवादो नक्षत्रकी एक राशि होती है, इन्हीं राशियों पर शीघ्रगामी चन्द्र सवा दो दिनमें और मन्द गति शनि ढाई वर्ष तक प्रत्येक राशि पर रहता है।

पतित्यक्ता—

'सूर्येऽस्ते पतिनात्यक्ता'के अनुसार जिस स्त्रीके जन्मपत्रके सप्तम घट पर सूर्य हो तो उस स्त्रीका पति उसे त्याग देता है (छोड़ देता है)। बृहज्जातकने भी ऐसे दो योग 'उत्सृष्टा तरणौ' 'क्रूरे हीन बलेऽस्तगे स्वपति सौम्येक्षिते प्रोज्झिता' लिखे हैं। प्रथम वाक्यका अर्थ तो पूर्वोक्त ही है दूसरेमें कहा है कि निर्बल क्रूर ग्रह सप्तम स्थान पर हो और उसे सौम्य ग्रह देखता हो तब वह स्त्री पति-त्यक्त होती है। पहिले योग पर मेरा दो चार बारका अनुभव है, ठीक बैठता है। स्वयं मेरी लड़की के सप्तम स्थान पर बुध और सूर्य हैं, इसका विवाह १३ मई स०१६४५ और द्विरागमन १६ नवम्बर सन् १६४५ ई० को हुआ। इसके मास डेढ मास पश्चात् ही पतित्यक्त हो गई, न केवल पतिव्यक्ता हो गई बल्कि सुसराल वाले जो भी सासश्वसुर ननद आदि उस घरमें थे उन सबका बड़ा ही दुर्व्यवहार रहा, परिणामस्वरूप लड़की सरला (वस्तुतः सरला) का स्वास्थ्य एकदम गिर गया और उसे ज्वरमन्दाग्नि आदि रोग रहने लगे, रक्तकी एकदम कमी हो गई। जैसे-तैसे आठ मास बाद मैं अपने घर पर ले आया आज भी वह ठीक नहीं है, सायंकाल ज्वर बढ़ जाता है, चिकित्सा हो रही है। इसके फलकी जिज्ञासासे मैंने सरलाका टेवा अपने मित्र पं० कालीचरणजी (सनावद) को भेजा तो उन्होंने भी इन शब्दोंमें समर्थन किया है—"सूर्येऽस्ते पतिनात्यक्ता" यह एक ऐसा दुर्योग है जिसके जहां पर देखा वहीं पर सत्य पाया है।

फुटकर अनुभव

गत १६३७ ई० में एक लड़की (सरला) के कन्धा पर काक कौवा बैठा, इस घटनाके डेढ मास पश्चात् लड़कीकी माताकी मृत्यु हो गई। फिर सन् १६४१ ई० में सितम्बर मास में एक लड़केके कन्धे और कमरमें काकने तीन बार चोंच मारी, दो मासके भीतर लड़केके छोटे भाई

की मृत्यु हो गई। फिर एक वर्ष बाद भाद्रपद कृष्णा ५ संवत् १९९९ को उसी लड़केकी कमर पर कौवा बैठा, इसकी किम्वदन्तीके अनुसार प्रायश्चित्त कर दिया गया फिर अशुभ फल नहीं हुआ।

प्रायश्चित्त—

(१) शूकरकी खड्डी (शूकरका निवास स्थान) को स्पर्श करना (२) सुवर्णकी अंगूठीको धोकर पिलाना (३) लोहेकी चलनीमें पानी डाल कर स्नान कराना (४) सवा सेर सातों अन्न चलनीमें रख कर एक गेहूंके आटेका काक बना कर इस काकको कोयलेसे रङ्ग कर इसको चलनीमें रख कर भंगीको दे देना, साथ ही उस लड़केके वस्त्र जो कौवा बैठनेके समय धारण किये हुआ था उन सबको भी भंगीको देने चाहियें (५) उक्त उपाय तत्काल होने चाहियें; यदि कारणवश तत्काल न हो सकें तो एक दो दिन बादमें भी सही किन्तु नं० ४ की विधि तत्क्षण न होने पर बुध या शनिवारमें होनी चाहिये। उक्त विधि चारोंमेंसे एक-एक ही पर्याप्त है किन्तु मैंने चारों ही कराई थीं। मैंने इसका अनुभव केवल एक बार ही किया है। जिन सज्जनोंने बताई वे सभी अपनी-अपनी अनुभूत कहते थे।

१९४१ ई० एक स्त्रीके जानु (घुटने) पर दुअन्नी (पहिली चांदीकी दुअन्नी) के समान वृत्ताकार नीलवर्णका निशान हुआ, आठ दिन बाद रक्तवर्णका हो गया ५-७ दिनमें अदृश्य हो गया। इस घटना के लगभग २० दिन बाद उस स्त्रीका लड़का मर गया। इस प्रकारके चिन्ह होने पर घरमें अथवा रिश्तेदारीमें मृत्युसूचक होते हैं। यह मेरा २०-२५ बारका अनुभव है। एक वृद्धा स्त्री ने मुझसे कहा था कि ऐसे चिन्ह भोजन बनाते समय या भोजन करते समय चिन्हवान् मनुष्य प्रथम बार देखे तो मृत्युसूचक और स्नान करते समय देखे तो रोग-सूचक होते हैं। किन्तु एक-दो बार इसके विपरीत भी पाया अर्थात् मृत्युसूचक भी पाया पर दूरकी रिश्तेदारीमें। अब यह लेख अधिक बढ़ गया है। अतः यहीं समाप्त करता हूं, विशेष फिर लिखूँगा।

———

सम्वत् २००४ का स्वागत

[लेखकः— साहित्य-रत्न पं० गोवर्द्धनदास मेहता]

वह शस्य श्यामला भारत-भूमि, जो सदैव अपनी उत्पादन वस्तुओंसे विश्वके लाखों-करोड़ों प्राणियों का उदर-पोषण करती रही हो, आज दाने-दाने के लिए तरस रही हो, यह कैसी विडम्बना है! जिस प्राचीन भारतने ढाकाकी मलमल दूसरे देशोंको पहिनाई और जिसके कारीगरोंकी कुशलता पर दुनिया आश्चर्यमें डूब चुकी हो, उसी देशके निवासियोंको आज तन ढांकनेके लिए चन्द गज मोटा वस्त्र भी नसीब न होता हो, यह कैसी अजीब बात है! विश्वको संस्कृति एवं सभ्यताका पाठ पढ़ाने वाला यह गौरवशाली राष्ट्र दरिद्रता, अशिक्षा और गरीबी के चक्करमें बुरी तरह पिस कर जब ऐसे शरीरका ढांचा मात्र रह गया हो, जिसमेंसे आत्मा निकल चुका हो, तब किस स्वाभिमानी भारतीयके नेत्रोंसे अश्रुओंकी धार न बहने लगेगी! स्वार्थान्ध धार्मिक गुण्डे जब हमारी मां-बहिनोंको विधर्मी बना रहे हों, जब मानव भाई-भाईके खूनका प्यासा बन बैठा हो, मानवताकी जगह दानवताने ले ली हो, शान्ति और व्यवस्थाके नाम पर मानव स्वाधीनताका अपहरण किया जाता हो, तृतीय महायुद्धकी संभावना परमाणु-बमके घेरेमें घूम रही हो, उस समय किस मानवके हृदय में उल्लास एवं आनन्दका उदय होगा!

हे नव-वर्ष ! किन उपकरणोंसे हम तुम्हारा स्वागत करें ? गत वर्ष हमको नोआखली और बिहारके दुखद काण्डोंको देखने पर मजबूर होना पड़ा था, गत वर्ष हमने नाजी नेताओंको फांसीके तख्तों पर लटकते हुए देखा था, गत वर्ष हमने इण्डोनेशिया और हिन्दचीनमें डच और फ्रांसीसी साम्राज्योंके साम्राज्यवादी जुल्मोंका अवलोकन किया था, गत वर्ष हमने स्मट्सशाहीके रंग-भेदके बर्बर नमूनोंको आंका था — नव वर्ष ! बताओ, आगामी ३६५ दिनोंमें तुम हमें क्या दिखाओगे ?

यद्यपि हमारे दिलका दीपक बुझ चुका है, अरमान सो चुके हैं, इरादे मिट्टीमें मिलते हुए नजर आ रहे हैं, लेकिन हम निराश नहीं हुए हैं। सत्य पर, अहिंसा पर, नैतिकता पर, विश्व-स्वाधीनता, शान्ति एवं न्याय पर हमारा अटल विश्वास है और इसी आशा और विश्वासके साथ हम तुम्हारा स्वागत करते हैं कि जिन जिम्मेदारियोंको गत वर्षने हमारे कन्धों पर डाला है उन्हें हम खूबीके साथ निभा सकें।

स्वराज्य अब बहसका प्रश्न नहीं रह गया है। यह एक निश्चित तथ्य हैं, जिसे सारी दुनिया स्वीकार कर चुकी है। २ सितम्बर, जिस दिन भारतमें गैर-जिम्मेदार कठपुतली शासनका खात्मा हुआ और देशमें प्रथम बार अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिके नेता पं० जवाहर-लाल नेहरूके नेतृत्वमें राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना हुई, ९ दिसम्बर, जिस दिन भारतके भाग्यका निर्णय करनेके लिए विधान निर्मात्री परिषद-की बैठक डा० सच्चिदानन्द सिन्हाकी अध्यक्षतामें हुई और २० जनवरी, जिस दिन श्री एटली द्वारा कामन-सभामें भारतके हाथोंमें जून, ४८ तक पूर्ण शक्ति हस्तांतरित करनेकी घोषणा हुई—ये तीन तारीखें गत वर्षकी काली एवं भयावनी अंधियारीमें प्रकाश–किरण देने वाली हैं और भारतके इतिहासमें अपना इनका एक विशेष स्थान और महत्व रहेगा।

संवत २००४ में हमें तैयारी करनी है, संगठन करना है, दिलके मैलोंको धो डालना है, घृणाके स्थान पर प्रेमकी पूजा करनी है, साम्प्रदायिकताको दफनाकर राष्ट्रवाद और उससे भी ऊंचे उठकर अंतर्राष्ट्रीयतावादके दृष्टिकोणको विकसित करना है, देशके टुकड़े करने वालोंको समझाना है कि भाइयो ! चाहे आपसमें लड़लो, लेकिन मिलजुल कर रहो । कवि-सम्राट मैथिलीशरण गुप्तके शब्दोंमें—

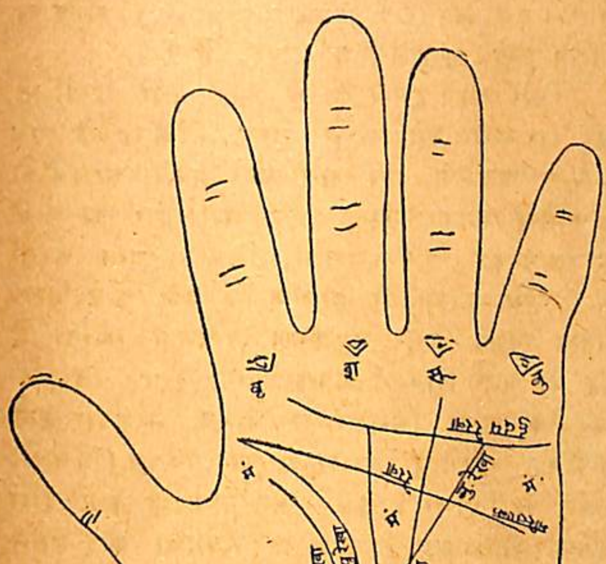
हिन्दू हो या मुसलमान तुम
मानव दानवता न धरो,
सबके घर हैं बहन–बेटियां,
पशु--बलसे उनको न हरो ।
नहीं किसीसे डरते हो तो
तुम अपने से आप डरो,
लड़ो प्यार से भाई–भाई,
मां का बंटवारा न करो ।

श्री एटलीकी घोषणामें त्रुटियां हैं और उनसे लाभ उठाकर देशके प्रतिगामी तत्वोंको शक्ति राष्ट्रवादी तत्वोंके हाथमें आते हुए देखकर सिर उठाने का मौका मिलेगा हमें संवत २००४के अन्दर अनवरत प्रयत्न करके राष्ट्रको इतना सुदृढ़ बना लेना है कि शक्ति हस्तांतरित होते समय शान्ति बनी रही और गृह-युद्ध या अन्य प्रकारकी ज्वाला हमें झुलसने को आग न उगलने लगे। आग लग सकती है, जैसा कि शासन परिवर्तनके समय हुआ ही करता है, लेकिन हम इतने सतर्क रहें कि उसे वहीं बुझादें। काम मामूली नहीं है । संवत् २००५ की परीक्षामें बैठने के लिए संवत् २००४ में हमें ऐसी ठोस तैयारी करनी है कि हमें परीक्षामे उत्तीर्ण होने का पूरा भरोसा हो जाय ।

———

हस्त-रेखा सामुद्रिक शास्त्र

[ले०—श्री० पण्डित जयचन्द्र जी व्यास, ज्योषिती]



यह संशय से परे है कि "लेखनी" तलवार से कई गुना श्रेष्ठ है। किन्तु ये दोनों ही उस समय बेकार हैं जब कि इन दोनों की थामन वाली किसी विशेष शक्ति का अभाव हो। वह शक्ति क्या है? यह बतलाने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं।

इस से यह सिद्ध हो जाता है कि बिना उस शक्ति, हस्त के मनुष्य ही क्या अपितु सर्व प्राणी-वर्गही अधूरा है। जैसे सर्व प्रथम हम किसी स्वजन या मित्रसे मिलते हैं तो साथही उसे आलिंगन करने या हाथ मिलाने (Shake hand) को आगे बढ़ाते हैं और ऐसा करने से ही शक्ति प्राप्त होती है। समुद्र पार रहने वाले स्वजनो व अन्य मित्रोंसे भी हम अपने मानसके भाव, अपने विचार लेखनी द्वारा हाथोंसे ही करते हैं। संग्राम में शत्रुओं को भी हाथ दिखाने का काम हाथ ही करते हैं।

बड़े-बड़े चहल-पहल वाले नगरों में जहां पैदलों, मोटरों, तथा ट्रामगाडियों की धूम रहती है, वहां पर भी सामयिक अशुभ घटनाओं से बचाने वाले एक ही (Policeman) का हाथ होता है जो सहस्त्रों मनुष्यों और (Machinery) पर शासन (Control) करता है। कहीं-कहीं तो पुलिसमैंनकी भी आवश्यकता नहीं रहती है। केवल हाथ का चित्र ही (Danger Signal Board) अंकित का देना पर्याप्त होता है। जो पथिकों और गाडी वालों के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य करता है।

यदि हम दूसरी ओर ध्यान देवें तो अवगत होना चाहिये कि यह सब हाथ हीकी करामात है जिनके द्वारा हमें आदि और आजके कवियों, साहित्यज्ञों, कलाकारों, विज्ञानवेत्ताओं, और पुरातत्व-वेत्ताओं आदिकी कृतियों और रचनाओंको देखने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। यदि इन हाथोंका अभाव या असमर्थतात्व होता तो उनके समूचे मस्तिष्कके विचार उनके ही साथ सदाके लिए कूच कर जाते।

वैद्य भी हस्त नाड़ी देखनेसे ही रोग निदान करनेमें सिद्ध हस्त हुए हैं और होते हैं, ये किसी से छिपा नहीं है। विवाहकी क्रिया भी तब तक पूर्ण रूपेण समाप्त नहीं होती जबतक वर-वधू अपने हाथोंका मिलन एक दूसरेसे पूर्णतया नहीं करलेते। पूर्ण मिलन होने पर ही हस्तकी विद्युत शक्तिका संचार होता है और वह एक दूसरेके हृदयमें प्रवेश करता है। ऐसा होने परही दोनोंका जीवन सफल

होता है। विवाह—शादीके महोत्सव पर वर और वधू दोनों अपने हाथोंको मिलाते हैं। यह प्रथा सब धर्मों और मजहबोंमें प्रचलित है।

हस्तकी पांचों ही अंगुलियां मानव शरीरके किसी खास अंग प्रत्यंगसे घनिष्ठ सम्बन्ध रखती हैं जैसे अनामिका (Ring- Finger) का सीधा सम्बन्ध हृदयसे है (Heart Organ)। इसी प्रकार मध्यमाका भी (Middle Finger) मेरु दण्डसे (Spinal Card) और तर्जनी (Index Finger) का सीधा सम्बन्ध (Liver-organ)से है इत्यादि। अनामिका का हृदय से सम्बन्ध होने के कारण विज्ञजन अपने प्रेमी वा प्रेमिका की अंगुलीय को (अंगूठी को) इसी अंगुली में पहनते हैं। इसके अतिरिक्त ज्योतिः शास्त्र और आयुर्वेद शास्त्र भी धातु और रत्नों का इन अंगुलियों द्वारा जो लाभ और हानियों के सम्बन्ध में विवेचन करते हैं, बड़े ही महत्व रखते हैं। हृदय का स्वामी सूर्य है। क्योंकि हृदय की स्थति शरीर के केन्द्र में और उधर सूर्य की स्थिति भी सारे मण्डल के मध्य में है। इधर सुवर्ण की धातु का अधिपति सूर्य है और उधर अनामिका की अंगुली सूर्य की है। अतः आत्मा और हृदय को बलवान रखना ही आत्मा को बलवान बनाता है। इसलिये जिनका हृदय दुर्बल हो उन्हें भी चाहिये कि उसको प्रबल बनाने के लिए सोने की अगूठी का प्रयोग विशेष अंगुली (Ring Finger) में किया जावे तो सूर्यकी (Ultra Voilet Rays) इस धातुके द्वारा विशेष लाभ पहुँच सकता है, तिस पर भी हीरेका नगीना उसपर जड़ा हो तो बहुत ही अच्छा हो। इसी प्रकार ये आदित्य आदि अलग-अलग ग्रह, अलग अलग अपने धातुओं और रत्नोंका उपयोग अपनी-अपनी अंगुलियोंमें करनेसे व्यक्ति-विशेषको लाभ पहुच सकते हैं। किन्तु इन सबका सदुपयोग होना चाहिये।

स्पर्शकी इन्द्रिय (Tactiile Sense) का स्थान भी हाथकी अंगुलियोंके पोरों (Finger tips) में विद्यमान हैं। यों तो उपरोक्त शक्ति शरीरको सारी त्वचा पर प्रभाव डालती है, पर वैज्ञानिक दृष्टिसे देखा जाय तो स्पर्श इन्द्रियका स्थान विशेषतः अंगुलियोंके पोरही हैं। इनके द्वारा स्पर्शका जितना सुन्दर ज्ञान होता है वैसा शरीरकी त्वचासे नहीं होता। इस लिए (obrervation power) शक्तिका विशेष केन्द्र अंगुलियोंके पोरही हैं।

जिस समय हमारे देशमें सती—प्रथा प्रचलित थी उस समय स्त्री अपने मृतक पतिके शवके साथ जीवित जलनेके पूर्व सती-स्त्री अपने करतलोंको कुंकुमोंसे रंगकर गृह-द्वार या नगर-द्वार पर हाथों की छाप कर फिर श्मशान भूमिको प्रस्थान करती थी। ऐसा करना भी हाथोंके विषयमें कोई विशेष महत्व रखता था। आजकल देखनेमें आता है कि बड़े बड़े शिल्प विशेषज्ञ (engineers) विशाल-भवनोंके ऊपर किसी खास धातुके नोकदार कांटे इसलिए लगाते हैं जिससे आकाश विद्युत (बिजली) स्यात् कहीं गिर जाये तो उन नोंकदार कांटों द्वारा उसकी शक्ति नष्ट हो जाय तो भवनको कोई हानि न हो। इसी प्रकार सर्व शक्तिमान् ईश्वरने हमारे शरीर रूपी भवनमें अंगुलियोंको और विशेषकर हस्तकी नोकदार अंगुलियोंको कांटेके तुल्य आकार वाली बनाई है। जिससे शरीरकी उष्णता और विद्युत शक्तिका अधिक वेग होने पर विपरीत प्रभाव न पड़े। यदि इस बातका अनुभव करना हो तो अंधेरेमें अपनी अंगुलीको किसी रेशमी या साधारण वस्त्र पर रगड़नेसे चिनगारियों (Electrie sparkles) का अनुभव होगा।

आधुनिक समयमें तो कई विज्ञानवेत्ता (Grophology) के द्वारा मनुष्यकी प्रकृति, स्वभाव, आचरण आदिके विषयमें बहुत कुछ कह सकते हैं। जैसे किसी व्यक्तिके लिखते समय लिखनेकी पंक्तियोंकी ढाल (Slope) अनायास ही ऊपर जाता हो तो उसके मानसिक विचार हमेशा दुनिया की भलाईकी तरफ लगे हुए होते हैं। और वह स्वयं महत्वाकांक्षी होता है। किन्तु इसके विपरीत

लिखावट होने पर विपरीत अर्थ होता है। लिखावट की पंक्तियां न ऊपर न नीचेकी ओर झुकी हुई हो तो वह अपना जीवन सन्तोष पूर्ण व्यतीत करता है। न तो उसमें इच्छाओंकी मारही है और न ओजस्विता (चंचलता) होती है। इस प्रकार लेखके द्वारा मनुष्यके मानसिक विचारों और भावोंके सम्बन्धमें पर्याप्त प्रकाश या जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

इसी प्रकार अंगुलियों (Type writing) द्वारा किये हुए अवतरणसे भी व्यक्तिके आचार विचार पर बहुत कुछ लिख सकते हैं। जैसे टाइप करते समय कोई व्यक्ति "विराम" अर्धविराम" आदिको बार बार (Puntnation) लगाना भूल जाये तो उस व्यक्तिके विषयमें यहही स्थिर बैठता है कि वह व्यक्ति लापरवाह है और जीवनमें उस को अपने कर्त्तव्यका कोई ध्यान नहीं है। ऐसे बहुतसे विषय हैं- जिनके द्वारा मनुष्यके आचार-विचार पर प्रकाश डाला जा सकता है। इन सारी बातोंका आधार हस्तकी (Physical features) है।

हस्तकी अंगुलियोंके नख (Nails) की बनावट, रूप और रंगसे ही मनुष्यके शरीरमें वात, पित्त, कफ और उससे होने वाले विकार व रोगोंका निदान बड़ी सरलतासे किया जा सकता है। (Police-Deparment) में तो (Finger Print) का एक महकमा होता है जिससे अपराधियोंकी जांच अंगूठोंकी सहायतासे की जाती है। जो किसीसे छिपी नहीं है।

ये तो सदा व्यवहारमें आने वाली बातें हैं। आज हम यहां यह प्रयास करेंगे कि वह कौनसी वस्तु या छिपी हुई शक्ति है जो इन हाथोंको पथ-प्रदर्शनकी शक्ति दिया करती है, या आज्ञा दिया करती है। और वह कौनसी महान् शक्ति है जो इन पर अपना प्रभुत्व रखती है। वह शक्ति है "मस्तिष्क" जिसने हाथको पथ-पदर्शन करनेकी बागडोर दे रखी है। यह विज्ञान वेत्ताओं और डाक्टरों द्वारा सिद्ध हो चुका है कि उनका सीधा घनिष्ट सम्बन्ध मस्तिष्कसे ही है। यह सम्बन्ध स्नायु धाराओंसे सटा हुआ है।

जिस पृथ्वी पर हम रहते हैं उस पृथ्वी सम्बन्ध आकाशमें स्थित समस्त ग्रहों (Solar system) से हैं। जैसे पृथ्वीकी वार्षिक गति (evolution) उसकी धुरीके द्वारा दैनिक गति (Rotation) से पृथ्वी पर स्थित चराचर प्राणियों पर क्या क्या प्रभाव पड़ता है यह किसीसे भी छिपा नहीं है। इसी प्रकार (Solar system) सारे मण्डलमें स्थित समस्त ग्रहोंका प्रभाव मध्यमा कर्षणशक्ति (Law of Gravitation) के नियमानुसार और अपनी अपनी गति(movement) के अनुसार एक-दूसरों पर पड़ता है। उदाहरणार्थ चन्द्रमाको ही लीजिये। जिस समय चन्द्रमा पूर्ण कलाओंमें होता है या यों कहिये कि पूर्णमा और अमावस्याके दिनोंमें चन्द्रमा समुद्रके पानीको अपनी ओर अधिक खींचता है। तब दीर्घ ज्वार कहलाता है। और अष्टमीके आस पासके समय आता है उस समय पानी उतारमें आ जाता है। और भाटेके नामसे पुकारा जाता है। (Spring & Neaptides) इस प्रकारकी क्रियाका प्रभाव पृथ्वी पर स्थित समुद्रों पर ही नहीं पड़ता अपितु पृथ्वी परके चरा-चर प्राणियों पर भी पड़ता है। अधिकतर देखा जाता है कि स्त्रियों का मासिक धर्म समुद्रके पानी के चढावके दिनोंमें होता है। पेड़, नख और प्राणियोंके बाल भी इन्हीं दिनोंमें अधिक बढते हैं। इसी प्रकार सूर्य और पृथ्वीके द्वारा ऋतुओं (Seasons) का होना और प्राणी मात्रको इसके द्वारा गर्मी-सर्दी और वर्षाका अनुभव होना ये सब प्रत्यक्ष रूपमें देखने में आता है। इसी प्रकार और २ ग्रह भी अपनी गति (Motion)के अनुसार इसी पृथ्वी पर प्रभाव डाले बिना नहीं रहते। और मनुष्य तो इनके प्रभावसे वंचित रहही कैसे सकता

है। तात्पर्य यह है कि पृथ्वीकी चालके प्रतीक्षण के गर्भमें एक महान भविष्य छिपा रहता है। और वह प्रत्येक प्राणीका भविष्य कहलाता है।

यह तो क्या, किन्तु प्रत्येक देश तथा राष्ट्रका भविष्य भी इसी पर अवलंबित है। इसी लिए कहना पड़ता है कि नवजात बच्चेके लिये जन्म समय आकाश-मण्डल में ग्रहोंकी विभिन्न स्थिति और गतिके अनुसार उसके शरीरकी रचना, प्रकृति, रंग, रूप आदि होती हैं। उस समय जो-जो ग्रह बलवान और समीपकी राशियां होती हैं और उन का स्वभाव जैसा होता है वैसेही उसकी प्रकृतिके अनुसार उसमें गुण होते हैं।

जैसे जन्म समयमें राशिवाला लग्न (समय) आवे और मंगल उच्च या उच्चाभिलाषी हो और अन्य ग्रहों का सम्बन्ध और दृष्टि भी अच्छी हो साथमें स्थान बल और कारक बल भी उत्तम हो तो उस व्यक्तिमें मंगल ग्रहके अनुकूल सब गुण और तत्व जैसे लाल रंगका प्रभाव होना, पराक्रमी, क्रोधी, ओजस्वी पुरुष सशंक, मज्जा वाला, तर्क लवण का इच्छुक, उदार चित्त, स्वर्ण धातुको पसंद करने वाला, शत्रु पर विजय करने वाला, भूपति और राजाके समान प्रतापशाली होता है। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रहके भिन्न-भिन्न अपनी कालात्मा, रंग, प्रकाश, वर्ण, धातु, माणिक्य, दिशा, काम, जाति, लक्षण और स्वरूप आदि पर विशेष प्रभाव पड़ता है। मनुष्यके शरीरमें जैसा ग्रहोंका संयोग होता है वैसा ही प्रभाव मनुष्यके शरीर और आत्मा पर पड़ता है।

मनुष्यके शरीरमें मुख्य स्थान मस्तिष्क प्रदेशका है। और यही ज्ञानके प्रकाशका केन्द्र है। मस्तिष्क का घनिष्ठ सम्बन्ध हाथसे है। कारण स्पष्ट है— आज्ञा देने वाला मस्तिष्क और उसकी आज्ञाको कार्य रूपमें परिणत करने वाला मुख्य हाथ ही है। जैसा कि ऊपर वर्णन कर चुके हैं। इसीलिए मस्तिष्क से धारा प्रवाह विद्युत संचार सीधा हस्तकी अंगुलियों की ओर होता है। और यही कारण है कि सम-केन्द्रसे विचार प्रवाह (Sensitive Nerve) का सम्बन्ध हाथके साथ होने से जन्म समयके ग्रहों की स्थितिके अनुसार करतलमें रेखामें और ग्रहों के स्थानका विधान रचा गया है।

देखनेमें आया है कि बहुत साधारण अन्तरकी गणनासे मनुष्योंके नाक, कान, आखें और मुख इत्यादिकी बनावट एक ही स्थान पर होती है। और एक ओर इन सारे अवयवोंका होना बहुत ही आवश्यक है। इसी प्रकार करतलमें (Palm) अंकित रेखाओंका साधारण अन्तरके साथ देखने में आता है। जैसे प्राण धारक रेखा (Line of Vitality) जिसको आयु रेखा भी कहते हैं— इस रेखाका उद्गम स्थान अंगुष्ठ और तर्जनीके मध्य वाले भागमें से होकर अंगुष्ठ प्रदेशको देखी हुई मणि बंधकी ओर जाती है। इसी प्रकार अन्य बृहद् रेखाओंके स्थान भी तर्जनी और अंगुष्ठके मध्यसे ही होता है। शीर्ष नामक रेखा (Line of Cerebral) तो प्रथम रेखाके पाससे निकलकर करतलके मध्यसे होती हुई दूसरे छोरकी ओर जाती है। तीसरी अन्तःकरण रेखा (Cardi ec line) है इस रेखाका जन्मस्थान भी लगभग वही होता है, किन्तु फिर भी इस रेखाका कुछ अंशमें उस स्थान से प्रारम्भ होना, निश्चित यत्न ही है। इनका उद्गम स्थान किसी भी अंगुलीके नीचेसे ही हो सकता है। परन्तु मनुष्यके करतलमें कम से कम इन तीन उपरोक्त रेखाओंका होना बहुत ही आवश्यक है। और प्रायः ऐसा ही होता है।

इस प्रकार रेखाओंका निर्माण हो गया किन्तु अब प्रश्न यह उठता है कि ये रेखायें क्या बतलाती है? इन रेखाओंके जानने पर मनुष्य अपने लिए क्या कर सकता है? जब यह ईश्वरीय देन है। वास्तवमें ये प्रश्न बड़े महत्व के हैं। और इन पर प्रकाश डालना बहुत ही आवश्यक है।

जिस प्रकार एक Batanist किसी वृक्ष या लता की पत्ती और उस पर अंकित धारियें Nerve system देखकर उस वृक्ष या लताकी रूप रेखा देख कर उसके विषयमें सारी बातोंका वर्णन कर सकता है कि यह अमुक कटिबन्ध zones में उत्पन्न होने वाला वृक्ष है। अमुक प्रकारकी जलवायु इसके लिए अनुकूल है या प्रतिकूल। यह अमुक ऋतुमें फलता है फूलता है आदि सारी बातें कह सकता है। उसी प्रकार मनुष्यके करतल पर अङ्कित इन "हस्त-रेखा" को देखकर एक हस्तरेखा-विशारद उसके शारीरिक और मानसिक स्थिति और विचारोंको आधार भूत मान कर इस जीवन संग्राममें किस प्रकारसे सफलता पा सकेगा—बता सकता है। साथमें यह भी बताया जा सकता है कि अमुक उपाय या नियमसे कार्य करने पर अमुक कार्य वा रोगमें अच्छी सफलता पा सकता है।

संसार Universal के प्रत्येक पदार्थमें दो शक्तियां विद्यमान रहती हैं। उनके नाम कारक और मारक हैं Positive and Negative या Active and Passive रख कर जी सकते हैं। परमात्माने इस भौतिक संसारकी रचना बड़ी ही विचित्र की है। देखिये उसने विष बनाया तो साथ साथमें अमृत भी बनाया है। प्रकाशके साथ अंधेरा भी बनाया। उन्नतिके साथ अवनति भी बनाई। कहनेका तात्पर्य यह है कि सबका योग (जोड़ा) बनाया है। किन्तु इन सबका सदुपयोग किया जाय तो अच्छा फल मिलता है अन्यथा नहीं। जिस प्रकार विष अमृत और प्रकाश-अन्धेरा आदि एक ही विशेष वस्तु पर आधार है, परन्तु उनका उपयोग और साधन, उपयुक्त समय पर करनेसे सुफल प्राप्त होता है अन्यथा नहीं। हमारे पूर्वज-मनुष्योंकी आयु १२० वर्ष की मानी है। और ज्योतिष शास्त्रने भी दशाकी पद्धतिमें ऐसा ही गणित किया है। इस समय इस पूर्ण आयुका उपयोग बहुत ही थोड़े मनुष्य भोगते हैं। कारण स्पष्ट है कि वे ब्रह्मचर्यसे च्युत हो जाते हैं। जिसका फल यह होता है कि मनुष्य पूर्ण आयु भोगने नहीं पाते। पहले ही कूंच कर जाते हैं। यह है साधनकी न्यूनता। जैसे देखिये—दीपकमें तैल और बत्ती विद्यमान होते हुए भी दीपकको बुझे हुए देखते हैं, कारण यह होता है कि वायुका झोंका आया और दीपकको उससे बचने का साधन न मिलने पर विचारेको वह समय देखना पड़ा।

यही दशा मानव जातिकी होती है। बहुतसे विद्यार्थी इस कारणसे अपने जीवनमें असफल होते हैं कि उनकी रुचिके विपरीत उनके माता-पिता बचपनसे ही शिक्षा देना प्रारम्भ कर देते हैं। यदि बच्चेके हाथको अधिक अध्ययन कर और उसकी रुचि जानकर शिक्षा दी जाय तो वह बच्चा संसार में नाम कर सकता है। इसी प्रकार हाथमें दोनों प्रकारके साधन (शक्तियां) होती हैं। हस्त विशेषज्ञ व्यक्ति-विशेषकी रेखायें देखकर पथ-भ्रष्ट व्यक्तिको सुपथ पर लाने के लिये साधन बता सकता है। जैसे एक डाक्टर किसी बीमारीके लिए औषधि बताने पर रोगीको नीरोग बना सकता है। औषधि उस समय काम कर सकती है जबकि रोगका निदान पूर्ण रूपसे हो चुका हो। औषधि भी उस रोगके अनुकूल हो। यही दशा हस्त रेखाओंके विषयमें है। यदि रेखायें समझमें भली भांति आ गईं तो उनका फल पूरा पड़ेगा, अन्यथा साराका सारा विपरीत वा व्यर्थ ही जायेगा।

जिस प्रकार बालकके जन्म समयके ग्रह उसके जीवन भरकी प्राकृत रूप रेखा खींच देते हैं उसी प्रकार उसके बांये हाथमें अंकित रेखायें उसके जीवनकी मुख्य-मुख्य बातोंके विषयमें प्रकाश डाल सकती हैं। यह रेखायें अपने पूर्व कर्मोंसे प्राप्त की हैं। जिस प्रकार ग्रह एकही स्थान पर स्थिर न हो कर चलाय मान रहते हैं उसी प्रकार करतलकी वृहद् रेखाओंको छोड़कर अन्य सारी क्षुद्र रेखायेंव चिन्ह ग्रहोंकी गति और परस्पर सम्बन्धके अनुसार सूक्ष्म परिवर्तन में परिणत होती रहती हैं। किन्तु बालकका आधार जन्म समयकी रेखायें व जन्म कुण्डलीमें अवस्थित ग्रह ही होते हैं।

जिस प्रकार ग्रह मुख्य माने गये हैं, उसी प्रकार करतलमें ७ रेखा प्रधान मानी गई है। धन और विद्या रेखाको sun line से पुकारते हैं। शनि रेखा को भाग्य या कर्म रेखा (Fate line) और स्वास्थ्य व्यापार, विज्ञान रेखा को (mercury or Health line) कह सकते हैं। और पराक्रम रेखाको (line of mars) कह सकते हैं। अब रही तीन शेष रेखायें — प्रथम प्राण धारण रेखा। (Line of vitality or life) जो मनुष्यकी आयु, स्वास्थ्य, रोग, पुरुषत्व, और शक्तिके विषयमें बताती है। इस रेखाका अधिक सम्बन्ध शुक्र ग्रहसे है। कारण कि शुक्रका वीर्य और शक्ति पर अधिक प्रभाव पड़ता है। बिना वीर्य शक्तिके मनुष्य कहीं कामका नहीं रहता।

दूसरे नम्बरकी रेखा शीर्ष रेखा (cerebral line or head line) है, यह मनकी दशा स्थिरता बताती है। मन चन्द्रमा है अतः इसको मस्तिष्क रेखा कहते हैं। इस रेखाके द्वारा मनुष्यके मानसिक विचार, तर्क शक्ति और रहस्यवाद आदि बहुतसी बातें बताई जाती हैं। यह रेखा चन्द्रमाकी ओर अधिक रहती है और विचार शक्ति पर अधिपत्य रखती है।

अब रही तीसरी बात — जो रेखा तर्जनी मूलके आसपाससे प्रारम्भ होती है। जहां वृहस्पतिका स्थान है। इसलिए इसको वृहस्पतिकी रेखा कह दें तो भी कोई आपत्ति नहीं होगी। इस रेखाका नामकरण अन्तःकरण रेखा (Cardiac line) है। यह मनुष्यों के हृदय गत भाव, प्रेम, खानपान, ऐश, रंग, राग धार्मिक प्रवृत्ति, सामाजिक और राजनीतिक जीवनके विषयमें पर्याप्त कह सकती हैं। इस प्रकार ७ ग्रह और सात ही रेखायें देखनेमें आती हैं। इनसे भिन्न कुछ अन्यग्रह (Planet) भी हैं, किन्तु उसके सम्बन्धमें हस्त विज्ञानके विषयमें अभी अन्वेषण हो रहा है। योंतो तीन चार अन्य ऐसी रेखायें हैं जिसका निर्माण अन्य ग्रहोंके प्रभावसे होता ही है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ज्योतिष शास्त्र और हस्त सामुद्रिकका घनिष्ट (Co-relation) सम्बन्ध है।

अनुभूत योग

[ले०—श्री प्रोफेसर जे० पी० सिंह L. M. S. H.]

यह योग हर प्रकारके घावको साफ करके सुखा देता है- जो फोड़ा आपरेशन द्वारा अच्छा न हो, जिसका आपरेशन डाक्टर भी न कर सकें ऐसे घावको भी यह प्रायः शर्तिया दूर कर देता है। हमारे यहां एक दो सालके बच्चेको फुस्फुसके ऊपर यानी छातीमें गलेके समीप फोड़ा हुआ, योग्य डाक्टरों और बड़े सिविल सर्जन तकको दिखाया गया; उन्होंने यह कहकर जवाब दे दिया कि इसका आपरेशन हृदयके ऊपर होनेसे नहीं हो सकता है। घाव इतना भयङ्कर हो गया था कि देखा नहीं जाता था। रुई पर बच्चे को लिटा कर रुई ही द्वारा अल्प मात्रा में दुग्ध उसके पेट में पहुँचाया जाता था। फोड़ेका एक सिरा छाती पर था और दूसरा पीठ पर। दूध आदि कुछ भी पेटमें नहीं जाता था। मनुष्यकी ३ अंगुलियां घावमें इस सिरे पर दिखाई देती थी। घरवालोंने भी इस बच्चेके लिए सब प्रकार का प्रयत्न करके निराश होकर आसरा छोड़ दिया था। ऐसा मरणासन्न रोगी जिस औषधि से अच्छा होकर आज तक जीवित है उसको आज हम धर्मार्थ जनताके कल्याणके लिये प्रकाशित करते हैं; आशा है कि आप लोग इससे लाभ उठावेंगे।

नुस्खा।

(१) स्यूकस मेलिया आजाडीरेच्य फोलियो १ औंस
(SuccusMelia Azadirechta Folio)
(२) स्यूकस आईरेलिङ्ग इक्लीप्टा फोलियो १ औंस
(Succus Iraling Eclipta Folio)
(३) स्यूकस डोलिशश लबलब फोलियो १ औंस
(Succus Dolichus Lablab Folio)
(४) स्यूकस एकेशिया फोलियो १॥ औंस
(Succus Acacia Folio)
(५) स्यूकस लासोवियां आल्बा फोलियो १॥ औंस
(Succus Lawsonia alba Folio)
(६) ओलियम ब्रासीका काम्पेस्ट्रीस १६ औंस
(Oleum Brassica Compestris)
(७) ह्वाइट वाक्स २ औंस
(White wax ara Flava)

बनाने की तरकीब—पहले तेल में (ओलियम ब्रासिका कम्पेस्ट्री) नम्बर एकसे ६ तकके सभी दवाओंको मिश्रण कर पाकविधिसे तेलको सिद्ध कर ले, तब तेलको छान लेवे फिर उसमें नम्बर ७ की दवाको मिला कर घोटकर किसी बड़े मुंहकी शीशीमें रख लेवें।

सेवनविधि—पहिले घावको गुन-गुने पानीसे धोकर खूब सुखा ले, फिर एक सफेद कपड़ेकी पट्टी घावकी नापकी काटकर बनाले और उसपर मरहम लगाकर प्रातः सायं दोनों समय चिपका दे। इससे शुरुमें दूषित मांस व पीब गलकर बाहर निकल जाता है तथा अल्प कालके प्रयोगसे ही कैसे भी घावको बिना कष्टके पूर्ण कर देता है। इसके सेवनसे शीघ्र ही आश्चर्यजनक लाभ होता है और यह मरहम हर प्रकार के फुन्सी फोड़ा (कार्बङ्कल) पुराने व सड़े घाव और जख्मोंके लिये शर्तिया दवा है। यह बड़े कामकी चीज है और प्रत्येक गृहस्थों को इस औषधिको बनाकर अपने घरमें रखना उचित है।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र

सं० २००४ की ग्रहपरिषद्का विचार

संसारकी राजनैतिक आर्थिकादि परिस्थितिका विश्लेषण

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य, सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग']

[यह भविष्यफल ६ मास पूर्व (गत आश्विन मासमें) सं० २००४ के अपने 'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग'के लिए लिखा गया था । पाठकोंके हितार्थ उक्त पञ्चाङ्गसे यहां ज्योंका त्यों दिया जा रहा है। आजसे ठीक एक वर्ष पूर्व चैत्रमें गत वर्षके 'साहित्यांक' के इसी स्तम्भमें पृष्ठ १०३ पर स्पष्ट लिखा था कि—"......भारतकी मकर राशि है, इससे शनि सप्तम जा रहा है और राहु हर्शलके साथ पञ्चममें रहेगा, इन तीनों आर्य-अनार्य-प्रकृति प्रधान ग्रहोंका भारतकी राशि पर पारस्परिक दृष्टिसम्बन्ध होनेसे भारतकी आर्य-अनार्य जनता वा राष्ट्रिय-अराष्ट्रिय दलोंमें संघर्ष मतभेद वा द्वन्द युद्ध हो जाना भी सम्भव है। मीन से कर्क राशि तकके प्रान्तों और बड़े बड़े नगरोंमें उत्पात अशान्ति एवं आधिदैविक आधिभौतिक उपद्रव अधिक होंगे......"। अब यह बताने की आवश्यकता नहीं कि एक वर्ष पहले लिखे गये शनि राहु हर्शलके इस अनिष्ट योगने आते ही पहले इस वर्षमें कलकत्ता बंगाल बिहारमें और अब पंजाबमें साम्प्रदायिक संघर्ष या गृहयुद्धसे जन-धनका भीषण संहार किया है। भगवान् करे इस अशांतिके अकाण्ड ताण्डवका अब शीघ्र ही अन्त हो। परन्तु जब तक शनिदेव कर्क राशिमें रहकर मंगल राहु हर्शलके साथ चण्डाल-चौकड़ी सम्बन्ध करते रहेंगे तब तक हमें पूर्णरूपेण सुख शान्ति एवं पारस्परिक सद्भावनाकी सम्भावना कम हो है। सविस्तर विशेष विवेचन इस लेखमें नीचे मिलेगा। —सम्पादक]

सं० २००४ की ग्रहपरिषद् (आकाशी कौन्सिल) के दश अधिकारियोंमें से ६ अधिकार क्रूर तथा पापग्रहों और ४ अधिकार शुभग्रहोंको प्राप्त हुए हैं। इस वर्षके सर्वाधिकारी या सम्राट् ग्रहराज सूर्यदेव हुए हैं और प्रधानमन्त्रीका पद भी स्वयं इन्होंने ही सम्हाला है। साथ ही इस वर्षमें भी गुरुने अतिचारी होकर तीन राशियोंका स्पर्श किया है और गुरुके अतिचारकालमें शनि वक्री है। अधिक-श्रावणमें पञ्चग्रहयोग, कार्तिकमें दीपमाला पर शनि-मंगल-युद्ध आदि योगों और इस वर्षकी वर्षकुण्डली जगल्लग्न-कुण्डलीकी ग्रहस्थिति पर सम्यक्तया सूक्ष्म विचार करनेसे यह वर्ष भी संसारके लिए पूर्णशान्तिप्रद एवं सुखप्रद नहीं कहा जा सकता। संसार और भारतकी राजनीतिमें महान् परिवर्तन होगा। कई अकल्पित आश्चर्यजनक घटनाएं घटेंगी। विदेशोंमें अनेक राजकीय मतभेद उत्पन्न होंगे। दुर्भिक्ष, रोग, भूकम्प, जलप्रलय, अग्निकाण्ड, तूफानादिसे कई प्रान्त क्षतिग्रस्त होंगे। विश्वकी महाशक्तियोंके सामने अनेक नई-नई विषम समस्याएं उत्पन्न होंगी। मित्रराष्ट्रोंमें बाह्यरूपसे चाहे भले ही शान्ति सहयोग और सद्भाव दिखाई दें, पर आन्तरिक स्थिति राजनैतिक एवं व्यापारिक कारणों और विजित-देशोंकी व्यवस्थाके सम्बन्धमें खराब होकर मनोमालिन्य (मतभेद) बढ़ता जायेगा। इससे भावी महायुद्धका बीजारोपण हो जाना सम्भव है, पर इस वर्षमें विश्वयुद्ध प्रारम्भ नहीं होगा। मित्रराष्ट्रोंमें पारस्परिक साधारण संघर्ष हो जाना निश्चितसा है। विश्वमें निश्शस्त्रीकरणकी चर्चाके उत्तरोत्तर जोर पकड़नेके साथ ही साथ प्रतिद्वन्द्वी राष्ट्रोंमें आन्तरिक युद्धकी तय्यारियां भी प्रबल होती जायेंगी। परमाणु-शक्तिके नियन्त्रणमें क्रियात्मक सफलताकी आशा मन्द है। हां, इस शक्तिसे यन्त्र संचालनादिके परीक्षण व प्रयोग महत्वपूर्ण प्रमाणित होंगे।

भारतवर्ष

ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर उपर्युक्त सभी योग स्पष्ट रूपसे घोषित करते हैं कि यह नया वर्ष अपने साथ कई अप्रत्याशित अवांछनीय घटनाओंको लेकर आ रहा है। विश्वके रङ्गमञ्च पर अनेक नवीन दृश्य दिखाई देंगे। विशेषतः वर्षारम्भके समनन्तर ही भारतके राजनैतिक क्षेत्रमें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण परिवर्तनके संवाद सुननेमें आयेंगे। ब्रह्मदेश (बर्मा) भी इससे अछूता न रहेगा। इस वर्षमें साम्प्रदायिक वैमस्य विरोध भयंकर हो सकता है, साथ ही शान्ति और समझौतेके भी अथक प्रयत्न होंगे। अधिकमास श्रावणमें वर्षके सम्राट एवं प्रधानमन्त्री सूर्यका शनिसे योग हो रहा है, वहीं मंगल राहु भी एकत्र हैं और आगे पंचग्रह योग भी, अतः श्रावणके लगभग अतर्कित परिवर्तनोंके समाचार सुनाई देंगे। यहां तक कि राष्ट्रिय पक्षके लिए पदत्यागके अवसर उपस्थित होंगे, भले ही जन-सामान्य इनसे अनभिज्ञ रहे। फिर भी वर्ष वर्षेश कुण्डलियोंमें गुरुकी सुस्थितिवशात् यह निश्चितरूपमें कहा जा सकता है कि भारतका राष्ट्रियपक्ष सभी विषम-विघ्न बाधाओंको पार करके अपने लक्ष्यमें उत्तरोत्तर उन्नतिकी ओर अग्रसर होता जायेगा। वर्षके उत्तरार्धमें राष्ट्रिय नेताओंके द्वारा किये गये अथक प्रयत्नोंका परिणाम शुभावह होगा। इसी अवधिमें शासनविधानमें भी परिवर्तन होगा। सीमान्तकी समस्या भी समाधानकारक बनेगी और भारतके अन्तर्राष्ट्रिय सम्बन्ध अत्यन्त दृढ़ महत्त्वपूर्ण होंगे। हिंदुमहासभा भी अधिक लोकप्रिय बनेगी। इस वर्ष मुस्लिमलीगका प्रभाव प्रतिष्ठा अधिकांशमें नष्टप्राय सा हो जावेगा और उत्तरार्धसे पाकिस्तानी योजना भी लुप्तसी होती जावेगी।

सं० २००४ का वर्ष-लग्न और जगत्-लग्न—

सं० २००४ का वर्षलग्न तुला और जगल्लग्न मकर है। वर्ष लग्नसे राज्येश क्षीण-चन्द्रमा षष्ठ (शत्रु) स्थानमें सूर्यका सहयोगी होकर नेपच्यून से प्रतियोग कर रहा है और राज्यस्थानमें शनि, लग्नेश शुक्रका प्रतियोगी है, यह योग यद्यपि इस वर्ष भी भारतको पूर्ण रूपेण स्वतन्त्र नहीं होने देगा, तथापि भारतमें राजनैतिक और राष्ट्रिय प्रगति विशेषरूपसे होगी। कांग्रेसका जन्मलग्न स्वामी शनि है और वर्तमान राष्ट्रियसरकारके उपाध्यक्ष श्री पं० जवाहरलालजीका जन्मलग्न तथा राशि कर्क है। प्राचीन स्थूल गणनानुसार इस वर्षका जगल्लग्न धनुः आता है, इससे श्रीनेहरूजीकी जन्मराशि और लग्न दोनों ही अष्टम जाते हैं, जो विशेष अनिष्टफलके द्योतक हैं। किन्तु, नवीन सूक्ष्मगणनासे जगल्लग्न मकर आता है, इस लग्न से भारत और श्री नेहरूजीकी राशि पर महत्त्वपूर्ण विशेष योग बन रहा है। लग्नेश शनि सप्तममें और सप्तमेश चन्द्रमा लग्नमें गया है। लग्न सप्तम दोनों स्थान महत्त्व-मण्डित हैं। लग्नसे देशकी सर्व साधारण जनता, शासनतन्त्रको चलाने वाले कर्णधार, अधिकारियोंकी मनोवृत्ति बल तथा कार्यकुशलताका ज्ञान होता है और सप्तम भावसे अन्तर्राष्ट्रिय सम्बन्ध, दूसरे देशोंकी सहानुभूति, वैमनस्य, राजनैतिक सम्बन्धादिका विचार होता है। सप्तमस्थान और श्री नेहरूजीके जन्मलग्न राशि पर गुरुकी दृष्टि भी है, अतः इस प्रबल योगसे श्री नेहरूजी और भारतकी राष्ट्रियसरकारके सत्प्रयत्नों से यह वर्ष भारतकी राजनीतिमें ऐतिहासिक सिद्ध होगा। भारतीय जनता और विदेशोंकी पूर्ण सहानुभूति राष्ट्रिय सरकारके साथ रहेगी। विरोधी पक्षके अनार्यलोग राष्ट्रियसरकारकी प्रगतिमें आन्तरिक रूपसे असन्तुष्ट रह कर कई प्रकारके षड्यन्त्रोंकी ताकमें रहेंगे, परन्तु इसमें वे सफल न होंगे, बाह्यरूपमें प्रत्यक्षतः उन्हें राष्ट्रिय सरकारसे सहयोग करना पड़ेगा।

बृटिश सत्ताकारक शनि और प्रजासत्तात्मक चन्द्रमाका शत्रुराशिमें प्रतियोग होनेसे भारतकी राष्ट्रियसरकार एवं इंगलैण्डकी बृटिश-सरकारके

सामने इस वर्ष गुप्त शत्रुओं या विरोधी पक्षकी ओरसे पद-पद पर भयंकर बाधाएं उपस्थित की जावेंगी। वर्षके पूर्वार्धमें कुछ आशाप्रद स्थिति दिखाई देगी परन्तु अधिकश्रावणमें पंचग्रहयोग और आगे कार्तिकमें शनि मंगलकी युतिसे पारस्परिक संघर्ष होकर भारत और विश्वकी राजनीतिमें अवाञ्छनीय अप्रिय प्रसंग उपस्थित होंगे। इसी अवधिमें संसारके कई भागोंमें अग्निकाण्ड जलप्रलय भूकम्प रोग महामारी दुर्भिक्षादि आधिदैविक आधिभौतिक उपद्रव भी अधिक होंगे। भारतीय जनताका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पूर्ण रूपेण ठीक न रहेगा।

इस वर्ष भारतकी आर्थिक स्थिति आरम्भमें चिन्ताकारक रहकर अन्तमें कुछ समाधानकारक बनेगी। सरकारको आर्थिक कठिनाईका सामना करना पड़ेगा। जन-साधारणकी आर्थिकस्थिति सुधारनेके लिए विशेष व्यय होगा, इसके लिए सरकार कुछ नये टैक्स भी लगावेगी, पर उनका बोझ निर्धन जनता पर नहीं पड़ेगा। जगल्लग्नसे तृतीयेश गुरु लाभमें और लाभेश मंगल तृतीयमें होनेसे भारतीय आर्य जनताके बल पराक्रम संगठन शक्तिकी वृद्धि होगी। सेनानायक मंगलका गुरुसे स्थान सम्बन्ध और मित्रदृष्टि होनेसे सेनाका भारतीयकरण होगा और स्वतन्त्र-भारत-सेना या आजाद हिन्द फौजके मुक्त सैनिकोंको भारतीय सेनामें उचित स्थान मिलेगा। चतुर्थस्थान खेती बाड़ी पैदावार यातायात रेल तार पोस्टल सरविस और गृह-विभाग (होमडिपार्टमेण्ट) आदिका द्योतक है। वर्षलग्नसे चतुर्थ स्थानमें मित्रराशिका शुक्र और चतुर्थेश शनि दशमस्थानमें होनेसे इस वर्ष पहली फसल अच्छी होगी। खेती बाड़ी व भूमिके मामलोंमें महत्त्वपूर्ण सुधार होंगे। सिंचाईके लिए नई नहरें निकालनेकी योजना बनेगी। पुनर्निर्माण योजना कार्यान्वित होगी। भारतमें कई बड़े २ कारखाने खुलेंगे। यातायातके साधन सुविधाजनक बनेंगे। रेल तार डाक और गृह-विभागमें पर्याप्त उन्नति होगी। घूस (रिश्वत) खोरी और ब्लेकमारकेटको बन्द करनेके लिए सरकारकी ओरसे नये सफल प्रयत्न होंगे, परन्तु शनि मंगल बुधकी स्थिति इस वर्ष घूसखोरी ब्लेकमार्केटिंग और कण्ट्रोल या राशनिंगको समूल नष्ट नहीं होने देंगे। रिश्वत तथा चोर बाजार किसी सीमा तक बन्द हो जावेंगे, परन्तु खाद्यसामग्री और कपड़े परसे कण्ट्रोल इस वर्षमें उठनेका योग नहीं है।

पञ्चम भाव विद्या विज्ञान आविष्कारादिका द्योतक है। वर्ष लग्नसे पंचममें मंगल बुधकी स्थिति और पंचमेश दशममें तथा जगल्लग्नसे पञ्चममें हर्शल राहु गुरुसे दृष्ट है यह शिक्षामें क्रांतिकारक परिवर्तन करेंगे। राष्ट्रभाषाको शिक्षा विभागमें महत्त्वपूर्ण स्थान मिलेगा। भारत विज्ञानमें पर्याप्त प्रगति करेगा। नये यंत्रोंका आविष्कार होगा। शनि हर्शल राहु पश्चिमोत्तरीय राष्ट्रोंमें परमाणु बम जैसे ही किसी महाविनाशक भयानक अस्त्रका आविष्कार करायेंगे, किन्तु गुरु दृष्टिके कारण इन परमाणु आदि शक्तिका विनाशके लिए दुरुपयोग न होकर रचनात्मक रूपमें सदुपयोग होता दिखाई देगा। भारतमें राज्यकी ओरसे विद्या उन्नतिमें पर्याप्त व्यय होगा। नये कल-कारखाने खुलेंगे, कला कौशल और दस्तकारीको विशेष महत्व दिया जावेगा।

वर्षलग्नसे छठे भावमें वर्षका राजा और मंत्री सूर्य, चन्द्रमाके साथ पड़ा है अतः संसार रोगादि बाधाओंसे पीड़ित रहेगा। मानसिक रोग हृदय-विकार उदर-पीड़ा सांसर्गिक रोग अधिक होंगे। बड़े बड़े राष्ट्रोंमें स्नेह सद्भावना पूर्णरूपमें न रहकर विद्वेषकी भावना बढ़ती दिखाई देगी। दोनों कुण्डलियोंके सप्तमभाव सप्तमेशके विचारसे संसारकी अन्तर्राष्ट्रिय राजनीतिमें महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे। भारतके अन्तर्राष्ट्रिय राजनैतिक और व्यापारिक सम्बन्ध दृढ़ मैत्रीपूर्ण होंगे। वर्षलग्नसे अष्टममें हर्शल राहु और जगल्लग्नसे अष्टमेश सूर्य चतुर्थ स्थानमें मंगल राहुकी कर्तरीमें पड़ा है अतः संसारके किसी महान्

राजनीतिज्ञ शासककी आकस्मिक मृत्यु होगी। भारतको भी एक नरेश और लोकप्रिय विशिष्ट महा-पुरुषकी मृत्युका दुःख सहना पड़ेगा। उक्त योगके कारण संसारके कई भागोंमें अग्निकाण्ड, भूकम्प, जलप्लावन, हिमपात, महामारी आदि रोग, हवाई दुर्घटनाएं, रेल दुर्घटना, चोर डाकुओंका आतंक और मित्र राष्ट्रोंमें राजनैतिक गतिरोध वर्षके उत्तरार्ध में विशेष रूपसे उत्पन्न होगा। भाग्येश बुध मंगलके साथ पराक्रममें बैठकर नवम भावको देख रहा है और भाग्यमें नेपच्यून है अतः इस वर्षमें भारत अपने बल पौरुषसे उज्ज्वल भविष्यका निर्माण करेगा अनार्योंकी ओरसे डाली जाने वाली गुप्त एवं प्रकट बाधाएं अन्तमें विफल होंगी। जनताकी धार्मिक प्रवृत्ति बहुत न्यून होगी। राजनैतिक सैनिक प्रवृत्तियों की हलचल अधिक दिखाई देगी। अन्तर्राष्ट्रिय सम्बन्ध सुदृढ़ करने और व्यापारिक राजनैतिक समझौतोंके लिये भारतमें राजनीतिज्ञोंका पारस्परिक विदेशोंसे आवागमन होगा। वर्ष लग्नमें दशमेश चन्द्र, सूर्यके साथ छठे और दशममें शनि पड़ा है तथा जगल्लग्नमें दशमभाव पर क्रूरकर्तरीगत उच्चस्थ सूर्यकी नीच दृष्टि है, यह संसारके बड़े बड़े साम्राज्य सञ्चालकों एवं अनार्य-शासकों और नरेशोंके लिये शुभावह नहीं है। वर्षके उत्तरार्धमें पश्चिमोत्तरीय राष्ट्रके किसी बड़े अन्तर्राष्ट्रिय ख्यातिप्राप्त शासकका पतन या मृत्युकी सम्भावना है। यूरोप और भारतके मन्त्रिमण्डलमें भी कुछ परिवर्तन होंगे। प्रजातन्त्र और साम्यवादकी भावना विशेष रूपसे जागृत होगी। भारतीय माण्डलीक सामन्त जमींदार जागीरदार एवं मठाधीशोंके लिये यह सारा वर्ष चिन्ताकारक रहेगा, कई भारतीय नरेश राष्ट्रसे सहयोग करके शासनसूत्र सञ्चालनमें प्रजाको पर्याप्त अधिकार सौंप देंगे। वर्ष लग्नमें लाभेश सूर्य छठे और ग्यारहवां भाव मंगल बुधसे दृष्ट है अतः वर्षारम्भमें भारतको आर्थिक संकटका सामना करना पड़ेगा। राष्ट्रकी आय उत्पादन और विदेशी वस्तुओंका आयात आदि बहुत न्यून होनेसे जनताको कष्ट होगा। जगल्लग्न-कुण्डलीमें लाभेश भौमसे दृष्ट गुरु लाभस्थानमें पड़ा है अतः वर्षके उत्तरार्धमें स्थिति सुधर जावेगी। भारतका अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध गौरवपूर्ण होगा और जीवनोप-योगी वस्तुओंका आयात-निर्यात पर्याप्त रूपसे होगा। बारहवें स्थानका सम्बन्ध विशेषतः व्यय, बाधाएं उत्पात लड़ाई झगड़े तथा गुप्त शत्रुओंसे है। वर्ष लग्न से व्ययस्थानमें नेपच्यून शनिसे दृष्ट है और व्ययेश बुध मंगलके साथ, अतः म्लेच्छप्राय अनार्य प्रकृतिके गुप्त शत्रुओंसे भारतको भय होगा। लड़ाई झगड़े उत्पन्न करानेके लिये उनकी ओरसे राष्ट्रिय प्रगतिमें बाधा डालनेके भयंकर गुप्त षड्यंत्र रचे जावेंगे, किन्तु देवगुरुकी आर्यनीति-निपुणताके कारण अन्त में ऐसे सब दुष्प्रयत्न नष्ट होकर भारतको अपने ध्येयमें सफलता मिलेगी।

व्यापार

वर्षलग्न कुण्डलीमें व्यापारेश चन्द्र लाभेश रवि के साथ षष्ठस्थानमें गुरु नेपच्यूनसे दृष्ट है और दशम (व्यापार) स्थानमें शनि प्लुटोके साथ है। यह इस वर्ष व्यापारिक जगत्‌में क्रांतिकारी योग बना रहा है। बड़े २ राष्ट्रोंके व्यापारिक संबंधमें प्रतिस्पर्धा जोरसे चलेगी। कुछ स्वार्थान्ध राष्ट्रोंकी छोटे राष्ट्रोंके व्यापारको आत्मसात् करनेकी नीतिसे अन्तर्राष्ट्रिय शान्ति सहयोगमें बाधा उपस्थित होगी। भारतीय व्यापारकी स्थिति चिन्ताजनक रहेगी। नित्योपयोगी वस्तुओंका व्यापार खुला नहीं होगा। इस वर्ष वृष राशिमें राहु मंगलका योग आषाढ़ शुक्ल में हो रहा है, यह अन्न-कष्टका द्योतक । माघ तक संसारमें अन्न-कष्ट भीषणरूपसे व्यापेगा। यूरोप और मध्य पूर्वीय-एशियाके कुछ प्रान्तोंमें भयंकर दुर्भिक्ष पड़ेगा। भारत भी सर्वथा इस संकटसे मुक्त न रहेगा। अन्न-वितरण समस्या सरकारके सामने प्रमुखरूपसे उप-स्थित होगी। ज्योतिश्शास्त्रमें इस योगका फल यों लिखा है—

वृषे राहुस्तथा भौमः षण्मासाभ्यन्तरेण वै ।
दुर्लभानि च धान्यानि नात्र कार्या विचारणा ॥

इस योगका फल आषाढ़से पूर्व ही अपना प्रभाव दिखाने लगेगा। वर्षारम्भसे ज्येष्ठ तक अन्न गेहूँ जौ चना चावल आदि खरीदने वालोंको छः मासके अन्दर निश्चितरूपमें पर्याप्त लाभ होगा। इस वर्ष भाद्रपद शुक्ल २ को गुरु वृश्चिक राशिमें जायेगा और अतिचारी होकर पांच मासमें ही माघ शु० १ को यह दूसरी राशि धनुःमें प्रवेश करेगा। गुरुके अतिचारकालमें ही शनि भी वक्री हो रहा है, इसका फल संसारके लिए अनिष्ट सूचक है। दुर्भिक्ष राज विग्रह रोग भयादिसे प्रजा संतप्त रहे। यथा—

यदा सौम्यग्रहः कोऽपि ह्यतिचारोऽभिजायते।
दुर्भिक्षं नृप-पीड़ा च शुभं न दृश्यते क्वचित् ॥
यदा क्रूरा गता वक्रे ह्यतिचारे तु सौम्यकाः।
पीड़ा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्यविग्रहः ॥
अतिचारगते जीवे वक्रीभूते शनैश्चरे।
हा ! हा !! भूतं जगत्सर्वं रुण्डमाला महीतले ॥

इस योगसे भाद्रपदके बाद मित्र राष्ट्रोंका मनोमालिन्य उग्ररूप धारण करेगा। फलतः यूरोप और एशियाके राजनैतिक गगनमण्डलमें युद्धकी काली घटाएं गड़गड़ाहट करेंगी, परन्तु ये कुछ बूंदाबांदी करके ही इस वर्ष ठहर जायेंगी। भारतीय व्यापार पर भी इसका पर्याप्त प्रभाव पड़ेगा। सोना चांदी रुईके व्यापारियोंको बहुत सावधानीसे अपनी ग्रहदशाके अनुकूल व्यापार करना चाहिए, अन्यथा पिसे जावेंगे। समय पर किसी अनुभवी ज्योतिषीसे सलाह लेकर कार्य करें। क्योंकि सोना चांदी रुईके भावोंमें अकल्पित उलट फेर होगा। ज्येष्ठसे कार्तिक तक सोना चांदी रुईमें कुछ समयके लिए विशेष परिस्थिति वशात् फिर महर्घता हो कर जबर्दस्त घटा बढ़ी चलेगी। अधिक श्रावण मासमें (ता० १६ जुलाई से १६ अगस्त तक) और पौष शुक्ल माघ कृष्ण में (ता० १२ जनवरी सन् १६४८ से १० फरवरी तक) रुईमें अचानक मंदी आकर व्यापारियोंमें बेचैनीका योग बना है। गेहूँ चावल जौ चना सुवर्ण चांदी हल्दी मिर्च घृत तैल गुड़ तोरिया सरसों एरंडा तिल आदिके भाव ज्येष्ठसे तेजीकी ओर जानेके योग हैं। श्रावणके अनन्तर कार्तिक तक वैदेशिक नीतिके कारण चावल रुई चांदी सोनाका भाव कुछ नीचे गिरेगा। इसी अवधि में अन्न एवं अन्यान्य उपयोगी वस्तुएं विदेशोंसे पर्याप्तमात्रामें भारत पहुँचेगी। आश्विनमें घृत और मार्गशीर्षमें तिल संग्रह करनेसे निकट भविष्यमें अच्छा लाभ होगा। मार्गशीर्षसे आगे बिनौला मूंग सरसों पर्याप्त तेजीमें रहेंगे। दशममें शनि प्लुटोंकी स्थितिके कारण इस वर्ष विदेशी माल विशेषरूपसे भारतमें आवेगा, इसमें भी लोहनिर्मित वस्तुएं यांत्रिक सामग्री आदिकी अधिकता होगी। वस्त्र खाद्य आदि वस्तुओं के निर्यात पर प्रतिबन्ध कड़े होंगे। सोना चांदीके मूल्यका संतुलन रखनेके लिए वर्षके मध्यमें सरकार कोई अकल्पित तात्कालिक पग उठायेगी।

भारतका वायु-मण्डल वर्षा आदि

आषाढ़ तक वायु और गरमीका वेग तीव्र रहेगा। वैशाख ज्येष्ठमें भयंकर आंधी तूफान तथा गरमीकी लहरसे बहुत हानि होगी। वायु वेगसे कई वृक्ष धराशायी होंगे। और मेघ भी कई बार वायुसे छिन्न-भिन्न होते रहेंगे। आषाढ़में बादल होंगे पर बिना वर्षे ही वायु उड़ा ले जायगी। पूर्वीय और उत्तरीय भारतमें वायु वेग बहुत तीव्र होगा। दक्षिण पश्चिमी भारतमें सामान्य वृष्टि बूंदाबांदी होगी। इस वर्ष कहीं वृष्टिकी न्यूनतासे और कहीं अतिवृष्टिसे फसलें आधी होंगी। अधिकश्रावणसे आश्विन तक सर्वत्र वर्षा हो जायगी। कई प्रान्तोंमें अतिवृष्टि जल प्लावनसे हानि होगी। बंगाल उड़ीसा नेपाल सिंध, निजामराज्यमें वर्षाकी कमीसे पहली फसलमें हानि होगी। मद्रास रत्नागिरि बम्बई और गुजरात प्रान्तके कुछ भागोंमें अति वृष्टिसे फसल नष्ट होगी। इस वर्ष वर्षा योग उत्तम नहीं है, खण्डवृष्टि और कहीं कहीं बेमौके वर्षा होगी। दूसरी फसल अच्छी होगी।

वैशाख से श्रावण तक अग्नि काण्ड अधिक होंगे। शीतकालमें शीत अधिक पड़ेगा। कई प्रान्तोंमें ओले और पर्वतीय प्रदेशोंमें हिमपातसे हानि होगी।

राष्ट्र के कर्णधार

विश्व वन्द्य बापू—श्री महात्मा गांधीजीके सार्वभौम वर्चस्वमें विशेष वृद्धिके योग हैं। आपके प्रतिपक्षी भी नतमस्तक होते दिखाई देंगे। वर्षान्तमें आपके द्वारा अत्यन्त महत्वपूर्ण चिरस्मरणीय राष्ट्रीय अथ च जातीय कार्य सम्पन्न होगा। किन्तु शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्यकी दृष्टिसे वर्ष साधारण ही है। आन्तरिक संघर्षजन्य उद्विग्नता व्याप्त रहेगी। बाह्य अथवा स्थूलदृष्टिसे राजनैतिक क्षेत्रसे उदासीन रहते हुए भी महान् राष्ट्रहित साधनमें संलग्न रहनेका योग है। वर्षके मध्यमें ही एक बार तो अत्यन्त कठोर पग उठाने की परिस्थिति उत्पन्न हो जायेगी। फिर भी इस शान्ति एवं स्वतन्त्रताके देवताका दिव्य-संदेश देश-देशान्तरोंमें सफल रूपसे अपना प्रभाव दिखाएगा। भाद्रपदमें मंगल, शनिके साथ नीच राशि कर्कमें जाकर लग्न पर दृष्टि करता है। यहांसे उदर रक्त एवं स्नायुविकारजन्य अस्वस्थता एवं दुर्बलताका आरम्भ है, अतः इस समयसे विशेष सावधानी रहनी चाहिये।

श्री पं० जवाहरलाल जी नेहरू—पंडित जी के लिये यह वर्ष विशेष क्रान्तिकारक योग ला रहा है। राज्य तथा सैन्य सम्बन्धी विभागोंमें प्रभाव खूब बढ़ेगा। सामयिक नीतिपटुतासे अन्तर्राष्ट्रिय प्रभाव बढ़ेगा। विदेशोंसे गौरवास्पद घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित होगा। सहधर्मियोंके लिए आनन्दप्रदताके साथ—साथ स्वधर्मनिष्ठा भी बढ़ेगी। अनार्योंका प्रत्यक्ष विरोधी एवं आर्य जनताका पक्षपाती होनेका भी योग बन रहा है। औद्योगिक कार्योंमें श्रम सहन करना पड़ेगा। देशान्तर यात्रा शुभावह एवं प्रतिष्ठास्पद होगी। यद्यपि कुछ देशी नरेशों जागीरदारों तथा अनार्योंका विरोध उग्र होगा पर अन्तमें आपकी दृढ़ता ही विजयिनी होगी। यह वर्ष स्वास्थ्यमें निर्बलताका सूचक है, परन्तु अरिष्टभंग योगोंके प्रबल होने से चिन्ताकी कोई बात नहीं है। पूर्वार्धकी अपेक्षा उत्तरार्ध विशेष महत्वपूर्ण राजयोगकारक है। पंडित जीकी वर्षकुण्डलीमें ज्येष्ठ श्रावण अपनी विशेषता रखते हैं और कार्तिकादि आगामी मास अस्वास्थ्य एवं गुप्त शत्रुओं तथा विश्वस्तजनोंकी ओरसे भयके सूचक हैं। संक्षेपमें कह सकते हैं कि यह वर्ष और विशेषतः उत्तरार्ध पंडितजीके द्वारा नवराष्ट्र-निर्माण के लिये सफल प्रयत्नोंके कारण ऐतिहासिक सिद्ध होगा।

आजाद, पटेल, कृपलानी और श्री राजेन्द्र बाबू—श्री मौलाना आजाद के लिए यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टिसे निर्बल अथ च चिन्ताकारक है। श्री सरदार पटेल की दृढता व कार्यक्षमता यशस्विनी है, पर विरोधी पक्षसे विशेष सावधान रहनेकी आवश्यकता है। राष्ट्रपति आचार्य श्री कृपलानीके द्वारा कांग्रेसके कार्यक्रममें क्रान्तिकारिताका योग बन रहा है। श्री डा० राजेन्द्रप्रसादजी को यश प्रतिष्ठा सम्मान वृद्धि एवं उत्तरदायित्वपूर्ण कार्योंके लिए यह वर्ष बहुत उत्तम है, पर स्वास्थ्यकी दृष्टिसे इतना उत्तम नहीं। उदरविकार एवं लंग्सविकारका इस वर्षमें कई बार सामना करना पड़ेगा।

श्री त्यागमूर्ति गो० गणेशदत्त जी महाराज—इस वर्ष जन्मराशिसे गोचरमें षष्ठस्थ शनि एवं केन्द्रकोण में गुरुका भ्रमण आपके प्रभाव यश प्रतिष्ठामें सहायक एवं शत्रुनाशक बन रहे हैं। साथ ही इस वर्ष आपको श्री मालवीय जी महाराजके अवशिष्ट चिरस्थायी कार्योंकी पूर्तिमें विशेष रूपसे लगना होगा। यात्रा बाहुल्यमें श्रम एवं असुविधाका अनुभव होगा। सं० २००४ का पूर्वार्ध उत्कर्ष एवं स्वास्थ्यके लिये उत्तम है। उत्तरार्धे कुछ मानसिकव्यग्रता एवं स्वास्थ्य की ओरसे साधारण रहेगा।

यूरोप

इंगलैण्ड—संसारके अन्यान्य राष्ट्रोंकी भांति इङ्गलैण्डके लिये भी यह वर्ष अत्यन्त आश्चर्यजनक

अद्‌भुतघटना कारक है। इस देशको कई नवीन एवं विषमपरिस्थितियोंमें से निकलना पड़ेगा। आरम्भिक मासोंमें ही जर्मनीको लेकर मित्रोंसे मतभेदकी नौबत पहुँचेगी; फलस्वरूप शासन-परिषद् मंत्रीमंडलमें परिवर्तनकी सम्भावना हो जावेगी। शासन चक्रके प्रति लोकप्रियतामें भी न्यूनता आ जायगी, साथ ही कोई अप्रत्याशित अप्रिय समाचार भी सुनना पड़ेगा। वर्षके मध्यमें जहां एक ओर अमेरिका भारत आदि देशोंसे कई नवीन राजनैतिक व्यापारिक तथा अन्य प्रकारके समझौते हो रहे होंगे वहां दूसरी ओर आर्थिक संकट भी उग्ररूपमें उपस्थित होगा। वर्षका उत्तरार्ध विशेष रूपसे क्रान्तिकारक है। इस समय मजदूरों खनिकोंमें असन्तोष व्यापक होकर हड़तालों आदिसे गड़बड़ उपस्थित होगी, परिणामस्वरूप राष्ट्रीयकरणकी चर्चा जोरों से छिड़ेगी। अनेक प्रकार की दुर्घटना अग्निकांड इन्फ्लूएञ्जा आदि रोग भी अपना खूब प्रभाव दिखाएंगे। भारत और बर्माके संबन्धोंमें नवीन महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होगा। विज्ञान कलाकौशल, चिकित्सा, संगीत व्यापार तथा सार्वजनिक संस्थाओंके लिये यह वर्ष अत्यन्त उन्नति कारक योग ला रहा है। श्री सम्राट पष्ठजार्जके परिवारमें मांगलिक शुभकार्य होगा और उनकी कुंडलीमें दूरस्थ उपनिवेशोंकी लम्बी यात्राका योग भी इस वर्ष बन रहा है।

संक्षेपमें कह सकते हैं कि यूरोप तथा एशिया की आन्दोलित परिस्थितियोंके साथ इंग्लेण्ड शान्तिसे न बैठ सकेगा। वहांकी शासक मंडलीको कई उलट फेर देखने होंगे, वैदेशिक सम्बन्धोंमें परिवर्तन महत्त्वका होगा। अत्यन्त लोकविख्यात राजनैतिक या साहित्यक किसी व्यक्तिका शोक सहना होगा।

रूस—रूसके सर्वेसर्वा भाग्य-विधाता श्री स्टालिन के ग्रहयोग वर्ष के पूर्वार्ध तक बहुत अच्छे हैं। यहां पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण परिस्थितिका योग है। किसी ऐसी घटनाके घटित होनेकी सम्भावना है, जो स्टालिनके जीवनमें एक दम अभूतपूर्व होगी। किन्तु वर्षका उत्तरार्ध स्टालिनके लिये साधारण अथ च चिन्ता कारक है। इसमें आन्तरिक और बाह्य संघर्षों का सामना करना पड़ेगा। गुप्त शत्रुओंकी संख्या और शक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती ही जायगी। सम्भवतः डिक्टेटरशिप प्राप्त करनेके लिये पारस्परिक झगड़े भी उठ खड़े हों, जो कि आगे चलकर प्रत्यक्ष गृहयुद्ध के रूपमें परिणत हो जाए। यदि वर्षान्त तक स्टालिन की स्थिति क्षीण हो गई तो भयंकर संघर्षकी संभावना है। अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिसे श्री स्टालिनका भविष्य उज्ज्वल है। साम्यवादका प्रचार यूरोपके देशोंमें खूब बढ़ेगा। एशियामें भारत चीन आदि देश भी इसकी ओर झुकते जाएंगे। इन्हीं राष्ट्रोंके सहयोगसे अन्तर्राष्ट्रिय विवादोंमें विजय प्राप्त करता रहेगा और औद्योगिक केन्द्रोंकी महत्त्वपूर्ण उन्नति होगी। बालकनद्वीप समूह में रूसी साम्यवाद की भावना बढ़ती दिखाई देगी।

जर्मनी—यद्यपि जर्मनीके संकट दिवसका अन्त अभी नहीं है। उसे रोग अन्न संकट, मित्रों द्वारा उपस्थित अनेक-विध कष्टोंका सामना करना पड़ेगा। तथापि मित्रोंमें पारस्परिक मतभेद हो जानेसे रुख सहानुभूतिपूर्ण हो जायगा, इसमें रूसका स्थान प्रमुख होगा। उत्तरार्धमें पुनरुद्धारके मार्ग पर अग्रसर हो जायगा।

फ्रांस—के लिये ग्रहदशा यों भी कोई बुरी नहीं है, पर श्रावणके पश्चात् प्रभाव व वैभव बढ़ेगा। किन्तु जर्मनीको आत्मसात् करनेके मनोरथोंमें अभीष्ट सफलता न मिलेगी।

स्पेन—जनरल फ्रांकों के लिये ग्रहस्थिति अनुकूल नहीं चल रही है, अतः उन्हें अत्यन्त सावधान रहना चाहिए। विरोधीगण उसे सत्ताहीन करने तथा गृहयुद्धके लिये अथक प्रयत्न करेंगे। पहलेसे सचेष्ट रहने पर फ्रांकोकी स्थिति यथापूर्व रह सकती है। यद्यपि अन्तर्राष्ट्रिय शान्तिके लिए स्पेनके भयावह होनेकी सम्भावना उग्र नहीं है, पर आन्तरिक संघर्षसे अवश्य प्रभावित होंगे। संक्षेपमें स्पेन व फ्रांकोंके लिये यह वर्ष अरिष्ट व अशान्ति का सूचक ही है।

इटली—में यद्यपि कोई विशेष प्रगति न होगी पर विवादास्पद प्रश्नोंमें अमेरिका भारत व चीनका सहयोग उसे प्राप्त होता रहेगा।

टर्की—के लिये वर्ष असमंजसकारक है, शक्तिशाली राष्ट्रोंसे बिना मोल लड़ाई लेने का भय अभी बना ही है। विवादोंसे हानिकी संभावना है।

यूनान—के लिये वर्षका पूर्वार्ध विशेष अनुकूल नहीं है, उत्तरार्धमें बाह्य शक्तियोंके द्वारा परिस्थिति परिवर्तित हो जायगी।

आयरलैण्ड — श्री डी० वेलेराके प्रभावसे आयरिश जनता उज्वलदयकी ओर प्रगति करता रहेगा। विदेशी प्रभाव कुछ काम न कर सकेगा।

अमेरिका

औद्योगिक एवं व्यापारिक क्षेत्रमें महत्त्वपूर्ण उन्नति होगी। श्री ट्रूमैनके लिये योग मध्यम हैं। दूसरे राष्ट्रोंके साथ सम्बन्ध सुस्थिर होंगे और अनेक व्यापारिक व राजनैतिक समझौते भी होंगे। विश्वमें वर्चस्व बढ़ेगा। किन्तु रूसके साथ प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष वैमनस्य बढ़ जायगा। जापानकी ओरसे भी स्थिति चिन्तापूर्ण रहेगी। श्रमिकों व खनिकोंमें असंतोष व्यापेगा और आम हड़तालोंका भय अधिक होगा। जापान यद्यपि उत्तरार्धमें क्रान्तिके लिये प्रयत्नशील होगा पर अभी २००५ तक उसकी ग्रहस्थिति साधारण ही है। परिणामस्वरूप जीवनका माप दण्ड उन्नत होगा। केनेडियन गवर्नमेण्ट को भी रेलवे कारखानों व अन्य औद्योगिक केन्द्रोंमें हड़तालोंका सामना करना पड़ेगा। कृषकोंमें असन्तोष रहेगा। दूसरे राष्ट्रों—विशेष रूपसे रूस—के साथ भी मनमुटावका योग बन रहा है। फसलोंसे पूर्ण सन्तोषजनक लाभ न होगा। हां, अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार में अवश्य विशेष उन्नति होगी।

अफ्रिका (दक्षिणी)—के लिये आर्थिक दृष्टिसे अत्युत्तम है। बहुमूल्य खनिज धातुएं प्रभूत मात्रामें लाभदायक सिद्ध होंगी। किन्तु अन्य राष्ट्रोंकी दृष्टि में वैसा गौरव न रहेगा, तथा आन्तरिक अशान्ति रहेगी। मिश्रके लिये प्रजासत्तात्मक उत्तम योग है। आस्ट्रेलिया—अपनी धान्य-सम्पन्नताके कारण उर्जस्वित होगा। अमेरिकासे मनोमालिन्यके भी योग हैं।

एशिया

ईरान, ईराक, अरब आदि मध्य-पूर्वीय राष्ट्र संगठित एवं सशक्त होंगे। ईरानके कारण दूसरे राष्ट्रोंमें कलहकी आशंका है। फिलिस्तीनके अरब यहूदी संघर्षका अन्त अभी दिखाई नहीं देता, पर अरब पक्ष प्रबल रहेगा।

चीन—गृहयुद्धकी स्थिति साधारणरूपेण बनी रहेगी। कम्यूनिष्ट पार्टी सशक्त होती जायगी। चांगकाईशेक के लिये ग्रहयोग बहुत उत्कृष्ट नहीं हैं। फिर भी विश्वमें चीनकी आवाज जोरदार रहेगी। भारतके साथ घनिष्ठ सम्बन्धोंसे लाभ पहुँचेगा। नवविधानकी प्रगतिके कारण वतमान शासन प्रणाली में उलट फेर होंगे।

खण्डग्रास-चन्द्रग्रहण

सं० २००४ ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा ता० ३ जून १९४७ ई० को अंगुलाल्प (एक अंगुलसे थोड़ा) चन्द्र ग्रहण होगा। यह ब्रह्मदेष, आस्ट्रेलिया, सम्पूर्ण भारत, अरब, यूरोप अफ्रिका और फ्रांसमें भी दिखाई देगा। भारतमें सर्वत्र स्टैण्डर्ड (रेल्वे) टाइम के अनुसार स्पर्शादिका समय निम्न है — स्पर्श (ग्रहणारम्भ) रात्रिमें १२ बज कर २८ मिनट पर। मध्य १२ बज कर ४७ मिनट और मोक्ष (ग्रहण समाप्ति) १ बज कर ६ मिनट पर होगा। पर्वकाल या कुल ग्रहणका समय ३८ मिनट है।

बहुत थोड़ा ग्रास होनेसे यह ग्रहण दूरबीनसे भली प्रकार दिखाई देगा। तीव्र दृष्टि वालोंको मध्यकालके समय १५–२० मिनट तक उत्तरकी ओर चन्द्र बिम्बका कुछ भाग कटा हुआ ध्यानसे देखने पर दिखाई दे सकेगा। धर्मशास्त्रमें ऐसे अंगुलाल्प ग्रहण को स्नानदानादिकृत्यके लिए पर्व योग्य नहीं माना।

त्रैमासिक पर्व-व्रतादि निर्णय

चैत्र शुक्ल ११ मंगलवार ता० १ अप्रैल कामदा एकादशी व्रत, दोलोत्सव ।
१३ गुरुवार ता० ३ ,, प्रदोष व्रत अनङ्ग १३ श्री छत्रपत्रि शिवाजी निधन तिथि
१५ शनिवार ता० ५ ,, सत्यव्रत पूर्णिमा
वैशाख कृष्ण ४ बुधवार ता० ६ ,, श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० १०।२२
७ रविवार ता० १३ ,, मेष सक्रांति, मेला वैशाखी अमृतसर जलियांवाला दिवस
८ सोमवार ता० १४ ,, संक्रान्ति पुण्यकाल स्टे० टा० प्रातः ८।३० तक
११ गुरुवार ता० १७ ,, वरूथिनी एकादशी व्रत श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती
१२ शुक्रवार ता० १८ ,, प्रदोष व्रत
३० सोमवार ता० २१ ,, सोमवती ३०
वैशाख शुक्ल १ मंगलवार ता० २२ ,, चन्द्रदर्शन श्री छत्रपति शिवाजी जयन्ती
३ बुधवार ता० २३ ,, अक्षया ३ श्रीपरशुराम जयन्ती
४ गुरुवार ता० २४ ,, श्री सूरदास जयन्ती श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती
५ शुक्रवार ता० २५ ,, श्रीआद्यशंकराचार्य जयन्ती
७ रविवार ता० २७ ,, श्रीगंगा ७
११ गुरुवार ता० १ मई मोहिनी एकादशी व्रत
१२ शुक्रवार ता० २ ,, प्रदोष व्रत
१३ शनिवार ता० ३ ,, श्रीनृसिंह १४ जयन्ती
१४ रविवार ता० ४ ,, सत्यव्रत कूर्मजयन्ती
ज्येष्ठ कृष्ण ३ गुरुवार ता० ८ ,, श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० १०।३
६ बुधवार ता० १४ ,, वृषभ संक्रान्ति पुण्यकाल सायाह्न में
११ शुक्रवार ता० १६ ,, अपरा (भद्रकाली) एकादशी व्रत
१३ रविवार ता० १८ ,, प्रदोष व्रत
३० मंगलवार ता० २० ,, वटसावित्री अमावस भौमवती ३०
ज्येष्ठ शुक्ल ३ शुक्रवार ता० २३ ,, श्रीप्रताप जयन्ती
१० गुरुवार ता० २६ ,, श्रीगङ्गा दशहरा
११ शुक्रवार ता० ३० ,, निर्जला एकादशीव्रत
१३ रविवार ता० १ जून प्रदोष व्रत
१५ मंगलवार ता० ३ ,, सत्य व्रत स्वल्प खण्डग्रास चन्द्रग्रहण
आषाढ़ कृष्ण ३ शनिवार ता० ७ ,, श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० १०।१६
११ रविवार ता० १५ ,, योगिनी ११ व्रत मिथुन संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्न तक
१२ सोमवार ता० १६ ,, सोमप्रदोष व्रत श्री देशबन्धुदास निधन सन् १९२५ ई०
३० बुधवार ता० १८ ,, अमावस्या, श्री स्व० महारानी लक्ष्मीबाई झांसी निधन सन् १८५८ ई०
आषाढ़ शुक्ल २ शुक्रवार ता० २० ,, चन्द्रदर्शन श्रीजगदीश रथ यात्रा
९ गुरुवार ता० २६ ,, भड्डुली नवमी

त्रैमासिक भविष्य-प्रकाश

रुई सोना चांदी शेयर ज्वार मक्की तारामीरा जूट अलसी आदिकी साप्ताहिक तेजी मन्दी

[लेखक—श्री० पं० गंगाप्रसाद जी ज्यौतिषाचार्य]

(१) प्रथम सप्ताह ता० १ से ८ अप्रैल तक—

इस सप्ताहमें ५ दिन तेजी ३ दिन मंदी रहेगी। पहिले ता० ३१ मार्चको १२ से २ तक चांदी रुई खरीदो सोना बेचो, ता० ५ तक लाभ हो जायगा। ता० १।४।५।७।८ तेजी कारक । २।३।६ मंदीकारक। गुवार, अरहर, बाजरा, चावल, मूंगफली मंदीमें जावेंगे। ता० २ को बेचना ठीक है। किराना, तारा मीरा, कालीमिर्च, बारदाना, लाख, चपड़ा तेजीकी ओर बढ़ेंगे। ता० ३ को खरीद जारी रखो । अलसी बेचो आखिरी तेजी समझो, शेयर बाजार एक दम चढ़ेगा, व्यापारी घबराकर बेचानमें न रहें।

(२) द्वितीय सप्ताह ता०८ से १५ अप्रैल तक—

यहां एक प्रखर मंदीकी धारणा है, ५ दिन मंदी ३ दिन तेजी रहेगी, किन्तु अधिक गिरनेकी संभावना नहीं है। घटे भाव खरीदनेकी राय है । ता० ८।११। १५ तेजी। ६।१०।१२।१३।१४ मंदीकारक है । ता० ८ को ४॥ बजे या ६ को १॥ बजे तक चांदी सोना बेचो, ता०१४ तक लाभ सामने होगा। बाजरा अलसी मूंग चावलकी आखिरी तेजी रहेगी। अगला वायदा बेचो। बिनौला रुई मूंगफली अरहर इस हफ्तेमें इकतरफा मंदीमें रहेंगे। घटे भावोंमें खरीदेगा वही नफा उठा लेगा। जूटकी आखिरी तेजी बेचो।

(३) तृतीय सप्ताह ता०१५ से २२ अप्रैल तक—

इस सप्ताहमें विदेशी खबरोंसे प्रायः सर्व वस्तु के भावोंमें तेजी ही दिखाई देगी, सोना, चांदी, रुई, बारदाना, जूट, तेल, तिल, अलसी, सरसों, चावल, घृत मिलना मुश्किल हो जायगा, सर्वत्र गल्लेकी कमी होगी, सावधान इस हफ्तेमें मंदीके रियेक्शन ता० १६।१७ में खरीद करेगा वही नफा ले जायगा, बाकी देखते रह जायेंगे । कालीमिर्च, तारामीरा, गेहूँ, जूट, बिनोला, मूंगफली मंदीका अनुभव करेंगे, बेचना ठीक है। शेयर बाजार नैया की तरह डावांडोल रहेगा । घटे भाव जूट, शेयर, चांदी, रुई खरीदने की राय है।

(४) चतुर्थ सप्ताह ता०२२ से ३० अप्रैल तक—

इस हफ्तेमें विदेशोंसे चांदी आनेके योग हैं। कई जहाजोंसे पेटियां उतरेंगी। बैंक दिल खोलकर बेचान करेंगे, इससे चांदीमें १०) सोनेमें ७) की मंदी आने की संभावना है, व्यापारी सावधान । ता० २२ की बाजारकी तेजीकी लाईनमें बेचू हो जाओ, हमारी लाइनको बाजारसे मिलाओ, ता० २१ को मंदी देखो तो ३ दिनकी मंदी छक्के छुटा देगी, भुगतान होना सम्भव हो नहीं सकता । तैयारीके सौदोंमें अधिक हानि पाई जाती है । शेयर बाजार एक अच्छी तेजीका अनुभव करेंगे जूट, बारदाना, तिल, तैल मंदीमें होंगे। लाख, चपड़ा, चावल तारामीरा रुई, बिनोला मक्की तेजीका अनुभव करेंगी।

(५) पंचम सप्ताह ता० १ से ८ मई तक—

इस सप्ताहमें व्यापारमें भारी हलचल होगी। चांदी, सोना, रुईके भाव पुनः ऊंचे जायेंगे । ता० २।३।५।६ तेजी। १।४।७।८ मंदी रहेगी—इकंदर घटे भाव ता० १ को चांदी, सोना, रुई खरीदो, नफा सामने होगा। जूट शेयर, बारदाना मंदा होकर तेज। लाख, चपड़ा, हेसीयन, चावल, तारामीरा, ज्वार, बाजरा, मक्की तेज, अलसीकी मंदी खरीदना बतावेगी, अरहर सरसों तेज।

(६) षष्ठ सप्ताह ता० ८ से १५ मई तक—

इस सप्ताहमें उल्कापात वायुके भारी प्रकोपसे जन हानि, एवं गृहयुद्ध हो। गर्मी अधिक पड़ेगी। यहां चांदी सोनेके बाजार एक प्रखर तेजीमें रहेंगे। घटे भाव ता० ८ से ११ तक दोतरफा नफा लो। ता० १२ से १५ तक इकतरफा तेजीकी चाल होगी। ३) टकेकी तेजीमें नफा छोड़ो नहीं। शेयर बाजार एक झलक तेजीमें रहेगा। जूट, लाख, चपड़ा मंदा। मक्की, चावल, सरसों, अलसी, तिल, तेल, घृत मिलना दुर्लभ होजायगा, व्यापारी सावधान। सर्व वस्तुकी आखिरी तेजी ता० १५ मई तक रहेगी। हमारी धारणासे ता० १४ से खरीदका काम बन्द करके नफा लो और बेचो।

(७) सप्तम सप्ताह ता० १५ से २३ मई तक—

इस सप्ताहके ग्रहयोग एक प्रखर मंदीमें रहेंगे जो योग अप्रैल चतुर्थ सप्ताहमें बना था यहां उससे बढ़कर बन रहा है। चीन, लंदन, न्यूयार्क, आस्ट्रेलिया से कई जहाज भारतमें चांदीके आयेंगे। ता० १६ को बैंकोंका बेचान चांदी सोनेका इतना होगा कि लेनीया नहीं मिलेंगे। इसलिए हमारी रायमें ता० १३ को २॥ बजे से बेचान करना ठीक जंचता है। ता० २३ तक करारा मुनाफा मिल जायगा। सावधान ता० १५ की मंदी आई तो योग सत्य निकलेगा वरना आधा असर करके पुनः ऊंचा उठ जायगा। चांदी, सोना मंदा। रुई, जूट, शेयर तेज। गेहूं, घी, तैल दुर्लभ। मक्की, बाजरा, गुड़, अलसी, बारदाना मंदे रहेंगे।

(८) अष्टम सप्ताह ता० २४ से ३१ मई तक—

इस हफ्तेमें बाजार दुतर्फा घट बढ़में चलेगा व्यापारी सावधान! शेयर खरीदें, तेजी पर तेजी रहेगी। चांदी सोना रुईके तैयारीके भाव अच्छे रहेंगे, वायदेके सोदोंपर आर्डिनेंस आवे योगसे पाया जाता है, इसलिए ता० २६।२७।३०।३१ तेजी, २५।२८। २६ मंदी, २४ साधारण रहेगी। तात्कालिक खरीद बेचका नफा लेना—लाभप्रद रहेगा, वरना हानि हो जाना संभव है। इस हफ्तेमें विशेषकर अरहर, सरसों, चावल, घी अच्छा मुनाफा देगा, जिसके पास अप्रैलका स्टाक होगा। बाकी देखते रह जायेंगे। अलसीमें २।) तककी मंदी आवेगी। तारामीरा रुई जरीला मंदी होकर तेज रहेंगी (नोट) ता० २४ को यदि वृक्ष गिरे हवा जोरसे चले तो जूनमें फिरसे हर वस्तुकी तेजी चमक जायगी।

(९) नवम सप्ताह ता० १ से ८ जून तक—

इस सप्ताहमें ३ दिन तेजी ४ दिन मंदी, घटबढ़ के बराबर। पहिले ता० २ को खरीदो चांदी, सोना, रुई, ता० ६ तक लाभ हो जायगा। अलसी सींगदाना मक्की, बाजरा, चावल मंदे रहेंगे, घटे भाव ता० ३ को खरीदो। ता० १५ तक लाभ। शेयर बाजार साधारण घटबढ़में रहेगा। अलसी, जूट, तिलहन तेजीमें रहेगी।

(१०) दशवां सप्ताह ता० ८ से १५ जून

इस सप्ताहमें तेजी ३ दिन, ४ दिन मंदीके होंगे। ता० ६।१०।१३ तेजी। ११।१२।१४ मंदी। पहिले ता० ८ को चांदी सोना रुई खरीदो, ता० १३ तक लाभ हो जायगा। या रोजाना सुबह खरीदो; श्यामको नफा लें। तेजी और मंदी दोनों लाईनोंसे डबल नफा हो सकता है। शेयर जूट अलसी एक प्रखर मंदीमें जायेंगे। मूंग अरहर बारदाना बेचकर स्टाफ कम करो। तारामीरा सींगदाना अलसी ता० १० को बेचो। १५ तक लाभ हो जायगा।

(११) ग्यारहवां सप्ताह ता० १६ से २२ जून तक

इस सप्ताहमें भयंकर उथल पुथल होगी। भाव चांदी सोनेके एक दफा ऊंचे जाकर एक दम गिरेंगे। बम्बईमें व्यापारियोंमें मतभेद दावा झगड़े होंगे, बाजारोंमें एक प्रखर मंदीका झटका आयेगा। ३॥ दिनकी चाल छक्के छुटा देगी। ता० १६।१७ को बेचान ठीक जंचता है। शेयर बाजारोंमें क्रांति पैदा होगी, आपसी खरीदसे बाजार ऊंचे जायेंगे। अलसी जूट मंदे, चावल गुवार अरहर मक्की गुड़ मंदीका अनुभव करेंगे।

बारहवां सप्ताह ता० २३ से ३० जून तक

इस सप्ताहमें दो तरफा घट बढ़ चलेंगी। व्यापारी सावधान, एक राय निश्चित नहीं बनती, साधारण रुख ता० २३।२४।२७ तेजी बाकी मंदीकी रहेगी, ता० २३ को चांदी सोना रुई खरीदो। ता० २५ को बेचो लाभ हो जायगा। विशेष अलसी बारदाना शेयर मक्की तारामीरा कालीमिर्च चावल अरहर ये वस्तु मंदीमें रहेंगी।

अप्रेल की दैनिक रुख

ता० वार व्यापारिक फलः—

१ मं० पहिले दिन चांदी रुई खरीदो सोना बेचो।
२ बु० ऊंचेमें नफा लेकर नरमाईमें फिर पकड़ो।
३ गु० तिलहन चांदी सोनेके भाव मंदे जायेंगे।
४ शु० स्टाक वाले पूरा २ ध्यान नफेका देवें।
५ श० रात्रिके ७ बजे तक नफा लेकर बेचो।
६ इ० प्राईवेट रुख तेजीकी तरफ रहेगा।
७ सो० १२ से २ तक चांदी रुई सोना खरीदो।
८ मं० तेजीकी हलचल नफा छोड़ो नहीं।
९ बु० तेजी रुककर मंदीको मौका देगी।
१० गु० ज्यादा घट बढ, तेजी मंदीकी गली लगावें।
११ शु० खास चांस दो पहर बाद मंदी, बेचो।
१२ श० फोन वालोंकी चाल मंदीकी होगी।
१३ इ० प्राईवेटमें तिलहनकी खरीद नफा देगी।
१४ सो० अलसी चांदी घटे भाव खरीदो।
१५ मं० तेजीका भड़का नफा लो और बेचो।
१६ बु० ६ घण्टेका बढ़िया चांस है, पहिले खरीदो और पीछे बेचो।
१७ गु० आखिरी मदीमें खरीदना सच्चा व्यापार है
१८ शु० तेजीका काम दोसे दस तक नफा देगा।
१९ श० शुरूसे मंदीकी चाल बाजार देखो।
२० इ० प्राईवेटमें बाजार थम जायेंगे।
२१ सो० दो घण्टेकी मंदी खरीदना बता रही है।
२२ मं० ऊचेसे ऊंचे भावोंमें डबल बेचो।
२३ बु० मंदीकी चाल चांदी सोनेकी हवा बांध देगी।
२४ गु० दो तरफा लाईनसे डरनेकी जरूरत नहीं।
२५ शु० बाजारकी चालको मिलाकर बेचो।
२६ श० दो तरफा हलचल छक्के छुटा देगी, लेकर बैठना नहीं।
२७ इ० प्राईवेटमें बेतारका तार मंदीका होगा।
२८ सो० गिरे हुवे भावोंमें ४ बजे सोदे करो।
२९ मं० चांदी गिरकर चमकेगी धोखेमें रहना नहीं।
३० बु० तेजीकी चाल ४ बजे तक, बादको मंदी।

मई की दैनिक रुख

ता० वार व्यापारिक फलः—

१ गु० गिरे हुए भावोंमें २ से ४ तक खरीदो।
२ शु० हिमालय पर चढ़े भाव गिरना चाहते हैं।
३ श० चांदी सोनेमें जबरदस्त मंदी नजराना लगावें।
४ इ० रुईके भाव फिरसे उठेंगे, क्या समझे।
५ सो० विदेशी तारोंसे मन्दी आयेगी नजराना लगाओ।
६ मं० मंदीका भड़का २ बजे तक बादको तेजी।
७ बु० बाजारोंमें तेजीकी चमक दिखायेगी।
८ गु० तेजीका मुकाबला न करो ४ बजे विदाई।
९ शु० खुलते बाजार चांदी खरीदो शामको नफा
१० श० बम्बईमें २) घटेंगे ३) बढ़ेंगे गली लगाओ।
११ इ० प्राईवेटमें लेकर बैठना नहीं जंचता।
१२ सो० सावधान दोतरफा बाजार देखकर काम करो
१३ मं० तेजीका टोन २ बजे तक बादको रुख मंदी
१४ बु० बैंकोंका बेचान मंदीकी हवा बांध देगा।
१५ गु० २। दिनमें चांदी ८) सोना ४) मन्दा
१६ शु० ऊंचे भावोंमें ३ बजे बेचें वही नफा उठाये।
१७ श० लन्दनके तारसे पहिले खेला खेलो।
१८ इ० प्राईवेटमें अच्छी घट बढ़ रहेगी।
१९ सो० गिरे हुए भाव ऊंचे हो फिर गिरेंगे।
२० मं० मंदीके योग फिरसे चमकेंगे बेचो।
२१ बु० नफालो २ बजे बुधकी तेजी टिकाऊ नहीं है
२२ गु० एक दिनमें १०) घटना साधारण बात है।
२३ शु० घटे भावमें २ बजे चांदी सोना रुई खरीदो
२४ श० ऊंचे भावोंमें ४॥ बजे बेचने पर २॥ दिन में लाभ।
२५ इ० ग्रह योग तूफानी घटबढ़ दिखा रहे हैं।
२६ सो० मंदीका टोन २ बजे तक बादको रुख तेजी।

२७ मं० तेजीकी ताकत चिम्मन मोती कम न होने दे
२८ बु० घटे भाव खरीदेगा वही नफा उठायेगा।
२९ गु० दो तरफा तूफानी घटबढ़ तेजी मंदी लगाओ
३० शु० खुलते बाजार खरीदो १६ घटेमें लाभ लो।
३१ श० तेजीका टोन ३ बजे तक बादको मंदी।

जून की दैनिक रुख

ता० वार व्यापारिक फलः—

१ र० प्राईवेटमें अच्छा रियेक्शन मंदीका हो।
२ चं० २ बजे तक मंदी खतम डबल खरीदो।
३ मं० आजके योग १॥) की तेजी बता रहे हैं।
४ बु० ढाई बजे बाद मंदीका असर होगा।
५ गु० बम्बईमें ४) घटेंगे तेजी मंदी लगाओ।
६ शु० घटे भावोंमें खरीदेगा वही नफा लेगा।
७ श० मंदीमें खरीद जारी रखो और नफा लो।
८ इ० प्राईवेटमें बाजार स्टेडी रुख मंदी।
९ चं० दिनके १॥ बजे चांदी रुई खरीदो।
१० मं० दो तरफा लाभके लिए बेचो।
११ बु० दो तरफा बाजार दो बजेका तार देखो।
१२ गु० ढाई बजे मंदीके रियेक्शनमें खरीदना ठीक है।
१३ शु० तूफानी तेजी ३ बजे तक डबल बेचो।
१४ श० दो तरफा घट बढ़से नफा लो १० बजे तक
१५ इ० प्राईवेटमें रुख मुलायम।
१६ सो० तैयारीके भाव बम्बई तेज जायेगा।
१७ मं० वायदोंके सौदोंमें रुकावटें पैदा होंगी।
१८ बु० २ बजे बेचो १४ घण्टेका बढ़िया चांस।
१९ वृ० विशेष मंदी चांदी सोने पानी पानी।
२० शु० मंदीकी सरगर्मी तेजीको मौका देगी।
२१ श० खरीदो तेजीकी चमक ६ घंटेमें नफा देगी
२२ इ० प्राईवेटमें मंदीसे तेजीमें खरीदो।
२३ चं० खुलते बाजार चांदी सोना रुई खरीदो।
२४ मं० डबल नफा लेना हो तो ५ बजे डबल बेचो
२५ बु० आखिर मंदी क्या रंग लायेगी।
२६ वृ० विदेशोंके खास तार मंदे आयेंगे।
२७ शु० चिम्मन मोतीकी खरीद तेजी लायेगी।
२८ श० खिलवर किंगको दूसरी पार्टी मात देगी।
२९ इ० प्राईवेटमें बाजार सुधरेंगे।
३० चं० मंदीमें २ बजे खरीदना मत भूलो।

साहित्य--समालोचना

[समालोचनार्थ प्रत्येक पुस्तककी दो--दो प्रतियां प्राप्त होना आवश्यक है । एक प्रतिकी केवल प्राप्ति स्वीकार सूचना प्रकाशित होगी ।

भविष्यफल

सम्पादक—श्री पं० सङ्कर्षणजी व्यास ज्योतिषाचार्य । प्रकाशक—पञ्चाङ्गप्रकाशनविभाग बड़ागणेश उज्जैन, (मालवा) मूल्य २॥)

प्रस्तुत पुस्तकमें सं० २००६ की चैत्र शुक्ल १ से कार्तिक कृष्ण ३० तक ६ मासका भविष्यफल शास्त्रीय दृष्टिसे साहित्यिक भाषामें दिया गया है। आजकल भविष्य फल बतलाने वाली वार्षिक षाण्मासिक त्रैमासिक और मासिक पत्र पत्रिकाओंकी बाढ़ सी आ रही है, जिनमें से पचानवे प्रतिशत प्रकाशन तो ऐसे अप्रामाणिक होते हैं कि उनके सम्पादक या लेखक महोदयोंको मुखपृष्ठकी कुछ पंक्तियां भी शुद्ध लिखनेका ज्ञान नहीं होता। ऐसी अवस्थामें वे भविष्यफल भला क्या ठीक बता सकते हैं । कुछ एक अधिकारी विद्वान् भी इस कार्यकी ओर सचेष्ट हैं और उनके प्रयत्नोंसे देश लाभ उठा रहा है। श्री व्यास जीके इस "भविष्यफल" की गणना ऐसे ही प्रामाणिक और लोकोपयोगी श्रेष्ठ भविष्यफलोंमें की जा सकती है। इसके प्रत्येक मासकी व्यापारिक तेजी मन्दी, राशि-फल एवं देशको प्रत्येक गतिविधिकी हलचलोंका भविष्यफल व्यापारी वर्ग व जन साधारणके लिए उपयोगी है अतः इस विषयके जिज्ञासु सज्जनोंको इस भविष्यफलकी एक प्रति सदा अपने पास रखनी चाहिए। इस पुस्तकके विद्वान् लेखकके दो लेख इस अङ्कमें प्रकाशित किये गये हैं—इनसे पाठकोंको आपकी प्रतिभाका परिचय मिलेगा।

परलोक सर्वस्व

यह पुस्तक अंग्रेजी Other World का अनुवाद है, श्रीकेदारनाथ शर्मा सम्पादक 'परलोक'ने अनुवाद किया है। २५१ पृष्ठकी इस पुस्तकका मूल्य ३) है। प्राप्ति स्थान यङ्गमैन एण्ड कम्पनी नई सड़क देहली। पुस्तक आदिसे अन्त तक रोचकतासे भरा हुई है। यद्यपि भारतवर्षके लिये परलोक वाद नई वस्तु नहीं, परन्तु १०० वर्षसे जो अमेरिकामें परलोकवाद चल रहा है, जिसके द्वारा वैज्ञानिक ढङ्ग से परलोक सम्बन्ध स्थापित हो चुका है। वह सब वर्णन इस पुस्तकमें है। संक्षेपमें एक प्रकारसे प्रकारसे यह एक अद्भुत ग्रन्थ है।

धन्वन्तरिके गुप्तसिद्धप्रयोगाङ्क

सम्पादक—वैद्योपाध्याय श्रीदेवीशरण गर्ग, और जे० पी० अग्रवाल बी० एस० सी०

प्रकाशक-धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ यू० पी०

प्रथम भाग पृष्ठ ३०० मूल्य ५)

द्वितीय भाग पृष्ठ १२५ मूल्य २)

'धन्वन्तरि' आयुर्वेद जगत्का ख्याति प्राप्त पत्र है। इस वर्ष इसने 'गुप्तसिद्धप्रयोगाङ्क' नामक दो विशेषाङ्क प्रकाशित किये हैं। इनमें भारतके गण्यमान्य वैद्योंके गुप्तसिद्ध प्रयोग दिये गये हैं। इन प्रयोगोंसे मानव समाजकी पर्याप्त सेवा हो सकती है। दोनों भाग अत्यन्त सुन्दर आकर्षक और उपादेय बन पड़े हैं। प्रत्येक वैद्य और सद्गृहस्थोंके लिए यह अङ्क विशेष उपयोगी सिद्ध होंगे।

भूलिये नहीं आपको 'श्रीस्वाध्याय' का

एक नया ग्राहक अवश्य बनाना है

'प्राण'

[श्री रामकिङ्करजी उपाध्याय]

सुनकर तेरा मधुमय नाम ।
मेरी रसना रसकी प्यासी, अलि बन गुंजन गुण गाथाका,
करती रहता है निशियाम ॥१॥
मधुर मदिर परिचय न हुआ है, फिर भी प्रतिपल आंखें तुझको
खोजा करती घट-घट प्राण ॥२॥
कमल दलोंकी सोई पाँखें, जब खुलती है मलयानिलसे,
विहगोंके सत्-सत् कंठोमें, सुन पड़ता तेरा ही नाम ॥३॥
रवि रंजित करता किरण से जब द्रुम दलका नव परिधान
जब तेरे ही पीत वसनका, हो आता है मुझको ध्यान ॥४॥
तारक दल आकर अम्बर में, जब शशि से रचते हैं रास।
नील गगन या अंग तुम्हारा, चन्द्र किरण या तेरा हास ॥५॥
करता रहता हूँ प्रतिक्षण दर्शन फिर भी दर्शनकी प्यास।
नहीं जान पाया अब तक तुमको मैं कहूँ दूर या पास ॥६॥
किसे सुनाऊं हृत्तन्त्रीका. करुणा भरा किंतु है गान।
तुम्हीं सुनो यह मृदु ध्वनि मेरी, हे मेरे 'प्राणोंके प्राण' ॥७॥

'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्क—

प्रथम वर्षकी फाइल—

१—शरदङ्क १।।) रु० २—हेमन्ताङ्क २।।) रु०

३—वसन्ताङ्क १।।) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १।।) रु०

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ६) रु०

द्वितीय वर्षकी फाइल—

१—शरदङ्क ४) रु० २—हेमन्ताङ्क २) रु०

३—वसन्ताङ्क १।।) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १।।) रु०

चारों अङ्कोकी पूरी फाइलका मूल्य १०)

तृतीय वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ५।।) रु० २—हेमन्ताङ्क २) रु०

३—वसन्ताङ्क १।।) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १।।) रु०

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य १०)

चतुर्थ वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क अप्राप्य २—हेमन्ताङ्क ३) रु०

३—वसन्ताङ्क ३) रु० ४—ग्रीष्माङ्क २) रु०

तीनों अङ्कोंका इकट्ठा मू० ६।।)

पंचम वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ५) रु० २—हेमन्ताङ्क १) रु०

३—साहित्याङ्क २) रु० ४—ग्रीष्माङ्क अप्राप्य

तीनों अङ्कोंका इकट्ठा मू० ७)

छठे वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क ३) रु० २—हेमन्ताङ्क ४) रु०

३—वसन्ताङ्क १) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १) रु०

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मू० ७) रु०

सातवें वषका फाइल—

१—नववर्षाङ्क ३) रु० २—हेमन्ताङ्क ४) रु०

३—वसन्ताङ्क अप्राप्य ४—ग्रीष्माङ्क १।।) रु०

तीनों अङ्कोंका इकट्ठा मू० ६)

आठवें वर्षकी फाइल—

१—नववर्षाङ्क २) रु० २—हेमन्ताङ्क १।।) रु०

३—वसन्ताङ्क १।।) रु० ४—ग्रीष्माङ्क १।) रु०

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ५)

प्राप्ति स्थान—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला)

स्थायी लाभके लिए— श्रीस्वाध्यायमें

विज्ञापन दीजिये

'श्रीस्वाध्याय, प्रत्येक शिक्षित परिवार के पास पहुँचता है। 'श्रीस्वाध्याय' व्यापार का पथप्रदर्शक है। व्यापारी इसे पूंजीकी भांति सुरक्षित रखते हैं। इसलिए प्रत्येक उच्च घरानेमें इसका आदर है।

आप अपने व्यापारका सम्बन्ध

यदि उच्च घरानोंसे कराना चाहते हैं। यदि आप अपना व्यवसाय बढ़ाना चाहते हैं; तो 'श्रीस्वाध्याय' के आगामी 'नववर्षाङ्क' में विज्ञापन दीजिये।

प्रामाणिक विश्वस्त व्यवसाइयोंके कुछ चुने हुए विज्ञापन ही 'श्रीस्वाध्याय' में लिये जायेंगे। इसलिये विज्ञापनदाता अभी से अपने विज्ञापन भेजकर आगामी नववर्ष विशेषाङ्कके लिये स्थान रिजर्व करा लें। अश्लील विज्ञापन प्रकाशित न होंगे। विज्ञापनकी पूरी रकम पेशगी नीचे लिखे पते पर कार्यालयमें जमा कराना आवश्यक है। १५ सितम्बर १९४६ के पश्चात् आये हुए विज्ञापन 'नववर्षाङ्क' में प्रकाशित न हो सकेंगे।

विज्ञापन छपाईका शुल्क

१ पृष्ठ या दो कालमकी छपाई ६०) प्रति अङ्क। आधा पृष्ठ या एक कालमकी छपाई ३५) प्रति अङ्क। चौथाई पृष्ठ या आधे कालमकी छपाई २०) प्रति अङ्क। पूरे वर्ष या चार अङ्कोंमें एक पृष्ठकी छपाई १८०) टाइटलके चौथे पृष्ठकी छपाई १२५) प्रति अङ्क। वर्षभर तक टाइटलके चौथे पृष्ठकी ४००) रु०।

व्यवस्थापक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

भारतीय संस्कृतिके अग्रदूत राष्ट्रधर्मके प्रमुख प्रचारक—

'श्रीस्वाध्याय' के लिए—

राष्ट्रके उद्गार

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला।......... इस पत्र और इसके सञ्चालकमण्डलसे राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी ....।

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी महोदय—'श्रीस्वाध्याय बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक है।.......मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ.........।

श्रीयुत बा० सम्पूर्णानन्दजी शिक्षामन्त्री युक्तप्रांत—'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। भारतीय प्राचीन विद्याओं पर प्रकाश डालने वाले ऐसे प्रगतिशील सांस्कृतिक पत्र-पत्रिकाओंकी इस समय आवश्यकता है।

कविसम्राट् स्व० श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—'श्रीस्वाध्याय' के पञ्चम वर्षका प्रथमाङ्क बड़ा सुन्दर निकला है। इसे जिस दृष्टिसे देखें वह मुग्धकर है। आकार, प्रकार, लेख किम्वा कविता आदि सभी प्रशंसनीय है।

श्रीयुत बा० मैथिलीशरणजी गुप्त—"........'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परिश्रमकी प्रशंसा और पत्रकी उन्नतिकी कामना करता हूँ।........"

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है।.......यह एक उच्चकोटि का सांस्कृतिक पत्र है। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूं।

श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़कर जी—"....वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला है। आर्य संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है।........"

श्री डा० रामकुमार वर्मा जी—"........'श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक पृष्ठमें मुझे अध्ययन और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।........"

श्रीयुत पं रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी,)—"........'श्रीस्वाध्याय' की सभी सामग्री ज्ञानवर्धक और उपादेय है।........प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्मप्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।......"

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (सम्पादक 'सरस्वती')—'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।........आपने 'स्वाध्याय' निकाल कर हिन्दीके एक विशेष अभावकी पूर्ति की है, इसमें सन्देह नहीं। इस महत्त्वपूर्ण कार्यके लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकरजी—"........'श्रीस्वाध्याय' के विषयमें विशेष क्या कहा जाय, यह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदयसे इसकी सफलता चाहता हूँ। इसकी अन्यान्य महत्ताओं पर 'वैदिकधर्म' में प्रकाश डालूंगा।

इनके अतिरिक्त भारतके अनेकों महामान्य विद्वानों और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओंने 'श्रीस्वाध्याय' की मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहां उद्धृत नहीं हो सकीं।

श्री पं० इन्द्रदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्ली में छपकर श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला) से प्रकाशित।